Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-10.

THE PRITHVÍRÁJ RÁSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

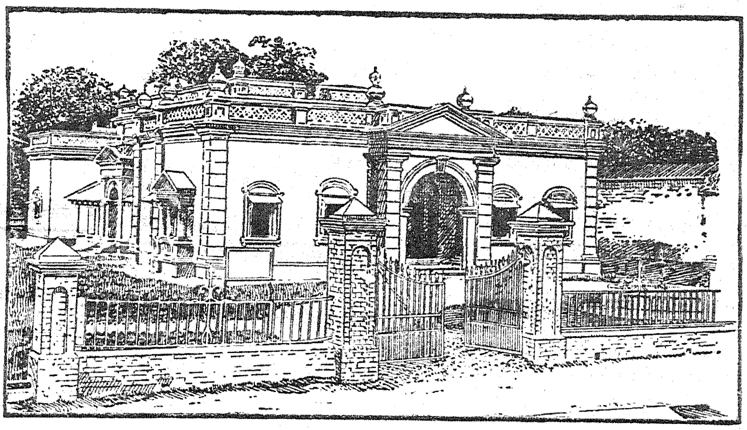
BY

Mohanlal Vishnulal Pandia,

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XXXVI to XLIII.



महाकवि चंद बरदाइ

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व ३६ से ४३ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1907.

मूल्य १।)] Issued 15th July, 1907. [Price Re. 1-4.

सूचीपत्र ।

—:o:—

तिथ पंचम रवि भोम। लगन प्रथिराज सु थप्पी ॥
कमलहु सुरीज किन्नौ कनक। किति लभ्भी दुज्जन बहिय ॥
तप तेज भान मध्यान ज्यौं। तिन चौहान चंदह कहिय ॥छं०॥९९॥

और उक्त रनथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन।

बर पंचाइन समर। दंड मुक्किय बर मुक्किय ॥
मथी सेन सम्मूह। रतन कित्ती फल रुक्किय ॥
लच्छि भाग चहुआन। हथ्थ हंसावति लद्धिय ॥
अम्रत भाग चिचंग। सेन हाला हल सद्धिय ॥
बारुनी बीर अस्सिय सु भर। अरिन पाइ जस रतन लिय ॥
मह महन रंभ हथ्थह कपट। सिंभ सीस बर अप्प लिय ॥छं०॥१००॥

लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का बारू बन को शिकार खेलने के लिये जाना।

दूहा॥ तब लगि मंतन लगन दिन। न्रिप आषेटक जाइ ॥
बारू बन उभ्भौ न्रपति। मात दरस निस पाइ ॥ छं० ॥ १०१ ॥

पृथ्वीराज के बारू बन में शिकार करते समय सारंग राय सौलंकी का पितृबैर लेने का विचारकरना।

कवित्त॥ बारु विरल बन न्रपति। राइ आषेटक सारिय ॥
सारँग चालुक चूक। रूक तिहि बेर विचारिय ॥
समरसिंघ चढ़ि हथ्थ। हथ्थ आवै चहुआनं ॥
पिता बैर बहु बंध। हुऔ कर नार समानं ॥
बर बैर सपुत्तन निक्कसै। ज्यौं आगम अरि अंगयौ ॥
बर बीर बैर ससि सनिह लगि। गुन प्रधान बर मंगयौ ॥छं०॥१०२॥

सारंगदेव का कहना कि पितृबैर का लेना वीरों का मुख्य कर्तव्य है।

दूहा॥ बैर काज बर नंद सुत। बर बैरोचन हत्त ॥
करि वसीठ माली सुतन। बैर पुब्ब मन जित्त ॥ छं० ॥ १०३ ॥

कवित्त ॥ सुनि मंचीवर बैर। राम रावन *सिर सज्जिय ॥
बैर काज ग्रहभेद। कारन उरजन सिर भज्जिय ॥
बैर काज सुग्रीव। बाल जान्यो न बंधगति ॥
बैर बीति सुर इंद्र। बैर चिंतिजैं इसी भँति ॥
चहुआन समर लभ्भै जु तत। चंद सूर जिम ग्रेह लिय ॥
बर चूक दान अग लग्गिहै। कित्ति एक जुग जुग चलिय ॥ छं० ॥ १०४ ॥
[1]कित्ति काज परधान। राज राजन सुख चुक्किय ॥
कित्ति काज विक्रम्म। देश देसह धर लुक्किय ॥
कित्ति काज पंवार। सीस जगदेव समप्पौ ॥
कित्ति काज बर सिवरि। [2]मथ्थ कर कट्टि सु अप्पौ ॥
꠸ रष्षंत [3]अचल गल्हां जियन। कीरति सब जग भल कहै ॥
सकंग एक जुग्गन विरह। रहै तो गुर भल्हा रहै ॥ छं० ॥ १०५ ॥
दूहा ॥ केहरि कल केहरी हिरन। कारन जोग में ईस ॥
कोइक उत्तर देषिये। गल्ह बोहथी सीस ॥ छं० ॥ १०६ ॥

सारंग राय* का नागौद के पास मंगलगढ़ के राजा हाड़ा हम्मीर से मिल कर उसे अपने कपट मत में बांधना।

कवित्त ॥ मंगल गढ़ मंगलिय। नयर नागदह मिलंतह ॥
है हाड़ा हम्मीर। नैन बाहू सु जुरंतह ॥
पारधिरा प्रथीराज। चूक मंड्यौ चालुक्कां ॥
हाड़ा सों हथलेव। मूल कट्टन [4]सालुक्कां ॥
भंभरी भीर भौनिग तनय। परि पगार उद्दिग्ग तन ॥
पंचारि राइ पट्टनपती। तिवर तेग बत्ते कहन ॥ छं० ॥ १०७ ॥

* "सारंग राय" भीम देव का पुत्र था। यद्यपि यह बात इस छन्द में स्पष्ट नहीं लिखी गई है परंतु इस "पिता बैर बहुवन्ध, हुओ कर नार समान" पंक्ति से उक्त आशय निकलता है।

(१) ए. कृ. को.- किसी को परधास राज हरिचन्द न मंकिय

(२) ए. कृ. को.-मंस। (३) ए. कृ. को.-अचर।

꠸ ए. कृ. को.-प्रतियों में "कित्ती काज श्रिय राम राज भाभीछन दोनों" पाठ है और दूसरी पंक्ति "कित्ती काज विक्रम्म जैसे देसह धर लुक्किय" नहीं है। (४) ए. कृ.-को.-चालुक्कां।

* सारंग राय का पृथ्वीराज और समरसिंह जी के पास न्योता भेजना।

दूहा ॥ भोजन मिस चालुक्क ने। [1]पाइक पाइक कीन ॥
ग्रेह कपट्ट सु मंडि कै। करि जु निवंतन कीन ॥ छं० ॥ १०८ ॥
बरन राव रावन्न ढिंग। बर चालुक्क सु थान ॥
समर सिंघ चहुआन कों। न्योतन को बलवान ॥ छं० ॥ १०९ ॥

यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट-चक्र रचना।

कवित्त ॥ एक ग्रह बिच बीच। सुभर [2]सन्नाहति पंचै ॥
पंच घट्टि पंचास। बीर अंबी रज संचै ॥
तक्क लोह सहं दीन। करै चालुक्क सु चल्लै ॥
आषेटक चहुआन। समर रावर बर मिल्लै ॥
भोजन्न भंति रस बीर बर। बर प्रबोध ग्रह दिसि चलिय ॥
मन तन्न मुष्य मिट्टै सघन। सुबर बीर संगह हलिय ॥छं०॥११०॥

हाड़ा राव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिल कर शिष्टाचार करना।

दूहा ॥ आज हनंदे पाप बर। ग्रह वड्डे बड़राइ ॥
समरसिंघ चहुआन मिलि। दुष्य हनंदे आइ ॥ छं० ॥ १११ ॥

कवि का हाड़ाराव पर कटाक्ष।

बर प्रमान ग्रह ग्रेह कै। भेद चूक तिन जानि ॥
घालि पिटारी उरग कों। मेल्है को ग्रह आनि ॥ छं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज को नगर में पैठतेही अशकुन होना।

गाम वाम पैसत न्नपति। बन न्नप बोलत सद्द ॥

---

* इस प्रबन्ध में चालुक शब्द से सारंग राय से ही अभिप्राय है।

(१) को. मो.-धाइक।　　(२) मो.-सन्नाहित।

फेरि बीर दष्षिन भयौ। बैरी करन निकंद ॥ छं० ॥ ११३ ॥

ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना।

करिय सबर मनुहार न्रिप। चित्त धरं धरकत्त ॥
भोजन पिधि विधि सकल भय। अकल अपूरब बत्त ॥ छं० ॥ ११४ ॥

उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ।

कवित्त ॥ दै किपाट चिहुं कोद। राज मुक्यौ सु मंझ ग्रह ॥
ठाम ठाम सब सथ्थ। सूर सामंत सथ्थ रहि ॥
घोरंधार विहार।। बिपन बर बर बन मुक्किय ॥
संझ सपत्ते राज। चूक चालुक्क सलुक्किय ॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सह। बर षवास लोहान भर ॥
बर बंध उभै सेवक चिगट। समर काज उभ्भौ समर ॥छं०॥११५॥

दूहा ॥ तक्कि बक्कि उठ्ठे [1]सुभर। चंपे चालुक राइ ॥
हाइ हाइ मच्ची समुष। बकत बीर प्रथिराइ ॥ छं० ॥ ११६ ॥

सारंगदेव के सिपाहियों का सबको घेरना और पृथ्वीराज के सामन्तों का उनका साम्हना करना।

कवित्त ॥ चिहूं कोद बर सूर। तेग कढ्ढी सु हक्कि कर ॥
बज्र कढ्ढि कुंडली। करिय मंडली रजं फिरि ॥
लहि न और अवसान। कढ्ढी बर [2]अभ्भि सु सस्सी ॥
झरि चालुक सब देह। सिरह बढ्ढी मन हस्सी ॥
कैधूं दुबद्धि बंदर सिरह। हलधर हल सिर भारयौ ॥
सामंत सठ्ठि ग्रह कूदि कैं। फिरि पारस अरि पारयौ ॥छं०॥११७॥

रावल जी और भीम भट्टी का द्वन्द युद्ध।

रावगीन बर समर। भीम भट्टी जु कंध परि ॥

(१) ए. कृ. को.-समर। (२) ए. कृ. को.-आसि असे।

तेग हथ्थ भकझोर । बीर लिन्नों सु बथ्थ [1]भरि ॥
दुतिय घात आघात । घाइ [2]अग्गा बर बाहै ॥
कमल पंति दंती । समूह दारुन जल गाहै ॥
घट घाव भंग भेदै नहीं । चौकट जल घट बूंद जिम ॥
आहुट्ट उग्र साहस करिय । पच तरोवत अरिन तिम ॥छं०॥११८॥

पृथ्वीराज का *नागफनी से शत्रुओं को मारना ।

दूहा ॥ नागमुषी चहुआन लिय । अरिन करन्न सु दाह ॥
[3]हह नंषि उच्चाइ अरि । ज्यों कल बंधि बराह ॥ छं० ॥ ११९ ॥

घोर घमसान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में खरभर मच जाना ।

मोतीदाम ॥ रन बीर रवह कहै कवि चंद । सु मोतिय दाम पयं पय छंद ॥
कढ़ै बर आवध बज्जत तूर । उठे परसद्द महल्लन मूर ॥
छं० ॥ १२० ॥
नचै बर उट्ठि धरं धर स्हर । करै हक देषि उसस्सि करूर ॥
जु तक्कत अच्छर जालिन मझि । रही तिन मभ्भ सुकीव समुभ्भ ॥
छं० ॥ १२१ ॥
दिषी दिषि [4]सुक्कि्व अच्छरि जुथ्थ । उपावहि [5]मत्त जु सुंदर तथ्थ ॥
उपावत मत्त सु छोड़न घट्ट । चलंत है विझि अगम्मनि वट्ट ॥
छं० ॥ १२२ ॥
[6]अपज्जस कित्ति तज्यौ अस राइ । चल्यौ अप अग्ग छुड़ावत जाइ ॥
बरं कुलटा छंडि छंडि सु केउ । भुभ्भै उल कत्ति तज्यौ करि पेउ ॥
छं० ॥ १२३ ॥
जु पीय वियोग सह्यौ नह जाइ । चली बर नारि अमग्गन धाइ ॥
लरंतह भूपति भान कुंआर । करै मनु [7]वज्जय बज्ज प्रहार ॥
छं० ॥ १२४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-परि । (२) मो.-लग्गा ।
(३) मो.-हट्ट नंषिड । * 'नगफनी' एक शस्त्रविशेष । (४) मो.-सुकवि,कुक्कवि ।
(५) ए. को. मंत । (६) ए.- अयंजस । (७) मो.-बजूह ।

लरै भर चालुक चंपत घट्ट। सचीरह नारि अगंम सुभट्ट॥
भ्रिगं भ्रिग लज्जन दच्छन जाइ। भजै क्रम स्हूर [1]चियं गय पाइ॥
छं०॥१२५॥

कढ़ी बर तेग लग्यौ ग्रह धन्न। उड़ै बर मग्ग अलग्ग [2]क्रसन्न॥
सु उज्जल छोह चल्यौ रुधि छेदि। मनों जल गंग सु भारति भेदि॥
छं०॥१२६॥

तजै जर जम्म भिदै रवि जाइ। परै धर मुत्ति जु स्हूरन आइ॥
॥छं०॥१२७॥

रामराय बड़ गूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना।

कवित्त॥ बर बड़ गुज्जर राम। कूह वज्जिग बर धायौ॥
पीलवान अरियान। [3]पील अरि पूर लगायौ॥
नारिगोरि सा बात। तीर जल जोर सु बढ्ढी॥
मीन रूप रघुवंस। पूर सम्हौ अरि चढ्ढी॥
कल मलिनि कलिनि कलि कलन कल। लोह लहर सम्हौ हली॥
अरि घरा फुट्टि बर [4]धार सों। सुमन लोह उड्डै मिली॥छं०॥१२८॥

कविचन्द द्वारा "युद्ध" एवं सारंग देव के कुकृत्य का परिणाम कथन।

पंच क्रमन दस हथ्थ। [5]लुथ्थि पर लुथ्थिय हुट्टिय॥
न को जियत संचयौ। न को जुझ्झयौ बिन षुट्टिय॥
कोन जम सु जुझ्झवै। वैर मंगै सु पुव्व अब॥
व्याज तत्त अप्पीय। मूल अप्पयौ कुटँब सब॥
अदिहार बीर चालुक्क कौ। नको षेत बिन मुक्कयौ॥
संभाग बीर चहुआन कौ। सबै सथ्थ भोरी कियौ॥छं०॥१२९॥

(१) ए. कृ. को.-त्रियंअग (२) ए. कृ. को.-सक्रन्न। (३) ए.-पीर।
(४) ए.-धरा। (५) मो.-" लोथि पर लोथ "।

पज्जून राय के पुत्र कूरंभराय का बड़ी बीरता के साथ मारा जाना।

कवित्त ॥ [1]सुत पज्जून नरिंद। बीर कूरंभ नाम हर ॥
अस्त बस्त अरु सस्त। टूक लभ्भै न ढुंढ धर ॥
विहत बीच अरु षंड। एक [2]उग्गरि षँडेक भय ॥
कवि आयौ गुर तीय। नभ्भ कहि सहिस अत्ति हय ॥
ढुंढंत अस्ति न सुझ्झि परै। लोह किरचि रच्यौ रह्यौ ॥
भेदयौ राह रुपह सु रवि। बरन बीर बैकुंठ गयौ ॥ छं० ॥ १३० ॥

इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और पंद्रह भारी योद्धा काम आए।

कवित्त ॥ तीन राइ रजवार। सु इक्क रायत्तन सोरह ॥
रावत्तन दस पंच। सेन संभरिपति जोरह ॥
नागर चाल नरिंद। रैन [3]रावत पट्टनवै ॥
इते राइ अंगए। चूक एकन ठट्टनवै ॥
उद्दिग दार पांवार पर। पहुर तीन तुट्यौ करन ॥
आचिज्ज सूर मंडल सुन्यौ। सहु सथ्थैं [4]बंध्यौ सुतन ॥ छं० ॥ १३१ ॥

रेन पवांर (सामंत) की प्रशंसा।

कुंडलिला ॥ मरन न लद्धौ तुंग तिहि। सब सथ्थई पंवार ॥
सोमेसर नंदन [5]छला। गहि गज्जे गंमार ॥
गहि गज्जे गंमार। तेग तोरिन बर जारन ॥
चूक मूक्कि चालुक्क। स्वामि कढ्यौ बर बारुन ॥
[6]है हलान हथ्थियन। रयन रायत्तन सिद्धे ॥
सह सथ्था तन ताइ। तुंग तिन मरन न लद्धे ॥ छं० ॥ १३२ ॥

रेन पंवार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का

(१) मो.-सत। (२) ए.-ठगरि। (३) मो.-रावन।
(४) ए. कृ. को.-मंडयौ। (५) ए. कृ. को.-कला। (६) मो.-हेसतथ्थान बंधेरन।

उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्र भाव से पेश आना।

कवित्त ॥ बंध रेन लिय रज्ज। चाइ चालुक छंडायौ ॥
ढक्कि सेन संभरी। हेल हम्मीर बढ़ायौ ॥
षेल षग्ग षुमान। पान जोरैं जल पीनौ ॥
सो षीची परसंग। राइ तुक्कै, दल लीनौ ॥
अंकुर्‌यौ अरिन रिनथंभ सौ। सजि जद्दव बीरन बलिय ॥
रवि राह सस्सि संमुह गहन। जानि छछुंदरि अप्पलिय ॥छं०॥१३३॥

तेरह तोमर सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आए।

भयौ भूमि भूचाल। संष समरी आहुट्टै ॥
सजि सद्दै सिंदूर। सिंह पिंडी रवि तुट्टै ॥
तट्टे तेरह [1]तुरँब। सथ्थ बंबर बर धारी ॥
बार बार रावत्त। हस्त बर बाहर रारी ॥
अदभूत जुद्ध चहुआन किय। मिलि षुमान चल्ल्यौ षलह ॥
अजहूं सु अजब जुग्गिनि जगहि। पल संभरि पंषिन पलह ॥
छं० ॥ १३४ ॥

हुसेनखां का अमरसिंह की बहिन को पकड़ लेना और रावल जी का उसे छुड़ा देना।

कुंडलिया ॥ बंधे बर हुस्सेन। षान बल सुबर कुँआरिय ॥
रन जित्ते दुज्जनह। कोइ न मंडै रारिय ॥
कोइ न मंडै रारि। मेछ सुंदरी बघेरी ॥
समरसिंह सुनि कूह। चियं बंधत फिरि हेरी ॥
[2]धीठ षान दै आन। हद्द अहरत्तन संधे ॥
धीठ जमन हंकार। समर हेतु बर बंधे ॥ छं० ॥ १३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-तुररा। (२) ए. पीठ।

रावल अमरसिंहजी की प्रशंसा और अमरसिंह का उनको अपनी बहिन ब्याह देना।

दूहा ॥ अमर बंध रष्षी अमर। अगि दीनौ बर माल ॥
जस बेली चतुरंग कौं। बरन घल्लि उर माल ॥ छं० ॥ १३६ ॥

चौपाई ॥ जसवेली [1]बरिगौ चतुरंगी। चढ़ि चौंडोल ग्रेह अनभंगी ॥
बरन राव रावल संजोगी। सु धर फेरि चालुक न भोगी ॥
छं० ॥ १३७ ॥

आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है।

कवित्त ॥ अद्व रयनि संदेह। सद्द सावद्द कवीयस ॥
पऱ्यौ बीर जद्दव। नरिंद चंदेल [2]छवीयस ॥
गूड़राइ सचसलह। जुद्ध लोहं लरि बित्ते ॥
मुऱ्यौ सेन पुब्बहि। पसार पच्छिम भरि जित्ते ॥
[3]अप्पाह अप्प वीतक वित्यौ। बंधि चंदेल सज्जै सुहर ॥
आवद्ध बीर मत्तौ कहर। गही गल्ह बंधी सु धर ॥ छं० ॥ १३८ ॥

षुमान और "प्रसंगराय" खीची का रणथंभ की रक्षा के लिये जाना।

गाथा ॥ जित्ताराय षुमानं। निसानें सद्दयं धायं ॥
छुट्टा रन रनथंभं। षा षग्गे षीचियं रायं ॥ छं० ॥ १३९ ॥

चौपाई ॥ षीचीराइ हमीर अवन्निय। दोइ चहुआन घरम्म भवन्निय ॥
चालुक्कां सौं चूक सवन्निय। दुत्तिय दीपंता निरबन्निय ॥ छं० ॥ १४० ॥

कवित्त ॥ दूसासन अंग में। राज विहंग गति कीनी ॥
मध्यदेश मालव नरिंद। हंसध्वज भीनी ॥
नील वज कर धरिग। विप्र वंदन संपन्नौ ॥

(१) ए. कृ. को. षरिगो। (२) ए. कृ. को.-सवीयस। (३) कृ. अप्पांह।

नालिकेल तरू फूल। अनंद सौंनह सुभ किन्नौ ॥
सत पच्च लगन लभ्भह भरिय। घरिय अट्ठ तेरह तिनह ॥
रनथंभ सेन संचरि न्रपति। करिय अवधि ताकरि रनह ॥
छं० ॥ १४१ ॥

पृथ्वीराज का रणथंभ ब्याहने जाना।

दूहा ॥ आगम बीर बसंत कौ। रन जित्ते जुधवान ॥
बर हंसावति सुन्दरी। चलि ब्याहे चहुआन ॥ छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन।

गाथा ॥ रंग सुरंग सुदीहं। ज्यों कुंजिन मेलयं सब्बं ॥
बय रुष मुष अंकुरियं। सा मिलयं बंकुरी मुच्छं ॥ छं० ॥ १४३ ॥

दूहा ॥ मुच्छ रवन्निय राजमुष। बर बंधिग सुरतान ॥
तीन दिनन आवन लगन। आय सगंध पुरान ॥ छं० ॥ १४४ ॥

दोधक ॥ ग्रंथहु ग्रंथ पुरान कुरानय। राज रसं बरुनौं बरु जानय ॥
नीति अनीति सुभं सरसानय। लभ्भरु कित्ति लही चहुआनय ॥
छं० ॥ १४५ ॥

संपय राज स कोकिल संठिय। जानि जुवान न जानि सु पुट्ठिय ॥
गायन गाइ सुअथ्थ सु अथ्थिय। संभ्भय गानकला कल सथ्थिय ॥
छं० ॥ १४६ ॥

छंदह छंद रसे रस जानन। कंठ कला मधुरे मधु आनन ॥
उद्दिम मेन उदार सुधारिय। [1]न्रज्जय रूप सरूप सुरारिय ॥
छं० ॥ १४७ ॥

दूहा ॥ अवन रवन अरु सिष भवन। पवन त्रिविध तन लग्ग ॥
वापी कूप [2]तड़ाक द्रुष। विधि व्रंनन कवि लग्ग ॥ छं० ॥ १४८ ॥

पृथ्वीराज का आगवन सुनकर उन्हें देखने की इच्छा से हंसावती का झरोषे से झांकना।

(१) ए. कृ. को.-नृयज्जय, नृयजय। (२) ए कृ.को.-सटाक।

सा सुंदरि हंसावती। सुनि श्रोतान सुरुष्य ॥
बर दिष्टा नन मानियै। बेला लग्गि गवष्य ॥ छं० ॥ १४९ ॥
सुनि आयौ चहुआन अप। गुरुजन बंध्यौ जानि ॥
तब मति सुंदरि चिंतवै। भेदक गौष वषान ॥ छं० ॥ १५० ॥

गौख में से देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन।

कवित्त ॥ पंथ बाल पिय झंकि। सुभ्रित विंटियं सु राजै ॥
मनों चंद उड़गन विचाल। मेरह चढ़ि भाजै ॥
सुनिय श्रवन दै सैन। अलिन अलिमैन सरोजं ॥
रति मच्छर मति काम। जानि अच्छरि सुर सोजं ॥
धावंत वेस अंकुरित वपु। बसि सैसव तिन वेस धुरि ॥
श्रोतान सुष्य दिष्टान धनि। यह कहि चलि सैसव बहुरि ॥
छं० ॥ १५१ ॥

दूहा ॥ प्रथम बत्त श्रोतान सुनि। सुष पै दिषहि सलोइ ॥
सच बात झूठी चवौ। तब जिय सुष्य न होइ ॥ छं० ॥ १५२ ॥
सुनि श्रोतान सु मन्निय। दिषि दिष्टांत सचीय ॥
बीज चंद पूरन जिस। बधै कला मनि जीय ॥ छं० ॥ १५३ ॥

हंसावती के शृंगार की तय्यारी।

बर बेहरि देषी नृपति। गौ न्रिप न्रिपबर थान ॥
बालु सुअंबर काज कौं। बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ १५४ ॥

हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता वर्णन।

आभूषन भूषन न्रपति। वैसंधि कहि न कविंद ॥
कवि ब्रनन इह लग्गि चिय। ज्यों बृद्धत लघु चंद ॥ छं० ॥ १५५ ॥

हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य्य वर्णन।

कवित्त ॥ बर भूषन तजि बाल। सुबर मज्जन आरंभिय ॥
सोइ छबि बर दिष्षनह। कोटि [1]ओपम पारंभिय ॥

(१) मो.-उपमा।

बर सैसव बर चंपि। कंपि चिंहु कोद झपायौ ॥
सो ओपम कविचंद। जौन्ह बूड़त नल धायौ ॥
बालपन बीर बर मित्त पन। रबि ससि करि अंजुरि भरिय ॥
बय बाल [1]उवीचन प्रीति जल। सैसव तें हरई करिय ॥ छं० ॥१५६॥

नेत्रों की शोभा वर्णन।

दूहा ॥ बर सैसव अच्छर नहीं। जोवन जल बर मैन ॥
बाल घरी घरियार ज्यों। नेह नीर बुड़ि नैन ॥ छं० ॥ १५७ ॥

हंसावती के स्नान समय की शोभा।

मोतीदाम ॥ कि बाल प्रमोद सु मज्जन चंद। सुमुत्तिय दाम पयं पय छंद ॥
लटिं भिँजि बार रही लपटाइ। मनौ दिढ़ सुक्र लग्यौ ससि आइ ॥
छं० ॥ १५८ ॥
बि ओपम दै बरनै कबिराज। द्रवै ससि रीस दसं मदु आज ॥
बहै जल भेदि सु कुंकम बार। तिनं उपमान लहै कवि चार ॥
छं० ॥ १५९ ॥
जु राहय त्रास पियै विष सोम। द्रवै मुष चंदह मत्तह भोम ॥
करैं बर मज्जन सज्जन नारि। धरैं धन धारत संत सँवारि ॥
छं० ॥ १६० ॥

हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर सोलहो शृंगार और बारहो आभूषण सहित शृंगार की उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन।

नराच ॥ कियं सुरंग मज्जनं। नराच छंद रज्जनं ॥
सुगंध केस पासयौ। विहथ्थ हथ्थ भासयौ ॥ छं० ॥ १६१ ॥
उपम्म जीस साधयौ। विरंचि लेष बाधयौ ॥
जु बुद्धि रासि भासयौ। सजीवता प्रगासयौ ॥ छं० ॥ १६२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उलीचन।

[1]जु केस मुत्ति संजुरे । ससी सराह दो लरे ॥
मनीस बाल साच ज्यौं । कि कन्ह कालि नाच ज्यौं ॥छं०॥१६३॥
धरी नवैन कध्थयौ । जु कन्ह कालि मध्थयौ ॥
तिलक्क भाल भासयौ । भलक्क काल साचयौ ॥ छं० ॥ १६४ ॥
विधार गंग पावयौ । जु तिध्थराज आसयौ ॥
घसंत सोमता वरं । कलीन भद्र सावरं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
सुभाव वान [2]बाढ़यौ । सुराह कंपि [3]ठाठयौ ॥
सु पट्टि बाल ठानयौ । सु राह रूप जानयौ ॥ छं० ॥ १६६ ॥
उपम्म नेन ऐनसी । मनौं कि मीन मैनसी ॥
कवी [4]निसंक जानयौ । उपम्म चित्त मानयौ ॥ छं० ॥ १६७ ॥
भवन्न जीव छंडयौ । ससीम रूप मंडयौ ॥
उपंम बिंब उग्गनं । कमल्ल जासु सुम्मनं ॥ छं० ॥ १६८ ॥
रुलंत मुत्ति सोभई । उपम्म अत्ति लोभई ॥
अम्रत्त तार विच्छुरी । दु चंद अग्ग निक्करी ॥ छं० ॥ १६९ ॥
सु तारि हंस सामरं । अनेक भेस तामरं ॥
विभास रूप जामरं । सु चंद चित्त साहरं ॥ छं० ॥ १७० ॥
रतन्न बिंब जानयं । सु चंदवी प्रमानयं ॥
चिवल्लि ग्रीव सोभई । जु पोति पुंज [5]लोभई ॥ छं० ॥ १७१ ॥
ससीरु राह छंडि कैं । असंन बैठि मंडि कैं ॥
डरं हरा विसाल यौ । कि ईस दीप मालयौ ॥ छं० ॥ १७२ ॥
उरं चिअंग जित्तयौ । जु सुक्क बग्ग पंतयौ ॥
कि काम बीर भंजयौ । दहत्ति ग्रेह रंजयौ ॥ छं० ॥ १७३ ॥
उपंम ईस [6]कुच्चयौ । अनंग नीति रच्चयौ ॥
रोमंग तुच्छ राजयं । उपम्म ता विराजयं ॥ छं० ॥ १७४ ॥

(१) मो.-सु ।　(२) मो.-बाढ़कौ ।　(३) मो..ठाढ़कौ ।
(४) ए. कृ. को.-संक ।

(५) मो.-लुम्भई ।　(६) ए.-चक्कयौ ।

उरज्ज पच काम को। लिषै जोवंत वाम को॥
कटी अलप्पता ग्रही। मनों कि रिद्धि रंकई॥ छं०॥ १७५॥
कि सोभ द्वै न्वपं रही। तुला कि दंडिका कही॥
रुलंत छुद्र घंटिका। सदंत सद्द दंडिका॥ छं०॥ १७६॥
जु जेहरी जराइ की। घुरंत नद्द पाइ की॥
नितंब अद्ध तुंबियं। प्रबाल रंग [1]षुम्बियं॥ छं०॥ १७७॥
कि काम रथ्थ चक्रए। चलंत एड़ि वक्रए॥
उलट्टि रंभ जंघनं। करी सु नास पिंडनं॥ छं०॥ १७८॥
उपंम रंग राजही। जलज्ज भांति साजही॥
बसन्न सेत बन्नयं। उपम्म कव्वि भन्नयं॥ छं०॥ १७९॥
मनों कि दीय अंभयं। सुभंत मध्य रंभयं॥
दसन्न जोति दामिनी। मनों अनंग भामिनी॥ छं०॥ १८०॥
सुगत्ति हंस लीनयं। सिंगार सोभ कीनयं॥
झंकार झंजनं झनं। मनों कि सोर भद्दनं॥ छं०॥ १८१॥
सु कासमीर रंगयं। जु एड़ि जावकं लयं॥
मनों कि हंस सावकं। चलै बिद्रुम्म भावकं॥ छं०॥ १८२॥
[2]जरित्त मुद्दका नगं। सु जोति अंगुली लगं॥
जुवास रास चासयं। मनों हुतास पासयं॥ छं०॥ १८३॥
[3]दिपंति नष्प बीसयं। रबी ससी सुरीसयं॥
नव ग्रहीय पुच्चिया। उपम्म कब्बि बंचिया॥ छं०॥ १८४॥
जु चंद राह षेदि कै। कि हस्त चंद भेदि कै॥
उभै तिषट्ट भूषनं। सजंत मेटि दूषनं॥ छं०॥ १८५॥
चलंत वाम कोड़यं। तजंत हंस होड़यं॥
उमग्गि प्रिथ्थि देषनं। अलीन मभ्भ पेषनं॥ छं०॥ १८६॥
सु सैसवं लगंत रष्षि। मुक्कियं दरस्स दिष्षि॥
॥ छं०॥ १८७॥

(१) मो.- षुम्भियं,को.-पुब्बियं। (२) मो.-जरित। (३) मो.-दियत्त।

हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन।

हनूफाल ॥ सुर मनौं कौकिल जोइ। अबजंघ रंचन होइ ॥
अंबर कमल्ल पुटन्न। रितु देषि सीत बसन्न ॥ छं० ॥ १८८ ॥
इह संधि रंभ दसन्न। बनि रवनि प्रीत बसन्न ॥
कसि कासमीर सुरंग। झंकार पिंड अभंग ॥ छं० ॥ १८९ ॥
नग जरित मुद्रिक पानि। रवि परी होड़ सुजानि ॥
नौ ग्रहिअ पुंचिय हथ्थ। उपम्म चंद सु कथ्थ ॥ छं० ॥ १९० ॥
सोई चंद उप्पम षेदि। कै हँसत हिमकर भेदि ॥
बर एड़ि मंडि सुरंग। जनु प्रभा रवि ससि संग ॥ छं० ॥ १९१ ॥
षट दून भूषन सज्जि। सजि सजत सैसव लज्जि ॥
नग मुत्ति जेहर जोड़। गति हंस तजहित होड़ ॥ छं० ॥ १९२ ॥
बर चरन लगि चिंपयान। पय परस चलि चहुआन ॥
कर वाम [1]पान सलाइ। वे काज क्रम अगदाइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥
तव लग्गी सैसव रष्षि। मो [2]कंत दरसन दष्षि ॥ छं० ॥ १९४ ॥

हंसावती के केशरकलित हाथ पावों की शोभा वर्णन।

कुंडलिया ॥ बर कुंकुम सब सथ्थ रंगि। बहु सथ [3]न्रप बर सथ्थ ॥
सो ओपम बर राज लहि। कबि बरनन लहि कथ्थ ॥
कवि बरनन लहि कथ्थ। फिरिय गुर राजहि कथ्थें ॥
मन ससितर काम की। प्रात उग्गत रवि सथ्थै ॥
[4]सुभ्रत रवि ससि रूप। एक असु जीव काम तर ॥
पंचानन तिन होइ। पंच प्रथिराज देव बर ॥ छं० ॥ १९५ ॥

पृथ्वीरज का विवाह मंडप में प्रवेश।

दूहा ॥ वंदन वर आयौ न्रपति। तोरन संभरिवार ॥
प्रीति पुरातन जानि कै। कामिन पूजत मार ॥ छं० ॥ १९६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-यान। (२) मो.-कहन। (३) मो.-उप।
(४) मो.-कै सुभूत ससि रूप।

पृथ्वीराज के रत्नजटित मौर (व्याह मुकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन।

कुंडलिया ॥ लग मग जटित सुमेर सिर। तन तर वर मन सोभ ॥
पंच उभै ग्रह चंद सिर। संग सपत्तौ लोभ ॥
संग सपत्तौ लोभ। जुद्ध तट वर अन रुक्की ॥
रहै नृपति दै आन। नैन चितवत फिर मुक्की ॥
षंचन पष चिमनिय। ति नर तरुनी मन [1]लग्गा ॥
रन रावत जिम रेह। सूर भंगन ग्रह नग्गा ॥ छं० ॥ १९७ ॥

हंसावती का सखियों सहित मंडप में आना।

चौपाई ॥ सत संग किन्न अवंत अली। नंषत बर अचित [2]पाय चलि ॥
पिय तन देषि रूप रस [3]सानि। पंषि मनौ नव पंजर आनि ॥
छं० ॥ १९८ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य्य देख कर प्रफुलित होना।

कवित्त ॥ बंदि सु वर चहुआन। मंझ ग्रह काज सु लिन्नौ ॥
बाल रूप अवलोकि। महुर महुरं रस पिन्नौ ॥
द्रिग सौं द्रिग संमुहे। पीय उमगे द्रिग ओरन ॥
सो ओपम प्रथिराज। चंद ज्यौं चंद चकोरन ॥
नव भमर पिठ्ठ वर कमल में। कै मकरंद झुलावहीं ॥
आनंद उगति मंगल अभिष। सो कवि बरनन गावहीं ॥छं०॥१९९॥

पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठबन्धन होना।

दूहा ॥ बर अंचल सोमेस चित। बंधि बीर बर नारि ॥
देवक्रम दुज क्रम कहौ। सो बर बीर कुआरि ॥ छं० ॥ २०० ॥

संहावती के अंग प्रत्यंग में काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन।

---

(१) ए. कृ. को.-भग्गा मग्गा।
(२) ए. कृ. को.-पिय।
(३) मो.-मानी।

कवित्त ॥ बैनि नाग लुट्टयौ। बदन ससि राका लुथ्यौ ॥
नैन पद्म पंषुरिय। कुंभ कुच नारिँग छुथ्यौ ॥
मद्धि भाग प्रथिराज। हंस गति [1]सारँग मत्ती ॥
जंघ रंभ बिपरीत। कंठ कोकिल रस मत्ती ॥
ग्रहि लियौ साज चंपक बरन। दसन बीज दुज नास बर ॥
सेना समग्र एकत करिय। काम राज [2]जीतन सुधर ॥छं०॥२०१॥

दूहा ॥ कवि लघु लघु बत्ती कही। उकति चंद नन छेव ॥
मनों जनक बंदन कवन। जानु कि बंदै देव ॥ छं० ॥ २०२॥

इसी समय दिल्ली पर मुसलमान सेना का आक्रमण करना और ५० सामंतों का उस आक्रमण को रोकना।

कवित्त ॥ चढ्ढिग सब सामंत। चूक सब सेन सु दिष्षिय ॥
षट दस बर सामंत। मरन केवल मन लिष्षिय ॥
षंत निसुरत्ति समूह। जूह दैवान सु धाइय ॥
मार मार [3]उचरंत। मार कहि समर सु साइय ॥
इत उतह सब्ब सामंत रजि। तिन अरि तन तिन बर करिय ॥
मानव न नाग दिन आइ जुध। सुबर जुद्ध रत्ती करिय ॥
छं० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों और मुसलमान सेना का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ सूर सम्हें परे, सेन भग्गे लरे। काफरं विड्डुरे, लोह मच्ची झरे॥
छं० ॥ २०४ ॥
पारसं तं फिरं, सूर हक्के करं। कढ्ढियं षंजरं, नंष्षि लोहं करं ॥
छं० ॥ २०५ ॥
सूर बध्यं परं, मोह मोहे परं। कूक बज्जी षरं, लोह वडप्फरं ॥
छं० ॥ २०६ ॥

(१) ए. कृ. को. सारद। (२) मो.-जांपन।
* यद्यपि यहां पर दिल्ली का कोई जिक्र नहीं है परंतु यह बात आगे छ० २२० में खुलती है।
(३) ए. कृ. को.-उचंत,उच्चंत।

अग्ग उड्डी झरं, बीर बाजं ढरं। श्रोन रतं [1]धरं, अंत आलुझ्झरं॥ छं० ॥ २०७ ॥

ह्वर जा उच्चरं, रारि उग्गं जरं। लज्ज पब्ब परं, लोह लोहं करं॥ छं० ॥ २०८ ॥

बास साजं भरं, रैनि अड्डी बरं। बाज कुट्टी झरं, षान झारा झरं॥ छं० ॥ २०९ ॥

ढाह मीरं धरं, मझ्झ रोसं ररं। सानि सामं नरं, घाइ घुम्मं घरं॥ छं० ॥ २१० ॥

दूहा ॥ कन्ह बंध मझ्झैं रह्यौ। रहे सु जैत कु आर॥
हे मुक्किव सामंत गौ। उप्पर मेर पहार॥ छं० ॥ २११ ॥

दूसरे दिवस प्रातः काल सुरतान खां का आक्रमण करना।

कवित्त ॥ प्रात षान सुरतान। सेन [2]बंधी अहसारी॥
बर सोभै कविचंद। चंद अष्टमि आकारी॥
अद्ध चंद्र महमूंदि। अद्ध षुरसान षान करि॥
मध्य भाग रुस्तम्म। सेन षुरसान जित्ति [3]वरि॥
दल धरकि भरकि सिप्पर लई। अरुन दीय उद्दिम सुभर॥
चिचंग राइ रावर समर। चढि मंग्यौ [4]बंधव अमर॥छं०॥२१२॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं की चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन।

चोटक ॥ सारंग चख्यौ कविचंद भनं। रन नंकिय बीर नफेरि घनं॥
छननंकहि घंटन घंटन की। तन नंकहि भेरि भयंटन की॥ छं० ॥ २१३ ॥

घननंकहि घुघ्घर पष्य रनं। ठननंकहि आइ प्रसद्द घनं॥
[5]बर चिक्किय चक्कि मिले पलटे। दिषि घुघ्घुर रेनिय अस्स घटै॥ छं० ॥ २१४॥

(१) मो.-भरं। (२) मो.-बन्धे।
(३) ए. कृ. को.-बर। (४) ए. कृ. को.-बंध्यौ। (५) ए. कृ. को.-"वर चाक्किय"।

तमके तम तेज पहार उठे। बहुरे किधु पावस अभ्भ बुठे॥
कविचंद सु अंसुय [1]साव धरे। चय [2]नेत्त जु गंग समीर षरे॥
छं० ॥ २१५ ॥

दोउ दीन अनंदिय तेग छुटी। सु बनै चहुआनय सार टटी॥
छं० ॥ २१६ ॥

तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तैयार होना।

दूहा ॥ उट्ठि ढाल चहुआन बर। बढ़ि अवाज परवान॥
सुनि बरनी सों रत्त तिन। सत छुट्टे बर थान॥ छं० ॥ २१७ ॥

थोड़ी ही देर युद्ध होने पीछे मुसलमान सेना के पैर उखड़ गए।

कवित्त ॥ धुअ मुष रावर समर। षान निसुरत्ति षेत तजि॥
घरी अद्ध बजि लोह। सबै चतुरंग सेन भजि॥
जुद्ध कंध कुल नास। षान निसुरत्ति अहुट्टे॥
चामर छत्र रषत्त। तषत है वै बर लुट्टे॥
प्रथिराज बीर रावर समर। मिलि [3]नषिच पति ग्रहन गिरि॥
धर लज्जि लज्जि आहुट्ठ पति। तीन वार अट्ठंग गिरि ॥छं०॥२१८॥

युद्ध के अन्त में लूट में एक लाख का असवान हाथ लगना और पीरोज खां का मारा जाना।

जीत लियौ चतुरंग। चारु चतुरंग समोरी॥
[4]एक लष्ष प्रम्मान। ढाल गोरी ढंढोरी॥
षां पिरोज परि षेत। षेत को का उप्पारी॥
समर सिंघ रावर। नरिंद भोरी करि डारी॥
बज्जे निसान जयपत्त के। बिन सुरतानै लुट्टि दल[5] ॥ २१९ ॥
नीसान नद्द उनमद्द के। चामर छत्र रषत्त तल॥

(१) मो. साच। (२) मो.-नेत्र। (३) ए. कृ. को.-नछित्र।
(४) मो.-"एक लष्ष पम्मर प्रमांन" ए. कृ. को.-एक ल[ष्ष प]ष्पर प्रमांन।
(५) मो.-"विन सुरतान सु लुट्टि छल"।

पृथ्वीराज का सब सामंन्तों को हृदय से लगा कर कहना कि मैं आपका बहुत ही अनुगृहीत हूं।

मिले आइ चहुआन। सब्ब सामंतन मन्ने ॥
उच्च भाव आदर सु। दीन उर चंपि सु लिन्ने ॥
नैन चैन नन बैन। हीन सुषन्न कढ़ि दोऊ ॥
बर समान तुम राज। तेग राजन विधि कोऊ ॥
रष्यौ गाम रतिवाह दै। तुम कंधें ढिल्ली नयर ॥
चित्रंग राव रावर समर। [1]पाघ सीस बंधी अमर ॥छं०॥२२०॥

पृथ्वीराज का रावल समर सिंह के पौत्र कुंभा जी को संभर की जागीर का पट्टा लिखना।

दूहा ॥ [2]तेजसिंह सुत समरसी। तिह सुत कुंभ नरेस ॥
संभरि संभरि वार दै। दौहित्तौ सोमेस ॥ छं० ॥ २२१ ॥

समर सिंह का उस पट्टे को अस्वीकार कर लौटा देना।

कवित्त ॥ तब चित्रंग [3]नरेस। षिझवि नंष्यौ बर पट्टौ ॥
तुम ढूंढा कुल ढुंढ। सु मनि ऐसी मति ठट्टौ ॥
हथ्थ नीच करतार। हथ्थ उप्पर गजत्त गुर ॥
हम आहुट्ट मझ्झामि। स्वामि कहिजै सु [4]उंच बर ॥
कालंक राइ कप्पन [5]विरुद। कुलह कलंक न लग्गयौ ॥
दग्यौ न हाथ [6]चित्तौर पति। हम जगत्त सब दग्गयौ ॥छं०॥२२२॥

---

(१) कृ.-पाय।

(२) छंद २२१ की प्रथम पंक्ति का पाठ ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में समान है जिसका अर्थ होता है कि "समरसी का पुत्र तेजसी तिसका पुत्र कुम्भकरन जो कि पृथ्वीराज का भांजा था किन्तु मो.-प्रति में तेज सिंह चित्रंग सुत नाम त्ररिग भर वेष" पाठ है, इससे उक्त अर्थ में भेद पड़ता है।

(३) मो.-नारिंद। (४) मो.-चंद। (५) ए. कृ. को.- बिरद्ध।

(६) कृ.-चीतौर।

समर सिंह का चित्तौर जाना।

दूह ॥ ग्रेह गयौ चित्रंग पति। गौ ढिल्लिय न्वप छेह ॥
मास बीय बित्ते न्वपति। मतौ मंडि न्वप एह ॥ छं० ॥ २२३ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में मस्त हो जाना।

विमल विलोकन कोक रस। सोक हरन सुष सत्त ॥
समुष हंस प्रभु नीलप्रभ। विभ्रम वर द्रिग मत्त ॥ छं० ॥ २२४ ॥

हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन।

भुजंगी ॥ द्रिगं मंच मंचं सुमंचं प्रमानं। वियं केलि करनी विधानं सुजानं॥
निजं नेह नीलं सु कीलं कलानं। मुषं मूल बिप्पं सु देवं सधानं ॥
छं० ॥ २२५ ॥

मयं मोह मंडं सु बंदीन दानं। हयं हेम हड्डं पताका सु थानं ॥
[1]सु अंषं च सोभा स सोभा स मंचं। [2]छयं छंद जोतीय संसाइ तंचं॥
छं० ॥ २२६ ॥

पियं पेम तंचं सु कंतं सु थानं। सुराया बिहंगं सु पुची प्रमानं ॥
लियं ग्रेह सज्ज्या प्रथमं अलीनं। मनों मत्त मातंग [3]बंध्यौ कलीनं॥
छं० ॥ २२७ ॥

बचं अंकुसं हेट हेटं चलावै। दुरै देषि जालंतरे फेरि नावै ॥
छुत्यौ सैसवं लज्ज तें प्रेम आसं। फिरे जानि बाला तनं प्रेम आसं॥
छं० ॥ २२८ ॥

सया हंस हंसावती नील थाहं। कवी केलि कंठे यकी सच्च स्याहं॥
उरं अंत घोरं विवाहं विरोरं। कला केलि बढ्ढी विहानं सजोरं ॥
छं० ॥ २२९ ॥

दनौ देव ज्यौं आनि सद्दान सेजं। सदा स्वेद षेदं हुत्र्यौ प्रात हेजं॥
.... । .... ॥ छं० ॥ २३० ॥

(१) कृ. को.-सुयं। (२) मो.-" छय दुतिय छंन्द छम्माय तंत्रं।
(३) मो.-बन्धे।

मुग्धा हंसावती की कोक कला में पृथ्वीराज का मुग्ध हो कर कामान्ध वृषभ की नाईं मस्त होना।

*कवित्त ॥ अगह गहन रमि रमन। रवन रमि रवन सु छुट्टिय ॥
दहिय [1]वदन सहि रहिय। सरस रस सौर सु लुट्टिय ॥
महिय लहिय नहिं नहिय। [2]हइय हय हयइ यथा [3]हह ॥
सहिय सेज कह कहिय। चंषि चिंचनिय सन्न यह ॥
कामंध अंध मुद्दह वृषभ। भ्रमन भ्रमावह तिलक सन ॥
इह अर्थ सर्थ जानन सु गह। अगह मुगद्धन मन हसन ॥ छं० ॥ २३१ ॥

हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निर्म्मल चन्द्रमा की भांति प्रफुल्लित हो जाना।

दूहा ॥ मन हिय वृत्तन मुगधनिय। रमि राजन निय नेह ॥
नमिय निसा कर [4]अग रथिय। निसि न्रिम्मल दिय छेह ॥ छं० ॥ २३२ ॥

शनै शनैः हंसावती के डर और लज्जा का ह्रास होना और उसकी कामेच्छा का बढ़ना।

छंद कामंध ॥ न्रिम्मली नेह नासा। दिष्ट एन लग्गी सु चासा ॥
छेहंग कामी रसा। संचान भग्गी चसा ॥ छं० ॥ २३३ ॥
हंसावती संकुची। दासी प्रीति संवची ॥
†पुस्तका पढ़ि विस्तरी। कथा गाथा प्रेम बिस्तरी ॥ छं० ॥ २३४ ॥
दंत कंडक निस्तरी। हास विलास सुत्तरी ॥ छं० ॥ २३५ ॥

हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चद्रमा को देख कर पृथ्वीराज के हृदय समुद्र का उमड़ना।

काव्य ॥ गगन सरस हंसं स्याम लोकं प्रदीपं।
सस [5]सज बंधू चक्रवाकोपि कीरा ॥

---

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है। (१) को.-सवद।
(२) ए.- हरय। (३) को.हय। (४) मो.-मग्गथिय। (५) मो.-समं ससं।
† इस छन्द का पाठ चारों प्रतियों में उलट पलट है।

तिमिरगजमृगेद्रं चन्द्रकांतंप्रमाथी ।
विकसि अरुन प्राची भास्करं तं नमामी ॥ छं० ॥ २३६ ॥
अमृतमय शरीरं सागरा नंद हेतुं ।
कुमुद बन विकासी रोहीणी जीव तेसं ॥
मनसिज नस बंधु माननीमानमर्द्दी ।
रमति रज निरमनं चंद्रमा तं नमामी ॥ छं० ॥ २३७ ॥

दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हंसावती ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये।

मुरिल्ल ॥ बंछय चंद चकोरत राजन । [1]हंसनि हंस उदै भयौ साजन ॥
विहु निसि नेह निसाकर बढ्ढिय । कनक जेम कसि कर [2]आहुट्टिय॥
छं० ॥ २३८॥

गाथा ॥ उवनि फलनी फंदा । विसनी पत्त वलाकरे हथ्थं ॥
मरकति मनि भाजन्ने । परठियं पहुप सु तीयं ॥ छं० ॥ २३९ ॥

पावस का अन्त होने पर शरद का आगम और शीत का बढ़ना ।

झिल्ली झिंगुर खरी । गायन पुचीय ललित लुभ्भरियं ॥
पहुकिय षंष [3]सु हासं । झलकिय सीताइ मदं मंदाइं ॥छं०॥२४०॥
किय मंडि स पुक्करियं । मैनं राइ सिरीय बंधायं ॥
पर दार चौर साही । पुक्कारे जाहु रे जाह ॥ छं० ॥ २४१ ॥

शीत काल की बढ़ती हुई रात्रि के साथ दंपति में प्रेम बढ़ना।

पंपट करि करतारं । हंसा सयनेव हंस सह पायं ॥
निसि बड्डय अंकुरियं । कुक्कडयं [4]कंठ कल्लायं ॥ छं० ॥ २४२ ॥
[5]अचलीय नेह ससी हर । [6]रसनह रंगी सुरंगयं देहं ॥
उवकंठय संदेसं । गावै एकंतं चित्त सलाइं ॥ छं० ॥ २४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-हसति, हंसति । (२) ए.-आहुठ्ठिय । (३) ए. कृ. को.-सहासं ।
(४) मो.-कंठक । (५) ए. कृ. को.-"अब्रलिय नेह से सहिए" ।
(६) ए. कृ. को.-रसरह ।

हे मौनं करि कोकिलयं । जलधर सम एह कंठ [१]उंचत ॥
बिकसित कर जल बंदे । विकसित रमे कोक सावासी ॥ छं० ॥२४४॥
संग्राम गए सूरौ [२]संपगे । होइ चंद्रोदए ॥
विविधा काम तीयं । अवसर रत्त [३]काम लब्भाइं ॥ छं० ॥ २४५ ॥
गाहा नक्किय तत्तौ । सदानं नूपुरं उरवा ॥
[४]जिह अंकुर पव्वितं । भूतं जुथ्यांइ मंग भंगुरयं ॥ छं० ॥ २४६ ॥
जोई छविना वेनं । रचया सि महिला न रूप मह कमले ॥
तां नंचिय सु वियोगे । निमहं मुत्तंच जुग्ग जुग्गाए ॥छं०॥२४७॥

हंसावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंसावती की चाह में अहिर्निसि मस्त रहते थे ।

पीय आरंभत चिययं । चिय आरंभ कंतं [५]चित्तायं ॥
सो तिय पिय पिय पतौ । मा पिमं [६]विद्दमं धामं ॥ छं० ॥ २४८ ॥
अजा [७]सन्न जो होजा । कंठायं पयो हरं फलयं ॥
दीहंते सय लष्यं । हसनं रस नाय स बक्कियं होइं ॥ छं०॥२४९॥
*जोती अहर सहाओ । उचसिया कील कंतायं ॥
सो तिय अग्ग सुहाई । दिस असनी रसं नायं ॥ छं० ॥ २५० ॥
कवित्त ॥ रयनि पंच संकुलित । पंच लज्जित दुरि लोइन ॥
भिरत उभय भिरि षग्ग । मग्ग लग्गिय जुर जोइन ॥
[८]मिलत चतुर इक रीय । अतुर ग्रह ग्रहं [९]दद्दुर बल ॥
कमल कमल मंडिय सु चित्त । नष अष [१०]बष्य बल ॥
आरति सोइ दइता बिछुरि । पार [११]समुद्र न नेह लहि ॥
इय प्रात पतिव्रत प्रथम पहु । नवति चित्त आचंभ लहि ॥छं०॥२५१॥

इस समय की कथा का अंतिम परिणाम वर्णन ।

(१) ए. कृ. को.-उच्चंती । (२) ए.-संष । (३) ए. कृ. को.-कान ।
(४) ए. कृ. को.-"निद अंकुरं ए वित्त" । (५) ए. कृ. को.-वितायं ।
(६) मो.-वंदयं । (७) ए. कृ. को.-सानंजं ।
* यह छंद ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में नहीं है ।
(८) मो.-माचित । (९) ए. कृ. को.-दुदुर ।
(१०) मो.-चष्प । (११) मो.-समुद्रिन ।

कवित्त ॥ हंसराइ [1]हंसनिय । पानि ग्रहनी ग्रह हल्लिय ॥
मालव द्रुग्ग देवास । [2]वास मुह्नत नव वल्लिय ॥
हय गय धुर धर अम्म । क्रम्म कित्ती अति दानह ॥
ता पाछे रनथंभ । प्रीति षीची चौहानह ॥
चित्तंग राइ रावर रमिय । [3]देव राज जद्दव वहिय ॥
वित्तिय वसंत रिति अब्भरिय । अचल एक कित्ती रहिय छं०॥२५२॥

समर सिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन ।

दूहा ॥ वत्त कवित्त उगाह करि । चंद छंद [4]कविचंद ॥
समर अठारह बरष दस । दिवस त्रिपंच रविंद ॥ छं० ॥ २५३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हंसावती विवाह नाम छत्तीसमो प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ३६ ॥

(१) ए..संसानिय ।　(२) मो.-वास मुद्दंत नवाल्लिय ।
(३) ए. कृ. को.-बेदराज ।　(४) मो.-कवि छंद ।

अथ पहाड़राय सम्यो लिष्यते ।

(सैंतीसवां समय ।)

कविचंद की स्त्री का पूछना कि पहाड़राय तोंअर ने शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा ।

दूहा ॥ दुज सम दुजी सु उच्चरिय । ससि निसि उज्जल देस ॥
किम तूंअर पाहार पहु । गहिय सु असुर नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पूछना कि पृथ्वीराज का क्या हाल है ।

कवित्त ॥ संवत सर च्यालीस । मास मधु पष्ष ध्रम्मधुर ॥
चलिय दीह अहरुन्न । उदित रवि ब्यंब बरन तर ॥
अलिय आल आलोल । गरुअ [1]गज्जे [2]विसम्म गन ॥
रस रसाल मंजरि । तमाल पल्लव कमल्ल मन ॥
साहाब दीन सुरतान भर । आनि द्वार ठढ्ढौ सु बर ॥
अष्षै ततार षुरसान षां । कहा षबरि चहुआन घर ॥ छं० ॥ २ ॥

तत्तार खां का उत्तर देना ।

गाथा ॥ उच्चरि षान ततारं । अरि वरजोर अतर अत्तारं ॥
सामंत स्हर सभारं । मत्त अमित समित जमकारं ॥ छं० ॥ ३ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने की सलाह करना ।

भुजंगी ॥ कहै साह साहाब तत्तारषानं । रचौ मंडली मंडि दीवान थानं ॥

---

(१) मो.-गज्ज । (२) ऱ. कृ. को.-विसंग मन ।

अरी [1]षान दिष्षौ बरं आसमानं। [2]करौ कूंच सेना प्रकासंत भानं॥
छं० ॥ ४॥

दलं लष्ष तीनं गजं बाज पूरं। तिनं तेज तोनं करं किंत्ति ह्रूरं॥
अनंहद्द नीसान नद्दे कि नूरं। नचे भूत वैताल मत्ते मदूरं॥
छं० ॥ ५॥

हलाहूम्म झंकार हुंकार झारौ। तुटै तेक तानं झरं ढुमि धारौ॥
करै सेन मग्गं नचै जोगमाया। घनं निंदरे चोर नंचै न छाया॥
छं० ॥ ६॥

सुरं सिंदनं सोभ सा भानं लोलं। सजे सेन राजी रसालं सदोलं॥
रचै रंभ रंभा विमानं विमानं। जयं सद्द देवी [3]दिमानं दिमानं॥
छं० ॥ ७॥

मनों साल भंजीक तेजं प्रकारं। रची स्वामि संची रची मंडिरारं॥
धजं धूमरं सेत पीतं सुरंगे। रितं राज अग्गै मनूं फूलि [4]दंगे॥
छं० ॥ ८॥

असं बेस कंपी ढुरी चौर मज्जी। चढ़े काम फजरं पती पीत सज्जी॥
निहारं विहारं उपं हार हारं। बरें अग्रसेना मध [5]व्रत्त पारं॥
छं० ॥ ९॥

रचे तुंड तुंगं तियं एक नैनं। सजे ताल वैताल सिंदू सबैनं॥
बनै अच्छरी कच्छि विम्मान गैनं। पतं जुग्गिनी पानि इच्छंत रैनं॥
छं० ॥ १०॥

नचै रंग नारद्द मंडै अनूपं। चमू च्यारि भारं भरं सद्दि रूपं॥
अनी कोर आकार आक्रत्ति नूपं। बढ़ी भाग पच्छी पयो उंच ओपं॥
छं० ॥ ११॥

---

(१) ए. कृ. को.-पान। (२) मो.-करौ कूच सेनाइ सासंत भानं।
(३) ए. कृ. को.-विमानं विमानं। (४) मो.-हंगे।
(५) मो.-आत।

महो मंडि माया रहै लोपि मालं। षिले [1]षग्ग अग्गं बलं बोलि तालं॥
नवं नद्द नीसान [2]भेरी भयानं। मनों मेघ गज्जे [3]कयानं पयानं॥
छं०॥ १२॥

दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्त्रों मुसलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना।

दूहा॥ [4]तब ततार षुरसान षां। सुनौ साह साहाब॥
अरि अभंग दल सक्क रस। अमित तेज बल आब॥ छं०॥ १३॥
अरुन बरुन उद्दित अरुन। बढ़ि प्राची रुचि [5]रूप॥
मेच्छ सामि चढ़ि सेत अस। रन दिल्ली सम भूप॥ छं०॥ १४॥

समस्त सेना का दस कोस पूर्व्व को बढ़ कर पड़ाव डालना।

कवित्त॥ अरुन कोर बर अरुन। बंदि साहाब साहि चढ़ि॥
दिसि प्राची दष्षिन [6]विपथ्थ। पच्छिम उत्तर बढ़ि॥
सेस भाग भै भाग। भोमि संकुचि कुकंपि निल्ल॥
गमन सेन उड़ि रेन। गेंन [7]रवि षत्त धुंध डुल्ल॥
दस कोस थान दल उत्तरिग। घन अवाज घर रिपु [8]परिग॥
गत मेच्छ मंडि मंडल सुमति। गति सु जंग अग्गर धरिग॥छं०॥१५॥

दूहा॥ रत निसान डग मग अरुन। जिम दीपक बसि बात॥
सुनिव चंप अति साह मन। तन विकंप अकुलात॥ छं०॥ १६॥

अरिल्ल॥ मिले मेच्छ मंडल्ल भर भीरं। अतुलित पान षान संधीरं॥
उठत बयन अप अप्प समीरं। साहि [9]बढ़ौ थिर कर कंठीरं॥छं०॥१७

शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम।

(१) मो.-पग्ग।　(२) ए. कृ. को.-भेभी।　(३) मो.-पयानं कयानं।
(४) ए. कृ. को.-तवि।　(५) ए. कृ. को.-रूपि।　(६) मो.-विथ।
(७) मो.-रंचि।　(८) मो.-परिय।　(९) ए. कृ. को.-थटौ थट्टौ।

हनूफाल ॥ घम घम्म बज्जि निसान। चढ़ि सेंन कंपि दिसान ॥
पहु और कोरति भान। भर मंडि साहि दिवान ॥ छं० ॥ १८ ॥
बर मंच षान ततार। जुरि जुद्ध सेन करार ॥
षुरसान रुस्तम षान। [1]बाजिंद मीर प्रमान ॥ छं० ॥ १९ ॥
मनस्हूर सेर हुजाब। जिन दान षग जम आब ॥
[2]महमंद कम्मन काल। तिन तेज अरि भै चाल ॥ छं० ॥ २० ॥
मन ज्यांद जम्मन धीर। तेजम्म षान गँभीर ॥
बेहद्द षान जिहान। निसुरत्ति आजम मान ॥ छं० ॥ २१ ॥
ममरेज से रनसिंघ। भजि जात तिन अरिभंग ॥
मुलतान षान मसद्द। भारथ्थ षान सुहद्द ॥ छं० ॥ २२ ॥
आमोद जाजन पीन। तिन हक्कि अरि तन छीन ॥
आषेट आतस मीर। सारुफ सेर गँभीर ॥ छं० ॥ २३ ॥
सुरतान [3]मंडि दिवान। बर मंच करि परमान ॥
॥ छं ॥ २४ ॥

सभा में तत्तार खां का नियमित कार्य के लिये प्रस्ताव करना।

दूहा ॥ मिले मीर भर षान सब। रचि दिवान दरबार ॥
मंड मस्हरत्ति मत्त बर। तब षुरसान ततार ॥ छं० ॥ २५ ॥

वितंड खां का सगर्व अपना पराक्रम कहना।

कवित्त ॥ मीरषान से रनवितंड। हक्किय हक्कारिय ॥
सनमुष साहि सहाब। बोलि बह बह बक्कारिय ॥
हनों सेन हिँदवान। ऐन चहुआनह संधौं ॥
अरि अरिन्न अरि भीर। हक्कि हक्कों षग [4]बंधौं ॥

---

(१) मो.-बाजीद। (२) ए.-महमूंद।
(३) ए. संझि, कृ.-मांझि। (४) ए. कृ. को.-बन्धौं।

गज बाज साजि ऊथल पथल। षल अंदुन भंजौं [1]भरन ॥
भुअ भाष भिस्त मंकोद रन। कै [2]घोरह जीवन धरन ॥छं०॥२६॥

खुरसान खां का राजनीति कथन।

पद्धरी ॥ षुरसान षान कहि सुनि ततार। संची सु बत्त जंपौ सु ढार ॥
दल जोर तेज हिंदू अकार। बर मंच सेन रष्यौ [3]विषार ॥
छं० ॥ २७ ॥
बुल्ल्यौ वितंड काली तमंकि। तम छतें जुद्ध [4]किम साह संकि ॥
संग्रहौ सेनपति हिंदुराज। बंधों अषारि षल षग्ग बाज ॥छं०॥२८॥
निसुरत्ति मीर जंपै सु तब्ब। तम हसे साह किज्जैं न ग्रब्ब ॥
॥ छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ रावन ग्रब्ब विनाश रज। एन सीस हयबीर ॥
अप्पा कोनन उच्छयौ। कालू से रनमीर ॥ छं० ॥ ३० ॥

पद्धरी ॥ पुनि अष्षि साहि निसुरत्ति बैन। सुरतान आन भरकान [5]नैन ॥
कुहि बाज तेन चालंत पब्ब। भौषंग कंपि हैं ग्रब्ब सब्ब ॥छं०॥३१॥
राई सुमेर करते न बार। [6]अल्लह सुआल ऐसौ विचारि ॥
बिन साह तेज बढ्ढैं सु ग्रब्ब। इष्षै न ताहि अल्लह अदब्ब ॥छं०॥३२॥
मनो न संक चहुआन सूर। बंधव सुमंत्र भर मंच पूर ॥
बेलू विलाइ नदि बंधि वारि। बिन सेन कंक चहुआन च्यारि ॥
छं० ॥ ३३ ॥
* हिंदू सहस्स दस सामसंद। दल गैन लेस तन तेक कंद ॥
बुल्लाइ बैनपति समर मंड। बंचै विचार सु विहान चंड ॥
छं० ३४ ॥

बादशाह का (लोरक राय) खत्री को पत्र देकर धम्मायिन के पास दिल्ली भेजना।

(१) ए. कृ. को.-सरन। (२) ए. कृ. को.-घोराहि। (३) ए. कृ. को.-विचार।
(४) मो.-क्यों। (५) मो.-दैन। (६) ए. कृ.-अलहस्सुआल।
*ए. कृ. को.- "हिन्दु सु हद सोमेस नंद। लग्गे न लेस तन तेक कंद"।

गाथा ॥ [1]बुल्लि सु दूत हजूरं। मंडे पचीय बीर पचायं ॥
अष्पित पान प्रमानं। कथ्थी गाथाय सूर चहुवानं ॥छं०॥३५॥

दूहा ॥ बोलि दूत चव निकट लिय। दिय सु पच तिन हथ्थ ॥
कहो जाइ भ्रम्मान सों। सजि चहुआन समथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तैयारी होना।

गाथा ॥ निज के बीसा रुढं। वर साहाब ढिल्लीयं ग्रासं ॥
बरति मंच मष किन्नं। गज्जीय मद्द भद्द नीसानं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ गए दूत चलि निकट चव। करि सलाम बर साहि ॥
पुर डंकिन कंकन सजन। बलि आतुर बर ताह ॥ छं० ॥ ३८ ॥

दूत का दिल्ली पहुंचना।

स्याम [3]पष्प पूरन क्रमिग। पहु जुग्गिनपुर नैर ॥
दिय कग्गर भ्रम्मान कर। बर [4]भ्रिम्मै रिन बैर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का धर्म्मायन से मिलना।

गाथा ॥ दिय पची भ्रम्मानं। पानं गहि पाइ नाइ बर मथ्थं ॥
भर चौहान समथ्थं। सज्जौ सम साह कज्जयं वैरं ॥ छं० ॥ ४० ॥

धर्म्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मत पर शोक करना।

दूहा ॥ कायथ कागर वंचि कर। हायथ [5]हाय सु कीय ॥
साहि काल सुभ्भर सभर। आय पहुंच्यौ दीय ॥ छं० ॥ ४१ ॥

धर्म्मायन का दरवार में जा कर यह पत्री कैमास को देना।

बचनिका ॥ पची भ्रम्मन बाचि कैं देहु। बहुरि दरबार गएहु ॥
कैमास कों तसलीम कीनी। पची सु हाय दीनी ॥ छं० ॥ ४२ ॥

(१) ए. कृ. बुल्लवि। (२) मो.-साह। (३) मो.-पथ्थ।
(४) ए. कृ. को.-भंगै। (५) ए. को. हीय।

शहाबुद्दीन की पत्री का लेख।

चौपाई ॥ हम तुम घरतें सौगँध कीनी। नाते ध्रम्म दुह्र हैं चीन्ही ॥
दानव देव आदि भी लग्गे। तातें बैर पुरातन [1]जग्गे ॥ छं० ॥४३॥
ज्यों ज्यों हम तुम बजिहैं [2]धार। त्यौं त्यौं सुकवि गाइहैं सार ॥
अमर नाम साहिब का सांचा। पानी पिंड षेह का कांचा ॥छं०॥४४॥
हम तुम में वंध्या अहंकार। मरदां ध्रम्म पुरातन धार ॥
मरदा अलि भारथ्था वेती। मरद मरै तब निपजै षेती ॥ छं० ॥४५॥

दूहा ॥ मरदां षेती षग मरन। [3]अध्थि समप्पन हथ्थ ॥
सो सच्चा कच्चा अवर। कोइ दिन रहै सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कथा रही पैगंबरा। अरु भारथ्थ पुरान ॥
तातें हठ हजरत्ति है। सुनौ राज चहुआन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

धर्म्मायन का कैमास के हाथ में पत्र देना।

दिय पत्री इह कहि सु कर। करि सलाम तिय बार ॥
साहिब तुम सन लरन कौ। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास का पत्र पढ़ कर सुनाना।

सुनि मंत्री नृप अष्षि सम। बंचि पत्र तिन बार ॥
कंच कूंच षंधार पति। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पत्री सुनकर पृथ्वीराज का सामंतों की सभा करना।

सुनि पत्री चहुआन ने। सम सामंतन राज ॥
बात परठ्ठिय सब भरन। अप्प अप्प [4]भरसाज ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामंतों को समझाना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनौ सामंत सूर भर ॥
गज्जनेस चतुरथ्थ। विरथ आयौ सु अप्प [5]पर ॥
साज बाज मय मत्त। षग्ग बर भर उब्भारिय ॥

(१) ए. कृ. को.- लग्गो। (२) ए. को.-धारैं। (३) ए.-हथ्थि।
(४) मो.-बल। (५) ए. कृ. को.-सुर।

उतरि वेग नदि सिंधु। सुनिय धुनि अर उत्तारिय॥
सज्जौ समथ्थ सामंत सब। संमर चावर डंब रन॥
सुरतान खान खुरसानपति। दल बद्दल पावस परन॥छं०॥५१॥

सामंतों का उत्तर देना।

तमकि राज प्रथिराज। कहै समंत सूर भर॥
चाहुआन समरथ्थ। पथ्थ भारथ्थ चारु चर॥
सिंधु साह गज गाह। षग्ग षंडौ पल षित्तह॥
कर अंजुलि रिषि [1]अस्ति। चंद अचवन दल कित्तह॥
हर हार सार संमुष समर। अमर मोह जग्यौ अमर॥
ज्यों मान व्योम आरूढ़ [2]धरि। बनी चमू चौसर चमर॥छं०॥५२॥

पृथ्वीराज का पच्चीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना।

अरिल्ल॥ चढ्यौ राज प्रथिराज सु राजन। [3]पाव लष्य दल बल्ल गज बाजन॥
चामर छच रषत्त निसानं। मनं घनघोर दिसान दिसानं॥
छं०॥५३॥

कूच के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन।

चोटक॥ चढ़ि राज महा भर सेंन भरं। उडि षेह षुरं रुकि सूर करं॥
बनि अच्छरि चच्छरि चारु बरं। किल [6]कौतिग भूत बेताल वरं॥
छं०॥५४॥
मुष छंद सु चंद बरं पठियं। [4]मुष जुग्गिनि अंग वियौ गहियं॥
सुर सद्द जयं जयरं [5]कथयं। चल चंचल सूर चढ़े कसियं॥
छं०॥५५॥
तल ताल करालति कूक करं। .... ॥
दोइ आइस दूत ससाहि दलं। तिन अष्षिय सेन निकट्ट कलं॥छं०॥५६॥

(१) ए० कृ. को.-लागस्ति, अगस्त। (२) ए. कृ. को.-ढरि।
(३) मो.-तीन फौज रच्चे गज बाजन। (४) ए. कृ. को.-सुख।
(५) ए.-पथयं। (६) ए. कृ. को.-कोतिक।

पृथ्वीराज का पड़ाव डालना।

दूहा॥ सुनि अवाज सुरतान दल। हरषि राज प्रथिराज॥
कोस पंच दुअ संवचिग। हिंदुअ मेच्छ अवाज॥ छं०॥ ५७॥

अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना।

उदय भान प्राची अरुन। चढ्यौ राज सजि सेन॥
उर पातर कातर [1]इसे। मेच्छ पीर फर सेन॥ छं०॥ ५८॥

गाथा॥ अच्छरि कच्छिय गैनं। चैनं चवसठ्ठ गैन गोमायं॥
हर हरषे हारायं। जुद्धं सज्जाइ दो दसा दीनं॥ छं०॥ ५९॥

हिन्दू और मुस्लमान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

दूहा॥ मिलिवि सेन अरुन सु अनी। तनी तनी दुअ [2]दीन॥
असुर ससुर सज्जे सयन। दोउ बीरां रस भीन॥ छं०॥ ६०॥

शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना।

भोटि साहि भर षान सब। पति पुच्छी इह बत्त॥
अरिय प्रचंड प्रचंड दल। करहु समर सक मत्त॥ छं०॥ ६१॥

सूर्य्योदय होते होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और कोलाहल होना।

अरिल्ल॥ प्रगटित भान पयानिति पूरं। वाजिग दुंदभि धुनि सुर क्रूरं॥
चढ्यौ साहि संमर करि सूरं। अरुन बरुन मिलि तथ्य [3]सनूरं॥
छं०॥ ६२॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना।

दूहा॥ ढलकि ढाल बहुरंग बर। [4]गुरुत मत्त गजराज॥
झलकि नीर वपु दल चढ़िय। मनों पावस गुर राज॥ छं०॥ ६३॥

---

(१) ए. कृ. को.-जिसे। (२) ए. कृ. को.-दीम।
(३) ए. कृ. को.-न थूरं। (४) मो.-"गुरतम चढ़ि गजराज"।

दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन।

भुजंगी ॥ ढलक्की सु ढालं, हलक्के ति [1]ह्रूरं। धमक्के धरा, नाग नीसान [2]पूरं ॥
किलक्कै सुभैरु, बजे बाज तूरं। झलक्कैं सुनेजा धरा [3]धूम धूरं ॥
छं० ॥ ६४ ॥

बरक्के बितालं, बजै तार तालं। करै कूह कूहं, जगी जोग मालं ॥
नचै सट्ठि चारं, करै राग सिंधू। वकैं भूत प्रेतं, कठें तार तिंदू ॥
छं० ॥ ६५ ॥

मिली सेंन सेनं, ठगी लग्गि [4]नैंनं। वढ़ी काल काया, चढ़ी गिद्धि गैनं॥
भरं भीर भीरं, भिरैं बीर भारं। रची अठ्ठ फौजं, विचै साहि सारं॥
छं० ॥ ६६ ॥

मुषं अग्ग मंने, षुरासान अन्नी। भरं चिम्मनं, षान तेयं दिठन्नी ॥
दिसं वाम मारुफ, पीरोज सज्जे। दिसा दच्छनं, चिम्मनं जम्मरज्जे ॥
छं० ॥ ६७ ॥

अनी च्यारि पिट्ठं, अनी दोइ अग्गं। गुरं गोर तारं, फरी पाइ कग्गं॥
जग्यौ जगं जोरं, हुऔ बीर सोरं। घनंनद्द नीसान, भद्दं सघोरं ॥
छं० ॥ ६८ ॥

दूहा ॥ भर सहाब सज्जिय अनी। जिवन जोर चतुरंग ॥
सुभर प्रफुल्लित वीर सुष। काइर कंपत अंग ॥ छं० ॥ ६९ ॥

हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उस के अनी भाग और व्यूह बद्ध होने का वर्णन।

भुजंगी ॥ चढ्यौ राज चहुआन कुप्यौ करूरं। बढ़ी वेद साषी चढ़ी जाग ह्ररं॥
ढलक्की सुढालं सु ढालं धमक्कै। करं छत षग्गं सु पट्टे चमक्के ॥
छं० ॥ ७० ॥

---

(१) ए.-निसानं। (२) ए.-मेरं, कृ.-मूरं।
(३) मो.-"धरा धूर पूरं"। (४) मो.-गैनं।

घनंआगमं जानि विज्जू दमक्के । घनंघोर नीसान नादं घमक्के ॥
रची पंच [1]सेना मधे [2]मंद्वि राजं । गजं बाजि रोहं हयन्नार साजं ॥
छं० ॥ ७१ ॥

मुषं अग्ग कैमास चावंड सूरं । सहस्सं अठं सेन गज बाजि पूरं ॥
[3]भुजा दच्छिनं भीम कन्हं किवारं । सतं तथ्थ सामंत सेनं सवारं ॥
छं० ॥ ७२ ॥

दिगं वाम पंम्मार आबू[4]प्रईसं । चमू च्यारी सोभं भिरी आनि सीसं ॥
[5]रसं रौद्र मंद्यौ षगं [6]षंडि जीसं । फिरैं वेक ढालं [7]ढुरैं नागरीसं ॥
छं० ॥ ७३ ॥

पछं जाम जाजं दलं सिंघ साजं । सयं पंच पंचास संगी विराजं ॥
दहं तीन पंचं [8]तथं पंच सज्जं । इलं लेष नंदं गनं गेन गज्जं ॥
छं० ॥ ७४ ॥

घमं घम्म नीसान रीसान बज्जं । सबद्दं [9]सु सद्दं सु सिद्दं सु लज्जं ॥
चढ़े मेच्छ हिंदू मिली जुद्ध अन्नी । कथी व्यास भारथ्थ सा आज वन्नी ॥
छं० ॥ ७५ ॥

कुरं पंड बंध्यौ बधे आप अग्गे । इसे मेच्छ हिंदू भरं षग्ग लग्गे ॥
....   ।   ....   ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना ।

दूहा ॥ जनुकि पथ्थ भारथ्थ भर । लगि कुर पंड प्रचंड ॥
चाहुआन दल मेच्छ दल । हक्कि हय ग्गय झुंड ॥ छं० ॥ ७७ ॥
इत हिंदू उत मेच्छ दल । [10]रन चढ्ढे बर धीर ॥
हक्कि तेज असि वेग बढ़ि । लगे सुभर हर भीर ॥ छं० ॥ ७८ ॥

---

(१) मो.-फौजं ।   (२) ए. कृ. को.-मधं ।   (३) ए. कृ. को.-दिसा ।
(४) मो.-अईसं ।   (५) मो.-"रसं शङ्कर मडि षग षांडे जीसं" ।
(६) ए. कृ. को.-षंड ।   (७) ए. कृ. को.-ढलै, ढलैं ।
(८) ए. कृ. को.-मयं ।   (९) ए. कृ. को.-सुसज्जं ।
(१०) ए. कृ. को.-चल्ले चढ़ि ।

युद्ध का दृश्य वर्णन।

दंडमाल ॥ मेछ हिंदू जुद्ध घरहरि। घाइ घाइ अघाय घर हरि ॥
रुंड मुंडन षंड षर हर। मत्त बहुत सुरत्त झरहरि ॥ छं० ॥ ७९ ॥
भग्ग काइर जूह भीरन। छंडि जल ह्वरिज्ज धीरन ॥
रुंड चढ्ढिय रचि थर हरि। रक्त जुग्गिनि पत्र पिय भरि ॥छं०॥८०॥
चवत कीरति अच्छ अच्छरि। सुफटि पट्ट सुपट्ट फर हरि ॥
सिद्ध ह्वरन बीर जुरि जुरि। .... ॥ छं० ॥ ८१ ॥
प्रबल पीलिय पाल सेनिय। विचलि थल्ल दिग परैं ऐनिय ॥
गोम गैंन निसान नंगिय। थान थान बिवान संगिय ॥ छं० ॥८२॥
भुअन भिरि भुअधार धारन। श्रोन तुच्छिय हीर झारन ॥
हिंदु मेच्छ अघाइ घाइन। नंचि नारद जुद्ध चायन ॥ छं० ॥८३॥

गाथा ॥ नंचिय नारद मोदं। क्रोधं घन देषि सु भट्टायं ॥
हर हरषिय हारं। पत्तो चंद भानं भा यानं ॥ छं० ॥ ८४ ॥

सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना।

दूहा ॥ थकि झुझझत संध्या सपत। सपत भान पायान ॥
पहु प्राची बजि पंचजन। लह सूझत गोयान ॥ छं० ॥ छं० ॥ ८५ ॥

प्रातःकाल होतेही इधर से कैमास का और उधर शहाबुद्दीन का अपनी अपनी सेना को सम्हालना।

कुंडलिया ॥ पहुलग्गे चामंड सुभर। अरु चिमन्न चतुरंग ॥
इंद्रजीत लछिमन रहसि। बहसि बढी [१] सु तुरंग ॥
बहसि बढ्ढि सु तुरंग। पंच साइक भाले भिलि ॥
फुनि गोरी दाहिम्म। सु हय छंडे सु बंधि कलि ॥
जिम रघुपति पतिलकं। बकं कंकन कर अग्गी ॥
तिम गोरी दाहिम्म। सु हय छंडे जुध लग्गी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

(१) मो.-चतुरंग।

सूर्य्योदय होतेही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना और अपने अपने स्वामियों का जैकार शब्द करना।

कबित्त ॥ उदय भान पापान । कोर दिष्षिय दल चढ्ढिय ॥
हय गय [1]नर आररिय । सड्ड पर सद्दन बढ्ढिय ॥
अच्छरि तन सच्छरिय । व्योम विम्मानह चढ्ढिय ॥
दिष्षि सूर सामंत । देव जैजै मुख पढ्ढिय ॥
हथ्थिय सुधारि हथनारि धरि । गजैनारि करनारि बजि ॥
चढि हिंदु मेछ मुह मिलि अनिय । मनों अम्भ पावस सु रजि ॥
छं० ॥ ८७ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर वाणों की वर्षा करना ॥

दूहा ॥ भर भीषम तीकम अमर । धनुष बान अग्गान ॥
हिंदुअ मीर सुइक्क हुअ । मीरचंद सनमान ॥ छं० ८८ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना।

भुजंगी ॥ मिले हिंदु मेंछं अनी एक मेकं । [2]बजे षग्ग धारं रजे तोन तेकं ॥
करं पच [3]सत्ती चवै [4] सिंध नद्दं । श्रवै श्रोन गंडूष षग्गं उनंगं ॥
छं० ॥ ८९ ॥
उठें रत्त पीतं घमं धूम रंगं । सतं [5] सेत नीलं जलंजात संगं ॥
उठं पच [6]डंडूर सर सोभ सज्जी । मनों डंड सालं समंडं डरज्जी ॥
छं० ॥ ९० ॥
वितालं वितालं रजे ताल प्रेरं । गिरं मेच्छ हिंदू घनं घाइ बेरं ॥
जमं जांम जग्यौ जमानं सुजग्गं । तिलं [7]तिभ्भक्क अग्गं बढ़े षग्ग षग्गं ॥
छं० ॥ ९१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अर ।
(२) मो.-"बजे षग्ग धारं जेतो झत्ततेकं" ।
(३) ए. कृ. को.-सट्ठी । (४) मो.-सिद्ध ।
(५) मो.-सेल । (६) ए.-डेंडूर । (७) ए. कृ. को.-तिल्ल ।

जयं अग्गि जग्गी जनू जग्य जूनं । रते अंग अंगं चले संग [1]ह्रूनं॥
चढ़ी गिद्धि गैनं छयौ बान भान । परे पाइ सामंत सो चंद जानं ॥
छं० ॥ ९२ ॥

जिमं पंड [2]कैरू परे मझ्झि जुद्धं । सही सच्, कथ्थी षगं बढ्ढि उद्धं ।
कवीचंद कथ्थी कुरष्षेत हेतं । इसे हिंदु मीरं चढ़े बंदि नेतं ॥
छं० ॥ ९३ ॥

युद्ध भूमि में वैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन।

कबित्त ॥ नेत बंधि हिंदू । नरिंद सामंत मत्तभर ॥
मीर भार असरार । सबें ढाहे सु सद्धि सर ॥
पथ्थ जेम भारथ्थ । कथ्थ सुभ्भै जिम कथ्थिय ॥
सु कविचंद बरदाइ । एम कथ्थिय रन बत्तिय ॥
घन घाइ आघाइ सुघाइ घट । तेक तानि नंचिय करस ॥
चहुआन राइ सुरतान दल । न्रत्य बीर मंड्यौ सरस ॥ छं० ९४ ॥
दूहा ॥ तेग तार मंडिय समर । नचिय नंच बिन पैर ॥
चाहुआन सुरतान रिन । रचे न्रत्य बर बैर ॥ छं० ॥ ९५ ॥

योगिनी भूत वैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना और सूरवीरों का वीरता के साथ प्राण देना।

भुजंगी ॥ रचे न्रत्य बर बैर [3]हिंदू रु मीरं । रुदुं मंदलं तज्ज राजंत धीरं॥
घनं गज्ज नीसान ईसान सोरं । करें न्रत्य भूतं रचें और कोरं ॥
छं० ॥ ९६ ॥

करंताल भालं बजें रंग रंगं । भ्रमै गिद्धि गैनं नचै चारि जंगं
सुरं सुंदरी नंदरी चढ्ढि व्योमं । छबी छब्बि छायं बरं बार सोमं ॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ैं रत्त गुल्लाल फूले सु [4]फागं । षलं षग्ग कूचं समं माल लागं ॥
उठें गाइनं नंचि तोरंत तानं । लगें षग्ग पत्तं सु पेरंत मानं ॥छं०॥९८॥

(१) मो.-ह्रूनं। (२) ए. कृ. को.-केरं।
(३) मो.-हिन्दू समीरं। (४) ए. कृ. को.-कागं।

कटै अद्व सीसं बहै रत्तजानं। रतं पट्ट बंध्यौ मनों रिभ्भि भानं ॥
सुरं सट्ठि नद्दं चवै मुष्ष गानं। फिरैं जुद्व जोधं बहै मोह बानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

बढ़े मांस प्रासाद भूतं अह्वरं। रतं पानि डारं तकै स्हूर नूरं ॥
रुरै रत्त रूपं कचं कुंच वासं। विधिं छित्ति राजी रसं रंग रासं ॥
छं० ॥ १०० ॥

नचै प्रेत पानं बिना सीस केलं। मनों अग्ग फागं जगे न्त्य षेलं ॥
षगं घंटि नाना कटे रुंड सेषं। इभं रूढ़ सट्ठी निनें नारि देषं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

बकै मत्त हालाहलं षग्ग षंडे। जिसे राम रन मभ्भ रावन्न मंडे ॥
नवं नारिका बाटिका वीर तुट्टै। घनं घाइ प्रघ्घाइ जुग जोग छुट्टै ॥
छं० ॥ १०२ ॥

युद्ध रूपी समुद्र मथन को उक्ति वर्णन।

कवित्त ॥ नव बढ्ढिय नाटिका। षग्ग कड्ढी असु हक्किय ॥
हिंदु मेच्छ मिलि षेत। अप्प अप्पन चढ़ि कंकिय ॥
रा चावंड रा जैतसी। राइ पज्जून [1]कनक्कह ॥
मीर षान भर पंच। षग्ग वट्ठुए तननंकह ॥
वपु बेद चन्द बानी विमल। विढुरि षग्ग षल्ल षेत बढ़ि ॥
कंवल सु कढ्ढि [2]सुरतान दल। लिय रतन्न मथि देव दधि ॥
छं० ॥ १०३ ॥

कुंडलिया ॥ मथि कढ्यौ सुरतान दल। दधि केवल मन वढ्ढि ॥
मीर षान मारूफ दल। बीर विमानन चढ्ढि ॥
वीर विमानन चढ्ढि। दिट्ठ बढ्ढी बारह परि ॥
भर चंदेल विरंम। षेत भोरी सुभोंह भर ॥
गय नंगचंद अम्रत भरिग। कुसुम गुच्छ कविचंद पथि ॥
विम्मान पथ्थ रवि कुंत रथ। षग्ग नेत कढि केल मथि ॥
छं० ॥ १०४ ॥

(१) ए. कृ. को.-कमंक्कह। (२) मो.-षुरसान, षुरसांन।

इस युद्ध में जो जो वीर सरदार मारे गए उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन।

मोतीदाम॥ मथ्थो सुरतानय सेन पयार। लई जस कीरति चंद सुचार॥
परे रन मझ्झ चंदेल सुचाइ। परे बहु घान सुघाइ अघाइ॥
छं०॥ १०५॥

पर्यौ धर बाहर [1]राइति साल। धरद्धर षग्गन तुट्टिय ताल॥
बरें कर अच्छर सुच्छर माल। धकद्धक काइर छत्ति बिसाल॥
छं०॥ १०६॥

झुकि झझ्झुकि तुंडन अद्ध कमद्ध। मनों हरि चक्रन केतन बद्ध॥
पर्यौ घन [2]घाव सु वीरमदेव। हयग्गय बिट्टिय छच अनेव॥
छं०॥ १०७॥

बिनों सिर नंचत मीर कमंध। हये हय नाग नरब्भर संध॥
लयौ धर सीस सुभ्यौ असि साइ। हनैं लगि पंचय पंचय धाइ॥
छं०॥ १०८॥

[3]हए लगि पंचल षिम्मन घाइ। ....
[4]पर्यौ पीरोज सु रावन नंद। करे [5]नय कोतिग स्हरन चंद॥
छं०॥ १०९॥

चले दल चंचल दो सुरतानं। लगे कर देषि चँदेल परानं॥
परे मफरद्द सुमंच [6]विभीर। लगे ग्रहलुट्टि क्रषी कर कीर॥
छं०॥ ११०॥

गिरे सु पिरोज तिलत्तिल गात। बिय छवि छंछ बढ़ी हबिपात॥
[7]रजे रति आगम राव वसंत। नगम्मनि जंग परे बर संत॥
छं०॥ १११॥

(१) मो.-राय बिसाल।
(२) मो.-घाय। (३) ए. कृ. को.-हनैं, हने।
(४) ए. कृ. को.-"परयौ पुं पीरोज" (५) ए. कृ. को.-जय।
(६) ए. कृ. को.-विमीर। (७) मो.-रते।

गही तरवार विपानि सु झारि। नवंतिय वाइस अंत उतारि ॥
पऱ्यौ सम बाज सु हाजमषान। रचे गज इंद्र सु [1]ब्रह्म धियान ॥
छं० ॥ ११२ ॥

कऱ्यौ मन सूर तिलत्तिल षग्ग। उड़े रिन [2]पत्तरि तप्पत अग्ग ॥
चढ़े सारूप सु गैवर रूप। छयौ सम सीस धरद्धर भूप ॥ छं० ॥ ११३ ॥
भिरें भर हिंदुअ मीर अघाइ। गिरे दस पंच सहस्सह छाइ ॥
.... । .... छं० ॥ ११४ ॥

युद्ध होते होते रात्रि हो गई।

दूहा ॥ गिरे मेच्छ हिंदू सुभर। हय गय घाइ अघाइ ॥
[3]सुंड रुंड मुंडन झरत। रत्त झाकि झुकि ताइ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर पहाड़ राय तोमर का हरावल में होकर स्वयं सेनापति होना।

भिरि तूंअर लिय बग्ग भरि। हय करि नीर प्रवाह ॥
सघन घाइ संमुष [4]समर। लगे मेच्छ पति थाह ॥ छं० ॥ ११६ ॥

पहाड़राय तोमर का बल और पराक्रम वर्णन।

घाइ घाइ तन छाइ छिति। रत्त छिछ उछरंत ॥
भर तोंवर हर जिम तमकि। लग्गि [5]जमन गज अंत ॥ छं० ॥ ११७ ॥

कवित्त ॥ भर तोंअर अभि रत्त। धरत कर कुंत जंत अरि ॥
गजन बाज धर ढारि। धरनि बर रत्त जुथ्थ परि ॥
भग्गि मीर काइर कनंक। हिय पत्त [6]मुच्छि [7]द्रढ़ ॥
भग्गि सेन सुरतान। दिष्षि भर सुभर पानि कढ़ ॥
उभ्भारि सिंगि कुंभन छरिय। झरिय श्रोन मद गज ढरिय ॥
हर हरषि हरषि जुग्गिनि सकल। जै जै जै सुर उच्चरिय ॥ छं० ॥ ११८ ॥

---

(१) मो.-ब्रह्म सुधान। (२) मो.- पातरि।
(३) ए. कृ. को.-मुंड। (४) ए.-ससन, कृ. को..सरन। (५) मो.-जमुन।
(६) ए. कृ. को.-मुट्ठि। (७) मो.-द्रग।

दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्ध का अवसान होना।

दूहा ॥ प्रदिपद परिपातह पहर। समर सूर चहुआन ॥
दिन दुतिया दल दुअ उरझि। ससि जिम सद्धि षिसान ॥
छं० ॥ ११९ ॥

तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी को पुनः युद्धारंभ हुआ।

कवित्त ॥ दिन चतिया बर तुंग। झुक्कि झारन झुकि झुक्किन ॥
हिंदु मेच्छ हय हक्कि। धक्क बज्जिय भर इक्कन ॥
कटि मंडल घटि घुम्मि। झुम्मि झंझरिन अकालहि ॥
भूत बीर बेताल। मंस तुट्टत भ्रम चालहि ॥
दसकंध कोपि रघुपति रहसि। बिहसि चंद बढ्ढिय बदन ॥
चतुरथ्थ जुद्ध जंगिय जगी। रंगि कंक डक्किन रदन ॥ छं० ॥ १२० ॥

चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन।

दंडक ॥ चवथि जुद्ध उदोत आरनि। सुभर भीर समुष्ष धारनि ॥
कोपियं चहुआन भरहर। घाइ कुंजर ढाहि धरहर ॥ छं० ॥१२१॥
श्रोन द्रोन प्रवाह थरहर। अंत अंतन अंत भर हर ॥
[1]तार तान बिताल करि करि। तेग षेंचत पाइ परि परि ॥
छं० ॥ १२२ ॥
घुम्मि झुम्मि निसान बज्जिय। अगम मेघ असाढ़ गज्जिय ॥
धुनि सु असि असमान रज्जिय। दिष्षि देव विमान छज्जिय ॥
छं० ॥ १२३ ॥
कंपि कायर लज्जि लज्जिय। [2]विकल मुष ह्वै [3]निकलि भज्जिय ॥
समुष तोंवर साह सज्जिय। [4]विचल अरि कर तेग तज्जिय ॥
छं० ॥ १२४ ॥

---

(१) मो.-तार बितान बिताल कर कर।
(२) ए. कृ. को.-विमल।
(३) ए. कृ.को.-निकारि।
(४) ए.-विमल।

बीर बहुरि विशेष वानय। छुट्टि छाय अकास भानय॥
रेन स्हर दिसान थानय। सोक कोक [1]अलोक आनय॥छं०॥१२५॥

झमकि सुर मुष सस्त्र लग्गिय। दमकि दिसि दिसि षग्ग नग्गिय॥
रत्त पत्त प्रवाह झरि झरि। ईस सीस [2]सजंत गुरि गुरि॥छं०॥१२६॥

मच्छ मच्छन कच्छ कच्छिय। दलन दोन कलोन अच्छिय॥
अंत [3]दंतिय दंत पाइन। गिद्ध जुग लै उड़ी चाइन॥ छं० ॥१२७॥

नषत षित्त सुहत्त फिरि फिरि। मष्पि डोरि पसारि कर धरि॥
रुहिर सर सम बहत धार स। भँवर पंषिन काक पारस॥
छं० ॥ १२८ ॥

मौका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी के पर तलवार का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना।

हनूफाल॥ रंगिय रदनु जुग्गिन बीर। है गै पारि असि [4]वर मीर॥
तोवँर राइ दिष्यौ साहि। नंष्यौ बाज सनमुष आइ॥छं०॥१२९॥

डारिय तेग सिर करि षीज। *गिर पर जनु कि करकिय बीज॥
करि कर वारि गज धर ढाहि। [5]गैवर गिरत निक्करि साहि॥
छं० ॥ १३० ॥

तोंवर दिष्षि राह पहार। गैंवर दिष्षि है कँध डारि॥
भावरीं भग्गि जव्व मेछान। जै जै जै जंपियं चहुआन॥छं०॥१३१॥

मुस्लमान सेना का घवरा कर भाग उठना।

दूहा॥ भग्गि सेन सुरतान सब। रव लग्गी मुष तक्कि॥
गह्यौ साहि तोंवर [6]पुरस। जानि राह ससि बक्क॥ छं० ॥ १३२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-असोक जानय। (२) मो.-जाति।

* मो.-गिर पर जानु करंकिय वीन-पाठ है और ए. कृ. को.-प्रतियों में "गिरि पर किंकर कीय वीज" पाठ है किन्तु इन दोनों पिठो में छन्दोभंग होता है। (३) ए. कृ. को.-तंतिय।

(४) मो.-चर। (५) मो.-गिर चंत गैवर निकर साह। (६) मो.-पुरिस।

अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चकित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना।

कवित्त ॥ जुग्गिनि गन गर सिंधु । करत उच्चार सार मुष ॥
अछि अच्छरि बर इच्छ । विसन अक पानि नैन सिष ॥
बज्जि ताल बेताल । रज्जि बर [1]तुंड चंड सँग ॥
श्रोन छोनि छय छंछ । गुंज गन देन रत्ति अँग ॥
[2]मुरि मेच्छ धाइ घट सघन परि । हथ्थ घालि सुरतान लिय ॥
जित्तो जु आनि सोमेस सुअ । अभै सुभै अंगन घटिय ॥छं०॥१३३॥

सुलतान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दंड लेकर उसे छोड़ देना।

गहि गोरी सुरतान । अप्प ढिल्ली सँपत्तौ ॥
माह सुकल पंचमी । बार भ्रगु बर दिन वित्तौ ॥
किय सु दंड पतिसाह । सहस सत्तह सुभ हैंवर ॥
दुरद षट्ट प्रम्मान । वहै षट रित्त मद्द झर ॥
कोटिक द्रव्य न्रप हेम लिय । घालि सुषासन [3]पठय दिय ॥
कलि काज कित्ति बेली अमर । सुभत सीस चहुआन किय ॥छं०॥१३४॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके तोंवर पहाड़ राइ पातिसाह ग्रहन नाम सैंतीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥३७॥

(१) ए. कृ. को.-तंड। (२) मो.-मुरि सेन धाइ मिछ सछन परी।
(३) मो.-पट्ठ।

अथ बरुण कथा लिष्यते।

(अड़तीसवां समय।)

"सोमेश्वर" सांसारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे।

दूहा ॥ सुष लुट्टहि लुट्टहि मयन। अरि धर लुट्टै धाइ ॥
अंग नवनि करि उब्बरै। है षुर षग्गह चाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द्र ग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित यमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना।

सोम [1]ग्रहन सुनि सोमन्नप। कालंद्री मन आनि ॥
[2]है गै जन सब संग लै। तहां बोले बिप्र ठानि ॥ छं० ॥ २ ॥

सोमेश्वर जीके साथ में जाने वाले योद्धाओं के नाम और पराक्रम वर्णन।

मोती दाम ॥ जुषोड़स दान विचारिय राज। रची विधि ज्यौं [3]बध [4]देवति साज ॥
तहां ढिगोसिंघ पँवार पवित्त। [5]सुध्रम्मय ध्रम्म तहां बिपचित्त ॥
छं० ॥ ३ ॥
जुगौर गुरंबर सिंह सुसंग। जिनै करि जज्जर देहिय जंग ॥
तहां ढिग संजम राव नरिंदु। धरे जनु इंद्र विराजत [6]चन्द ॥
छं० ॥ ४ ॥
सुबाहन बीर बली कुनि तथ्य। तिने कलि ध्रम्मन दूजि यकथ्य ॥
तहां गुर राज [7]विराजत ताम। तिदिष्ट बचिष्ट मनों ढिग राम ॥
छं० ॥ ५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-ग्रहनी। (२) ए. कृ. को.-होम जग्य।
(३) ए. कृ. को.-बुध। (४) मो.-देवनी।
(५) ए कृ. को.-सुधर्मय ध्रम नहीं वियचित। (६) ए. कृ. को.-इन्द, इन्द्र। (७) मो.-बिरामत।

सु और अनेक महाभर मंझ। अमंत क्रमंत [1]सयन्तिय संझ ॥छं०॥६॥

उक्त समय पर पूर्णमा की शोभा वर्णन।

साटक। मुँदी मुष्य कमोद हंसति कला, चक्कीय [2]चक्कंचितं।
चंदं किरन कढ़ंत पोइन पिमं, भानं कला छीनयं॥
बानं मन्मथ मत्त रत्त जुगयं, भोग्यं च भोगं भवं।
[3]निद्रा वस्य [4]जगत्त भक्त जनयं, वा जग्य कामी नरं॥ छं०॥ ७॥

चोटक॥ *चकी चक्क चक्किय चित्त मयं। बिछुरे बिय दिष्षिय संझ मयं॥
†जु पयोधिम तत्त मझं सुरबी। सु मनों दिसि दिस्सि सिंदूर [5]जबी॥
छं०॥ ८॥

घन सोर द्रुमं करि पंष घनं। सु मनों लगि पारसियं पढ़नं॥
अलि वासिय पंकज कोक नदं। कुलटा बसि छैल रसं विमिदं॥
छं०॥ ९॥

बिरही जन दिष्टि सु धाम ढुरी। उलटैं बसि डोरि ज्यों चंग उरि॥
बजी बर देवल झल्लर झूर। तिसं षरु सिंगिय सिद्धन पूर॥छं०॥१०॥
[6]कपी मुग धापिय केलि कठौर। मुदै हसि प्रौढत सुंदर चौर॥
छबि दीपक द्वारन जोति जगै। जनु दंपति नैन सुभे उमगै॥
छं०॥ ११॥

जु लगीं धुअ घुंमर रैनन मंडि। चलै क्रम चोर मगं [7]पियं छंडि॥
‡जुरसे रस चामर सीस इसे। दिषि दीपक जोति पतंग जिसे॥
छं०॥ १२॥

बिरहा उर झारिय केलि करी। इन दाहिय देहरु प्रीति धरी॥
बिरही चिय मुष्य सु दुष्य [8]सदं। कुम्हिले जनु पंकज कोक नदं॥
छं०॥ १३॥

(१) ए. कृ. को-सपन्निय। (२) मो.चक्कीचितं। (३) मो.-निद्रया।
(४) ए. कृ. को.-जगंत। *ए. कृ. को.-"कवि चक्क सु चक्किय"।
† ए. कृ. को.-जु पयोध पतंत भझ सुरबी। (५) मो.-बची।
(६) मो.-किपि। (७) ए. कृ. को.-पिम।
‡ ए. कृ. को.-"जुरसे रस बामर सीदक से"। (८) ए. कृ. को.-मुदं।

जु सँजोगय भोग सुषं सरसे। सु कमोदिन चंद फुलै दरसे॥
जु ग्रिहं ग्रह जोवत दीप जुवं। जु वर मनु काम के बीज भुवं॥
छं०॥ १४॥

अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सब का यमुना के किनारे पर जाना।

दूहा॥ साँझ समय ससि उग्गि नभ। गइ जामिनि जुग जाम॥
ग्रहन समय दिषि होतही। जमुन पधारे [1]ताम॥ छं०॥ १५॥

वरुण के बीरों का जाग्रत होना।

स्नानं जंकी नौ न्रपति। जल रष्षा जगि बीर॥
[2]हक्कारे संमुष उठे। मंगन जुद्ध [3]सरीर॥ छं०॥ १६॥

इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवल दूब और अक्षत आदि लिए हुए खड़े थे।

ए बिन वस्त्र रु सस्त्र बिन। हस्त दरभ कुस कोस॥
तिल तंदुल जव पुहप कर। बरन दूत उठि रोस॥ छं०॥ १७॥

वीरों का गहरे जल में शब्द करना।

अति प्रचंड गहराइ गल। गल गज्जे वल बीर॥
स्याम बरन भय भीत दिषि। धीरन छुट्टै धीर॥ छं०॥ १८॥

जलवीरों के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन।

कवित्त॥ अति उतंग बज्जंग। उदित उर जोति रत्त द्रिग॥
अरुन रुधिर नष अधर। बस्त्र नन अस्त्र सस्त्र ढिग॥
दसन ऊंच सिर केस। वेस भय भग्गिय पासं॥
अति उनाह जम दाह। कौन मंडै जुध आसं॥
कल कलह बचन किलकंत सुर। सुर बाजत जनु धुनि धमनि॥

(१) मो.- बाम। (२) ए. कृ.- को.-हहकार।
(३) ए. कृ. को.-समीर।

हम करत केलि जल संचरत । तुम [1]संमुह कोइ [2]मत अवनि ॥
छं० ॥ १९ ॥

सांमतो का ग्राव पर चला जाना ।

दूहा ॥ सुभट दिष्ष करि क्रोध उर । भये भयानक हूर ॥
सस्त्र हथ्थ दिष्षे नहीं । *ग्राव ग्रहे जलपूर ॥ छं० ॥ २० ॥

जल वीरों के उछारने से वेग से जो जल ग्राव पर पड़ता था उसका दृश्य वर्णन ।

कवित्त ॥ परत ग्राव जल पूर । झरत जनु रुष्ष फल सुबन ॥
बजत घात आघात । फुरत अवसान बीर तन ॥
रावत्तन अवसान । देव दुंदुभि अधिकारी ॥
[3]जोग ग्यान चय मान । बनिक बुधि मोहि सुनारी ॥
राजेंद्र दान सिद्धह तपह । भुगति जुगति विधि [4]कोविदह ॥
इत्तनी बत्त अवसान मिलि । मनहु मंच जनु गुन भिदह ॥
छं० ॥ २१ ॥

जल के बीच में जल वीरों की आसुरी माया का वर्णन ।

आवरि कर वर करह । भिरत भारथ [5]पचारिय ॥
अंग अंग संग्रहहिं । इक्क इक्कत अधिकारिय ॥
अधम जुद्ध जुरि करहिं । करहिं बल कपट अनंगिय ॥
कबहु धूम वे करहि । करहि कव झार झरन्निय ॥
कब्बहूं मेघ [6]उट्ठें सुजल । कबहिं करन ग्रावह बरष ॥
उच्चरहिं बैन बहु बीर बर । बिरचि कबहु बुल्लैं हरष ॥ छं० ॥ २२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुमूढ़ । (२) ए. कृ. को.-मति ।

*ग्राव यह शुद्ध संस्कृत शब्द है यथा-शब्दकल्पद्रुम "पृथ्वी तावत् त्रिकोण विपिन नद नदी ग्रावरुद्धं तदद्धम्" । इसका तात्पर्य डेलटा से है ।

(३) मो.-ज्यों । (४) मो.-कोबदह ।

(५) ए. कृ. को.- परचारिय (६) मो. वुट्ठे ।

जलवीरों के बहुत उपद्रव करने पर भी सोमेश्वर के सामंतों का भयभीत न होना।

कबहुं सस्त्र सर परहिं। कबहु डक्कें डक्कारिहिं॥
तीन लोक तन [1]हक्कहिं। बक्कहिं बीरन बक्कारहिं॥
अकल कलह बल करहिं। समहि संग्राम सुधारहिं॥
अजुत जंग उद्धरहिं। *कलह बल धार उघारहिं॥
सामंत भूमि भंजहिं भिरहिं। गिरहिं परहिं उट्ठहिं लरहिं॥
सोमेस सूर संक न [2]गनहिं। विरंचि गाल गल बल करहिं॥
छं० ॥ २३ ॥

वीरों को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन करके सामंतों का भय दिखाना।

हम सु भयंकर बल अभूत। सुभटन [3]हक्कारिहिं॥
हम सु [4]प्रवत्त प्रमान। कनिष्ट अंगुरि उप्पारहिं॥
हम समुद्र प्रम्मान। डोहि जल पहुमि [5]प्रवाहहिं॥
देषी सुनी [6]न कोइ। सोइ ब्रह मंडल गावहिं॥
किन काम धाम तजि वाम सुष। आइ सपत्त जमुनि निसि॥
चर बेर निसाचर हम फिरहिं। नीर रमें तिल लेइ धसि॥
छं० ॥ २४ ॥

वीरों का राजा सहित सामंतों पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना।

दूहा॥ [7]इह कहि के लग्गे लरन। गैन गुंज जल फार॥
मानहु भारथ अंत कौ। भार उतारन हार॥ छं० ॥ २५॥

सामंतों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध करना।

कवित्त॥ काल संक अहुरहि। तार बज्जत प्रहार सुर॥
जम्मुन [8]जल अंदोल। बीर बोलंत बीर गुर॥

(१) मो.-तकँहि। * कृ. को.-कबहि वीरन वक्काराहिं। (२) मो.-गिनाहिं।
(३) ए. कृ. को.-हक्कारिय। (४) ए. कृ. को.-चंड प्रव्वत समान।
(५) मो.-प्रवानाहि। को.-प्रवाहिहि। (६)-न होइ। (७) मो.-एह कहे। (८) मो.-सजन।

कलह केलि सम केलि। ठेलि कढ़ै चावद्दिसि॥
एक ग्राव वरषंत। एक फारंत नष्ष कसि॥
परि मुच्छि मध्य विक्रम बलिय। जुद्ध निसाचर बिषम [1]भ्रषि॥
बर बीर धीर धप्पे लरन। फहु पट्टत न्रप सोम [2]लषि॥छं०॥२६॥

इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख वीरो का बल कम होना और सामतों का जोर बढ़ना।

पद्धरी॥ तिम [3]तिम सु बीर तामसत थोर। दिन उगन [4]बढ़ै रजपूत जोर॥
वड्डै [5]जु मल्ल मुट्ठी प्रहार। फट्टै कि भूम पट तार तार॥छं० ॥२७॥
उच्छरत जमुन जल इन प्रकार। क्रीड़ंत जानि मद गज फुंकार॥
तरफरहि मध्य जल इन प्रकार। कपि कोप नंषि गिरि समुद सार॥
छं० ॥ २८॥
बर भरहिं करहिं लत्तननि हाइ। *बज्जंत बज्ज जनु विषम घाइ॥
रन रह बहस्सि उच्चार बैन। इतनैं भयो [6]परताप गैन॥छं०॥२९॥
निसिचरन दिष्षि जब समय सूर। झलमलत किरन न्रिमल करूर॥
तमचरह पूर प्रगटी किरन्न। प्रगटीं सु दिसा विदिसान अन्न॥
छं० ॥ ३०॥
तब लग्गि पंच भर परिय मुच्छ। निसचर उतंग करि जुद्ध गच्छ॥
छं० ॥ ३१॥

प्रातःकाल के बाल सूर्य्य की प्रतिभा वर्णन।

दूहा॥ ज्यौं सैसब में जुवन [7]कछु। तुच्छ तुच्छ दरसाइ॥
यों निसि मध्यह अरुन कर। उद्दित दिसा [8]लसाइ॥ छं० ॥ ३२॥
*रत्ति रही वर विलगि बर। ज्यों ससि कोरह राह॥
हरि डट्ठै बाराह धर। कै हरि चंपत राह॥ छं० ॥ ३३॥

(१) ए. कृ. को.-पिंषि। (२) ए. कृ. को. लिषि।
(३) ए. कृ. को.तिमति। (४) मो.-वढ़ै। (५) मो.-मुगल।
* मो.-बज्र लेत हथ्थ जम्बू विघाइ। (६) ए. कृ. को.-परभात।
(७) ए. कृ. को.-कव। (८) मो.-ललसाइ। * मो.-"यों रत्ति ही रविलग वर"

सुर्योदय होते ही वीरों का अन्तर्ध्यान होना और सोमेश्वर सहित सब सामंतों का मुर्छित होना।

अरिल्ल ॥ गच्छिय सुद्ध निसाचर बीर। परै धर मुच्छि सु पंच सरीर ॥
किए तन पान प्रमानन जान। सु देवहि दुंदुभि जानिय गान ॥
छं० ॥ ३४ ॥

सव मुर्छित पड़े हुइ थे उसी समय पृथ्वीराज का वहां पर आना।

दूहा ॥ मृतक समानति मृतक परि। रहिग जीव छिपि छान ॥
तब लगि तहँ प्रथिराज रन। आनि सपत्ते [1]पान ॥ छं० ॥ ३५ ॥

निज पिता एवं सब सामंतों की ऐसी दशा देख कर पृथ्वीराज के हृदय में दुःख होना।

साटक ॥ [2]सोहिष्षं न्रप राज तात निजयं। बीभच्छ इच्छा क्रुधं ॥
कालं केलिय छिंछ रुद्ध तनयं, रुद्रं सु संरत्तयं ॥
माते तामस रस्स कस्स असुरं, [3]हालाहलं नैनयं ॥
राजं जा प्रथिराज चिंति तनयं, पुच्छै गुरं [4]ततगुरं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

यमुना के सम्मुख हाथ बांध कर खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना।

दूहा ॥ जमुन सनंमुष जोर कर। अस्तुति मंडिय सुष्ष ॥
तूं माता दुष भंजनी। रंजन सेवक सुष्ष ॥ छं० ॥ ३७ ॥

यमुना जी की स्तुति।

भुजंगी ॥ नमो मात मातंग [5]सूरज्ज जाया। नमो देवि भग्गी जमं पै [6]कहाया॥
जगं अंधकूपं सु दीपक्क गन्नी। नदी कौन [7]पुज्जै सु तेरी करन्नी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

(१) ए. कृ. को.-प्रान। (२) ए. कृ. को.- सो दिष्षं।
(३) ए. कृ. को.-हाली। (४) ए. कृ. को.-सद्गुरं, तदुरं। (५) मो.-सूरज्जि।
(६) ए. कृ.को.-कहाये। (७) मो.-पूजै।

महा ध्रम्म धारन्न तारन्न देही। निकस्सी सलीलं सु सेलं समेही ॥
बलीभद्र रष्षी हरष्षी हलंदी। तुअं नाम पासं सुभै सो कलंदी ॥
छं० ॥ ३० ॥

चयं ताप भंजै जगत्तं जनन्नी। तुयं सेपियं सेसु नंमं सरन्नी ॥
तुही तारनी जुग्ग हारन्नि पापं। तुहीं मात [1]करनी अघं कष्ट कायं॥
छं० ॥ ४० ॥

तुही याम सूरं जलं मुक्ति धारा। तुही नभ्भ मातंग नर लोग सारा॥
तुहीं साधवी मात नष्षं समानी। तुहो तारनं लोक त्रैलोक रानी॥
छं० ॥ ४१ ॥

तुही बाल वेसं तुही वृद्ध काली। तुही तापसं ताप आपं सुराली ॥
तुअं तट्ट सेवैं जिते [2]तिद्ध सिद्धं। तिते मुक्ति मुक्ति मनं बंछ दिद्धं॥
छं० ॥ ४२ ॥

तुही [3]मद्दनं मथ्थनं तेज धारा। तुहीं देवता देव चय लोक हारा॥
तुही जोगिनी जोग जोगं कपालं। तुही कल्प [4]में कंप राषंत आलं
छं० ॥ ४३ ॥

तुही विस्व रुपं तुहि विस्व माया। तुहीं तारनं जन्न संसार आया॥
कियौ अश्वमेधं पुनर्जन्म आवै। नही जन्म मातंग तो ध्यान पावै ॥
छं० ॥ ४४ ॥

तुअं ध्यान मातंग अस्नान पूरं। करै अर्घ [5]आचार उग्गंत सूरं ॥
तनं तम्मनं तं जयं निर्विकारी। इसी जमुन [6]अप्पं सदिष्षी अकारी
छं० ॥ ४५ ॥

स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना।

कवित्त ॥ गंगा मूरति विसन। व्रह्म मूरति सरसत्तिय ॥
जमुना मूरति ईस। दिव्य दैवन मुनि यप्पिय ॥

---

(१) ए. कृ. को.-कर वत, कर वत्त।
(२) ए. कृ. को.-"सिद्धं सिद्धंति"। (३) मो.-मद्दंत।
(४) ए. कृ. को.-में कप्प। (५) ए.-आवार।
(६) ए. कृ. को.-अष्षं।

मिली जाइ [1]झल मंग। गंग सागर अवधारिध ॥
ता सोमेसर रोग। दोष दोषह तन टारिय ॥
अब सुभट सहित देवी सु तन। करि निरमल तन मोह मय ॥
इह कहत जग्गि नृप मूरछा। प्रति बुल्लौ प्रथिराज तय ॥ छं० ॥ ४६ ॥

सोमेस की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वीराज का पुनः ब्रह्मज्ञान की युक्तिमय स्तुति करना।

साटक ॥ [2]त्वं मे देह सु भाजनेव [3]सरिसा जीवं धनं प्रनायं ॥
दाहं अग्गि सु क्रम्म दारुन धरै आवस्य [4]बंदं करं ॥
सं रुद्धं जम जोग तिष्टत तनैं अर्द्धं पलं मध्ययं ॥
जीवी वारि तरंग चंचल धियं बिस्मत [5]अस्तंतरं ॥ छं० ॥ ४७ ॥
आसा अस्य सरोवरीय सलिलं पंषी वरं [6]सुद्धयं ॥
सुष्यं दुष्यय मध्य वृच्छ तवयं साषास्य चै गुन्नयं ॥
मोहं पत्तय रत्त वृन्नव क्रमे फूलं फलं धारनं ॥
एकाश्रय सँतोष दोष तिगुना अस्याय वा निर्गुनं ॥ छं० ॥ ४८ ॥
यों भूतं आभूत वर्ष सु सतं आयुर्बलं अद्भुतं ॥
तेषा अर्द्धं निसा गतं रवि उभै बाल्यैच वृद्ध गता ॥
प्राप्तं जोवन रत्त मत्तय रसं व्याधं क्रुधं बंधनै ॥
ना भूतं संसार तारन गुने [7]संभार निस्तारयं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इस प्रकार मूर्छा जगने पर पृथ्वीराज का गन्धर्व यंत्र का जप करना जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना।

दोहा ॥ ग्यान ध्यान अस्तुति करिय। भयसु प्रसन्नय देव ॥
राज सहित सामंत सब। जगे मूरछा एव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गंध्रव मंत्र सुइष्ट [8]जिय। आराध्यौ प्रथिराज ॥
[9]बरुन दोष तन ताप गय। उठि निद्रा जनु भाज ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जल गंग। (२) ए. कृ- को.-त्वमे। (३) ए.-सस्सी।
(४) ए. कृ. को.-सवदं। (५) ए. कृ. को.-नर। (६) मो.सुठयं।
(७) मो.-संसार। (८) ए. कृ. को.-हुअ। (९) ए. कृ. को.-वरन।

पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर नवाना।

पद्धरी ॥ प्रथिराज राज सिर नामि जाइ। जानंत मरम तुम सकल राइ ॥
सरिता रु ताल वापी अन्हाइ। निसि समय बरुन तन धरिय पाइ ॥
छं० ॥ ५२ ॥
सरवरिय केलि सोइत्त [1]आइ। पाताल ईस क्रीलै सुभाइ ॥
सुमिरै न नाम सन सुद्ध [2]ध्याइ। उपजै सु विघन कै धर्म जाइ ॥
छं० ॥ ५३ ॥
भौसेन तब्ब तहँ एक ठाइ। करि वेद पठन तहँ विप्र गाइ ॥
करि होम जाप किन्नह पराइ। भए सुद्ध पाय गए तन [3]पुलाय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

सोमेश्वर को लिवा कर पृथ्वीराज का राजमहल में आना।

दूहा ॥ बरुन दोष मेंट्यौ सुप्रथु। ग्रेह संपते आय ॥
देषि पराक्रम सोम न्रप। फूल्यौ अंग न माय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके वरूण कथा नाम अड़तीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ३८ ॥

(१) ए. कृ. को.-पाइ।
(२) ए. पाइ, कृ. को.- धाइ। (३) ए. कृ. को.-फुलाइ।

अथ सोमबध सम्यौ लिष्यते ।

(उन्तालीसवां समय ।)

भीमदेव की इच्छा ।

कवित्त ॥ गुज्जर धर चालुक्क । भीम जिम भीम महाबल ॥
कोइ न चंपै सीम । कित्ति बर रीति अचंगल ॥
सोमेसर संभरिय । तास मन अंतर सल्लै ॥
प्रथीराज ढिल्लीस । रीस तस [1]अंतर बल्लै ॥
मिलि मंत तत्त बुझ्झवि मरम । करिय सेन चतुरंग सज ॥
धर लेउ आज दुज्जन दवटि । एकछत्र मंडोति रज ॥ छं० ॥ १ ॥

भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह करना ।

पद्धरी ॥ संभरिय राज गुज्जर नरेस । रत्तौ जु साम दानह [2]असेस ॥
[3]कालिंद कूल जंगलिय जास । प्रथिराज अकस रष्षै इलास ॥छं०॥२॥
चंपौ जु अप्प उर रषै डंस । मन मध्य भीम इम भूमि गंस ॥
हारे जुआरि कलमलिय [4]षेल । चालुक्क चित्त इम [5]मिलन सेल ॥
छं० ॥ ३ ॥
कुलटा छयल्ल जिम मिलन हेत । इम षगन षेत चहुआन चेत ॥
जिम चंद सूर मनि राहु केत । कलमलिय चलिय उर भीम तेत ॥
छं० ॥ ४ ॥
रानंग देव झाला नरिंद । बुल्यौ सु राइ चालुक्क इंद ॥
[6]तमि कह्यौ ताम हौ इतत रोस । झलहलत अग्गि ज्यों जग्गि कोस ॥
छं० ॥ ५ ॥
बुल्लाइ सब्ब भर इक्क ठौर । चढ़िवाइ वेगि बर करौ दौरि ॥
षेलंत नारि नर लेइ गढ्ढ । इम लेउ भूमि षल षग्ग बढ्ढि ॥छं०॥६॥

---

(१) मो.-अंबर । (२) ए. कृ. को.-अरेस । (३) मो.-काल्यंद ।
(४) ए. कृ. को.-ब्रेत । (५) ए. कृ. को.-मलन । (६) मो.-मत ।

जिम करिव बाल घर मिटत धूरि। तिम इला आउ चहुआन चूरि ॥
भज्जंत भील जिम घर सुहाल। संभरिय भूमि इम करों हाल ॥
छं० ॥ ७ ॥

कवित्त ॥ बोलि कन्ह कहौं नरिंद। रानिंग राज बर ॥
चौरा सिम जयसिंघ। बीर धवलंग देव धर ॥
धौल हरै सुरतान। बीर सारँग मकवानं ॥
जूनागढ़ तत्तार। सार लग्यौ परवानं ॥
मत मंति सज्जि चालुक्क भर। पुव्व बैर सात्यौ हियैं ॥
केतीक बत्त संभरि धरा। रहै रंग चच्चर कियैं ॥ छं० ॥ ८ ॥

गाथा ॥ सोझत्ती रन जित्ता। केवा किन्न संभरी राजं ॥
[1]तं केलि कलहंतं। सज्जै हूल षग्ग [2]मग्गायं ॥ छं० ॥ ९ ॥

सब सरदारों का कहना कि वैर का बदला अवश्य लेना चाहिए।

कवित्त ॥ बोली राव रानिंग। बोलि चौरासिम भामं ॥
स्यामा स्याम नरिंद। भीर कढ्ढी रन थानं ॥
अति उदार अति रूप। भूप साइं रन रष्षन ॥
चाहुआन बरसिंह। [3]षिभ्भयौ बड़वानल भष्षक ॥
जै जैत कित्ति संसै न करि। सुबर बैर कढ्ढौ विषम ॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवन। सुभर मुत्ति लभ्भै सुषम ॥ छं० ॥ १० ॥

दूहा ॥ सुषम पिंड संग्रहिय बर। जुग जोग [4]नह लभ्भ ॥
हिम ग्रीषम पावस सु तप। करै बीर प्रति अभ्भ ॥ छं० ॥ ११ ॥

भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा।

भुजंगी ॥ करै बीर बीरं सु बीरं प्रकारं। लगे राह चहुआन सो जुद्ध सारं ॥
सु रावत्त रत्ता अभीरत्त कोनं। करै षेत भीमंग कौ सोन जोनं ॥
छं० ॥ १२ ॥

---

(१) ए. कृ. को., "तकेलि कुलहंता"। (२) ए. कृ. को.-मग्गाइं।
(३) मो.-षिज्यौ। (४) ए. कृ. को.-नहिं।

करै कोन जमजोति जोत्यं प्रकारं । गनै कोन वेलू सु गंगा प्रकारं ॥
गिनै कोन तारक्क ते [1]तेज भोरैं । लरै कोन चालुक्क सो जुद्ध सोरैं ॥
छं० ॥ १३ ॥

भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना ।

गाथा ॥ फट्टै पुड़ु फुरमानं । धाये धराजित्त जिताइं ॥
इम जुट्टे सब सेनं । ज्यों भू नीर वढ्ढि सरताइं ॥ छं० ॥ १४ ॥

भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य ।

विअष्परी ॥ जुट्टे दल पहु पंग [2]अपारं । हैगै वर भर लब्भि न सारं ॥
बनै हयं पय पंष समानं । षह भूमी जनु पंष उड़ानं ॥ छं० ॥ १५ ॥
गज गज्जै गज्यौ जनु नीरं । भद्दव बद्दल जानि समीरं ॥
दिषियै सूर नूर षह पूरं । संध्या सागर [3]नूर करूरं ॥ छं० ॥ १६ ॥
चल्लै मल्ल मंग मल्हारे । धावैं धर पग पाहर कारे ॥
कच्छे कच्छै बंधै डोरी । चंदन षोरि षिलै जनु होरी ॥ छं० ॥ १७ ॥
जिन पग भूमि न ढिल्लैं कोई । विचरै लरै जानि जम दोई ॥
पाइक पग पिन्नै जनु नठ्ठं । षंडा कढ्ढि बढ़े गज [4]दठ्ठं ॥ छं० ॥ १८ ॥
गोरी बिन तिन लोह न छिज्जै । धार अनी कर वर ठेलिज्जै ॥
चंचल अस्वह [5]नंषत सूरं । सूर तेज जिन मुष्ष सनूरं ॥ छं० ॥ १९ ॥
बंकी भोंह भयंकर नैनं । फूली बंबर लग्गे गैनं ॥
रत्ते [6]स्वामि भ्रम्म रस रंगं । जोग जुगति मन चढ्ढत जंगं ॥
छं० ॥ २० ॥

नेह न देह न माया ग्रेहं । चिंतत सदा ब्रह्म मन लेहं ॥
तेग त्याग मन मंड न अंगं । सुब्भत सेन मनों सुभ्र गंगं ॥ छं० ॥ २१ ॥
गढ्ढ परे न्रप गाहत गढ्ढं । जिम वाराह मोथ रस दढ्ढं ॥

---

(१) मो.-मेज । (२) ए. कृ. को.-प्रपारं । (३) ए. कृ. को.-सूर ।
(४) मो.-वढ्ढं, वट्ठं । (५) मो.-जनुंषत । (६) मो.-साम ।

औगुन अंग न स्वामित जंगं। ज्यों सह गोन दुहागिल रंगं ॥
छं० ॥ २२ ॥
यों आतुर रत्ते षग मग्गं। ज्यों कुलटान छैल मन लग्गं ॥
दसहू दिसि दारुन दल बढ्ढं। ज्यों धुर बद्दल भद्दव चढ्ढं ॥छं० ॥ २३ ॥
सिलह सज्जि बढ्ढे बल बंकं। रीछ लंगूर मनों कपि लंकं ॥
दिष्षत सेनह नैन भुलाई। मानहुं साइर [1]पार डुलाई ॥ छं० ॥ २४ ॥
अमरसिंह सेवर परिमानं। भैरूं भट्ट तत्त बुधि जानं ॥
बंभन लीला लच्छिन मंडे। देव क्रंम सब बंधि रु छंडे ॥ छं० ॥ २५ ॥
सांम रूप सेवर परिमानं। दान रूप बर भट्ट सुजानं ॥
भेद रूप दुज राज वकारं। डंड रूप चारन आकारं ॥ छं० ॥ २६ ॥
लीने भीम संग चव मंची। दुष्ट अरिष्ट रमे जिन [2]जंची ॥
सुर्ग मृत्यु, पाताल सुसंकं। अस आडंबर मंडत कंकं॥ छं० ॥ २७ ॥

भोलाराय भीम का साम दाम दंड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना।

दूहा ॥ साम दाम अरु भेद करि। निरनै दंड रु सार ॥
च्यारि दूत चतुरंग मन। वर सिघंन आकार ॥ छं० ॥ २८ ॥
ए बुलाइ चालुक्क बर। मंची भोरा राज ॥
अमरसिंह सेवर प्रसन। मंच जंच गुन काज ॥ छं० ॥ २९ ॥
[3]इनहिं समीप बुलाइ करि। बोलिय भीम नरिंद ॥
ज्यों तुम जंपौ [4]त्यौं करौं। तुम [5]छत मो सुख [6]निंद॥ छं० ॥ ३० ॥

मंत्रियों का कहना कि इस कार्य्य में विलंब न करना चाहिए।

जंपि सु मंची मंच तब। सुनि भीमंग सुदेव ॥
धरती वर पर अप्पनी। लेत न कीजै [7]छेव ॥ छं० ॥ ३१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पाइ।
(२) ए.-मैंत्री। (३) मो.-इनह। (४) ए. कृ. को. ज्यौ।
(५) मो.-बत। (६) ए. कृ. को.-न्यंद। (७) ए. कृ. को.-सेव।

राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीषण घटनाओं का ऐतहासिक उदाहरण ।

साटक ॥ भूमीनं धर ध्रम्म क्रम्म [1]निरतं, बंध्यो बधं पाडवं ॥
भूमी काज दधीच आस मृगया, नित्तं बज्रं कारनं ॥
केकइयं भुअ काज रामय बनं, दसरथ्थ मंगे बरं ॥
सा भूमी क्रित कारनेव सरसा, स्नेहायय भूमयं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पुनः मंत्रियों का आख्यान कहना ।

कवित्त ॥ जा जीवन जग पाइ । आइ अवनी रस रंगह ॥
जो जा जीवन वलह । विनोद रषह मन पंगह ॥
जा जीवन कज्जह । कपूर पूरन प्रभु कोकह ॥
जा जीवन आरंभ । किति सा ध्रम्म सु रोपह ॥
जिहि काज जियन तप जप करहि । भमर गुफा साधहिं अवस ॥
तिहि जियन [2]त्यागि मंडय कलह । तौ भूमिय लब्भै सु [3]रस ॥
छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ सो जीवन इम पहुनि करि । अच्छित सती समान ॥
चावहिसि नष्षै निडर । वौ लब्भै [4]मिम पान ॥ छं० ॥ ३४ ॥

भोलाराय का सेन सज कर तय्यारी करना ।

सुनत मंत चल्लिय न्रपति । सज्जि सेन चतुरंग ॥
जनु बद्दल षह उन्नए । दिठ्ठ न परत [5]नभंग ॥ छं० ॥ ३५ ॥

सेना के जुड़ाव का वर्णन

अरिल्ल ॥ हाला हलं मिलत्तं सेनं । [6]ज्वाला मलि [7]ज्वालाह क्रत्तनं ॥
दैवत देव बंधि चतुरंगी । है हिलन्न हिंदू दल [8]नंगी ॥ छं० ॥ ३६ ॥

---

(१) मो.-सरसं । (२) मो.-काज ।
(३) मो.-सर । (४) ए. कृ. को.-पिम ।
(५) ए. कृ. को.-भमंग । (६) मो.-क्षाला ।
(७) मो.-क्षालाह । (८) ए. कृ. को.-लग्गी ।

गाथा ॥ सो चतुरंगय सेनं। हय गय सज्जि बीर उर रेवं ॥
अरुनोदय गुन मंतं। जानिज्जै सूरतं बीरं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना।

उठ्यौ छच छिति राज सिर। चिषत बीर रस पान ॥
यों सब सेना रज्जियैं। ज्यौं जोगिंद जुवान ॥ छं० ॥ ३८ ॥

कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मंत्र देते हैं परन्तु वे होनहार को नहीं जानते।

कहहि मंच मंचिय सुमति। विधि विधि सुविधि न जान ॥
कै भंजै कै रंजई। कै [1]दिवत्त प्रमान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

सेना का श्रेणीवद्ध खड़ा होना।

आनिअ [2]अक्षित साल गुन। विधि चालुक्क सयन्न ॥
पुब्ब बैर सोझित्ति कौ। झिरि भंजै रिन तन्न ॥ छं० ॥ ४० ॥

पंच सहस पंचौ सुक्रत। पंचौ पंच प्रक्षत्त ॥
पंच रष्षि पंचौ ग्रहैं। तौ भारथ्थ सु जित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सेना समूह का क्रम वर्णन।

दूहा ॥ सली मिली कज्जल वरन। भेक भयानक भंति ॥
तिन अग्गैं धर मँडे। तिन अग्गें गज पंति ॥ छं० ॥ ४२ ॥

उक्त सनासमूह की सजावट के आतंक की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

माधुर्य ॥ गज पंति चल्लिय जलद हल्लिय गरज नग घन भुल्लियं ॥
हल हलन घंटन घोर घुंघर नाग दुब्भर डुल्लियं ॥
गत लग्गि गिरवर पुरहि तरवर हलहि धरवर धाहही ॥
झलकंत दंत कि पंत बग घन धाम कल सति गावही ॥ छं० ॥ ४३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-देवत्त। (२) मो.-अनीति।

गज बहत मदह्द [1]मनहुँ घन भद छुट्टि छिंछन उभ्भरै ॥
पग जोरि मोरि मरोरि मुर जनु दिष्षि सुरपति लुभ्भरै ॥
बनि पीलवाननि ढाल हालनि बनिय बैरष साजही ॥
मनु सिषर गिरि वर काम अंगन छत्र चमर कि राजही ॥
छं० ॥ ४४ ॥

अंध धुंधन चलत मग्गन सुनत बज्जन चल्लही ॥
वै कोट ओटन अगड़ मन्नत सिषर गिर रद झल्लही ॥
दल मुष्ष मंडिय मेंघ छंडिय मनहु सुरपति वज्जयं ॥
सुर सोम सोमह मभ्भ्भ मोमह ग्रेह तजि प्रज भज्जयं ॥ छं॥ ४५ ॥

परि देस देसन रौरि दौरिय सुनिय संभरि रज्जयं ॥
बर मंगि बाजिय सिलह संजिय [2]वहै भोरा अज्जयं ॥ छं० ॥ ४६ ॥

इसी अवसर में मुख्य सामंतों सहित पृथ्वीराज का उत्तर की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामंतों को पीठि सेना की तरफ आने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ उत्तर वै विजयंत। रोह रत्तौ प्रथिराजं ॥
सोमेसर ढिल्लीस। संग सामंत सुराजं ॥
षीची राव प्रसंग। जाम जहाँ घट भारिय ॥
देवराज बग्गरिय। भान भट्टी षल हारिय ॥
उद्दिग्ग बाह [3]पग्गार भर। बलिय राव बलिभद्र सम ॥
इत्तनें रष्षि कैमास सँग। कलह कूच किन्नौ सुक्रम ॥ छं० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामंतों का भी चला जाना जिनके भुजबल के आश्रित दिल्ली नगर था।

दूहा ॥ जिन कंठन ढिल्ली नयर। ते रष्षे प्रथिराज ॥
रसित स्वामि अभ्यंतरह। कलह न [4]इच्छन काज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

---

(१) मो.-मनल। (२) मो.-वहौ।
(३) ए. कृ. को.-पागार। (४) ए. कृ. को.-इछत।

सुनत पुकारह छोह छकि। सत्तिय सत्त प्रमान ॥
चढ़त सोम चढ्ढे हयन। बिंटि नछिचन भान ॥ छं० ॥ ४९ ॥
रन बन घन सोमेस सुत। सज्जि सेन चतुरंग ॥
को विद गुन मन ज्यौं रमत। ज्यौं भर जानत जंग ॥छं०॥५०॥

उसी समय पूर्व वैर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़आना, प्रातःकाल की उसकी तैयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ नाग कलं मलि भार। सार सज्जत रन रज्जन ॥
दै दुवाह चालुक्क। भीम भारथ सों लग्गन ॥
सोझत्ती बर बैर। बहुरि हालाहल मच्च्यौ ॥
भरन पहुंचिय [1]आव। लेष लंघै को रच्यौ ॥
करि [2]न्हान दान इष्टं सु जप। भट अभंग सज्जे समुद ॥
विगसंत नयन दिय बयन। मनों प्रात फुल्लै कुमुद ॥छं० ॥ ५१ ॥

इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के सम्मुख युद्ध करने के लिये तय्यार होना।

कुसुम जुद्ध कुसुमेक। कुसुम संद्यन कुसुमेकह ॥
आदि जुद्ध संपनौ। दैव बच्यौ दुति देकह ॥
संभरि वै संभरिय। राज सोमेसह कन्नं ॥
उत्तर दिसि प्रथिराज। गयौ उत्तर दिसि मन्नं ॥
जै सिंह देव जै सिंह सुअ। धुअ प्रमान पय [3]डड षरौ ॥
इल अचल अचल लग्गन नदिय। गरिल ग्गागर उब्भरौ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सोमेश्वर की सेना की तय्यारी वर्णन।

हनुफाल ॥ सजि सेन सोम अपार। सुनि सज्ज सेन प्रकार ॥
सोमेस सूर विचार। सजि चढ़े बीर जुझार ॥ छं० ॥ ५३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-आउ। (२) मो.-कान्ह।
(३) कृ. को. मो.-डंड।

*धरा धरा कंपिय भार । .... ॥
चढ़ि राइ चालुक पान । धर धरिय दिल्लि सुथान ॥ छं० ॥ ५४ ॥
सुनि श्रवन संभरि राज । बर बज्जि [2]विजयत बाज ॥
तन [3]चविधि तूल तरंग । विधि मंडि बीर विजंग ॥ छं० ॥ ५५ ॥
दल देषि सूर सुरंग । उर होत अरियन पंग ॥
ढलकंत ढिल्लिय ढाल । मधु माध नूत तमाल ॥ छं० ॥ ५६ ॥
छुटि अचग अच्छतुपार । पाहार फारि प्रहारि ॥
उड्डि इत्त तिड्डिय सेन । मनों राम लंका लेन ॥छं० ॥ ५७ ॥

सैनिकों का उत्साह सोमेश्वर की वीरता और कन्हराय का बल वर्णन ।

कवित्त ॥ चिविध साज वड्डिय । अवाज भेरी कोकिल सुर ॥
भवर झुंड झंकार । चौर मोरह दुरंत बर ॥
बर बसंत सम बीर । नच्चि तोषार चिंभगिय ॥
[4]रन रत्तौ सोमेस । भीम भारथ अनभंगिय ॥
दल धरकि भरकि काइर सरकि । हरषि सूर बज्जिय करस ॥
कन्हा नरिंद प्रथिराज बिन । सुभर कंक मंडिय सरस ॥छं०॥५८॥

युद्ध आरंभ होना ।

दूहा ॥ सुबर बीर मंड्यौ समर । रन उतंग सोमेस ॥
दै दुबाह [5]दुज्जन घरी । घरी सु अक्क तरेस ॥ छं० ॥ ५९ ॥

कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति उसका व्याखान ।

कवित्त ॥ जा दिन जीव रु जम्म । क्रम्मता दिज जम पच्छै ॥
सुष्य दुष्य जय अजय । लोभ माया नन सुच्छै ॥

---

* यद्यपि यह पाठ मो.-प्रति में ५३ छंद का चतुर्थ चहण करके दिया हुआ है किन्तु अन्य तीनों ए. कृ. को.-प्रतियों में छ० ५३ के चतुर्थ चरण का "सजि चढ़े बीर सुझार" पाठ है । अतएव यह पाठ भेद नहीं हो सकता, आगे चल कर छंद भंग भी है—इस से मालूम होता है कि इसके साथ का दूसरा चरण लेखक की भूल से छूट गया है । (२) मो.-विजयसु । (३) ए. कृ. को.-विधि ।
(४) को. कृ.-नर, ए.-मर । (५) ए. कृ.-दुज्जर्न ।

काल कलह संग्रह्यौ। मोह पंजर आरुद्धौ॥
[1]मुगति मग्ग सुझ्झै न। ग्यान अंतह किन सुद्धौ॥
प्रतिव्यंब अंब अंबह जुगति। भुगति क्रम्म सह उद्धरै॥
केवल सु भ्रम्म [2]षिचिय तनह। कन्ह कंक जौ सुद्धरै॥ छं०॥ ९०॥
दूहा॥ बीर गज्जि गज्जिय विदुष। *नर निरदोष सदोष॥
संभरवै [3]संमर सुमति। न्रप लगि सुमत जमोष॥ छं०॥ ९१॥

कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना।

कवित्त॥ सजिय सकल सन्नाह। दाह जनु दंगल पट्टिय॥
सुमरि साह इक देव। द्रुवन दल देषि [4]दपट्टिय॥
छुट्टिय पट्टिय नयन। भइ दुंदभी गयन्ना॥
तेग वेग झम झमिय। मच्च आरीठ भयन्ना॥
फूलह सु धार धर कन्ह वर। कर पर छुट्टिय छह घरिय॥
पग सट्ठि नट्ठि भीमंग दल। बल अभूत कन्हा करिय॥छं०॥९२॥

दोनों हिंदू सेनाओं की परस्पर ओजास्विता का वर्णन।

दूहा॥ काल चंपि बर चंपि कल। नर निर्घोष निसान॥
सुबर बीर हिंदुअ सयन। बर बीरा रस पान॥ छं०॥ ९३॥

कन्हराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन।

†कलाकल॥ कलहंतय केलि सु कन्ह कियं। जु अनंदिय नंदिय ईस बियं॥
नचि [5]नौ रसमं इक कन्ह भरं। मय मंचि भयानक अंत करं॥
छं०॥ ९४॥
झमकंत सु दंतन अस्सि भरी। जनु बिज्जुलि पब्बत मेघ परी॥
उड़ि धुंधरियं निय छाइ जनं। जनु सज्जिय [6]जुग्ग जुगद्दि पनं॥छं०॥९५॥

---

(१) क्व. को.-मुकाति, ए.-सुकाति। (२) ए. क्व. को.-छत्री। (३) ए.-संभर।
*ए. क्व. को.-नर निर षोस दोष। (४) ए.-दुपट्टिय, मो. को.-लपट्टिय।
(५) मो.-नौ रस में। (६) मो.-सज्जि।
†इस छंद को "को" प्रति में मधुराकल करके लिखा है और "मो" प्रति में भ्रमरावली करके लिखा है परंतु भ्रमरावली छंद यह है नहीं भ्रमरावली अथवा नलिनी छन्द ५ सगन का होता है पर इस छंद में केवल चारही सगन हैं।

वजि [1]डौरुअ डक्क निसान घुरं। जनु वीर जगावत वीर उरं ॥
दुअ सेन बलं असियो बरषी। नचि जुग्गनि षप्पर लै हरषी ॥
छं० ॥ ६६ ॥

[2]जिनके सिर मार दुआर झरै। बहु-यौ नन पंजर आय परै ॥
छं० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ कहर भगर जिम षेल। ठेल सेलन सम ठिल्लहिं ॥
इक्क धुकत धर तुट्टि। *इक्क वल्लन गल मिल्लहिं ॥
इक्क कमंध उठंत। इक्क अंतन आलुझ्झहिं ॥
इक्क हथ्थ [3]पग झरहिं। टिक्कि षग[4]पग बिन भुझ्झहिं ॥
[5]तरफरत इक्क धर मीन जनु। रन रवन्न [6]छिचिन क-यौ ॥
घन घाइ घुम्मि घट धुक्कि धर। इम सु जुद्ध कन्हह [7]भि-यौ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

कन्ह राय का कोप।

किन्न दंति बिन दंत। सुभट सीसन बिन किन्निय ॥
हय किन्निय बिन नरनि। सेन भीमह करि झिन्निय ॥
[8]षुद्दा बिन किय काल। बाल बर बिगरिन दिष्षिय ॥
पल हारिय पल पूर। सूर कन्हा भय भिष्षिय ॥
कीनी सुकित्ति भूमी अचल। सचल सस्त्र सह झंझरिय ॥
मदमत्त गंध महियों [9]ढुरिय। मनों वाय वृच्छह गुरिय ॥ छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ सत्तह [10]आराधिय सुमहि। हरि दाढा ग्रन जान ॥
[11]सो संभरि सोमेस वर। सो कीनी पहिचान ॥ छं० ॥ ७० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-डरुअ। (२) मो.-जिनें।

* मो.-इक्क वल भग्गल मिल्लहि।

(३) ए. कृ. को.-षग। (४) मो.-षग। (५) ए. कृ. को.-तरफंत।

(६) ए. कृ. को.-छत्री। (७) ए. कृ. को.-लन्यौ। (८) ए.. षुधा, कृ.-षुदया।

(९) मो.-ढुरत। (१०) ए. कृ. को.-आधारिय।

(११) ए. कृ. को.-से भरिवै सोमेस वर।

अपनी सेना को छितर बितर देख कर भीम देव का रोस में आकर स्वयं युद्ध करना।

कवित्त ॥ मध्य रूप मध्यंत। मध्य [1]भ्रम्मन तन मोचन ॥
सिद्ध सुरध अनुरद्ध। वृद्ध वय कामति सोचन ॥
[2]पुच बिना बिन बंध। बल सु बंध्यौ भीमंदे ॥
सार सुक्रत आरद्ध। सुष्य लष्यं तंमंदे ॥
बंभनिय बिनै सद्धी सयन। *नय तरत्त रत्ती सुगति ॥
सोमेस सूर सोमेस सों। सार लग्गि बीरह सुभति ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह और भीम देव का परस्पर घोर युद्ध होना।

रसावला ॥ रसं बीर मत्ते, लरै लोह तत्ते। धुरा कन्ह मत्ते, रनं [3]रोस पत्ते ॥ छं० ॥ ७२ ॥
मनों काल [4]दंते, रसं रुद्र रत्ते। झरै फुल्ल पत्ते, विमानं विहत्ते ॥ छं० ॥ ७३ ॥
षगंगे विहत्ती, उड़ै गज्ज मुत्ती। असं मंस कत्ती, रुधी धार रत्ती ॥ छं० ॥ ७४ ॥
उमा हाथ कत्ती, उछारंत छत्ती। महा भीम मत्ती, इसी रुद्र रत्ती ॥ छं० ॥ ७५ ॥
तजै मोह वंसं, मिलै हंस हंसं। झरै अंत झूमी, मनों मेघ भूमी ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवि की उक्ति।

कवित्त ॥ सघन घाय न्त्रिघाइ। †मन्यौ को मरन अहुट्टिय ॥
सूरबीर संग्राम। धीर भारथ्थ स जुट्टिय ॥
कोन षेत तजि गयौ। कोन हाऱ्यौ को जित्तौ ॥
लिषं अंक बिन कंक। कोन माया रस वित्तौ ॥

---

(१) मो.-भ्रम्मं। (२) ए. कृ. को.-पुत्रि।
* मो.-"नयन तरत तरती सुगति"। (३) मो.-सोम। (४ ए. कृ. को.-मत्ते।
† मो.-"मुन्यो कौमर आहुट्टिय"।

छह घरी श्रोन असिवर उद्धौ । धार मार रुधि धार चलि ॥
संजुत्त अग्गि धूमह सँजुत । [1]छलि बलि बीर बलिष्ट बलि ॥ छं ॥ ७७ ॥

युद्ध स्थल की उपमा वर्णन ।

सिद्धि रिद्धि विथ्थुरिय । लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
श्रोन सलिल बढ़ि चलिय । मरन मन किंकन जुट्टिय ॥
कलमल सिर वहि गुरिय । नयन अलि वास सु वासिय ॥
जंघ [2]मगर कर मीन । कच्छ षुप्परि षग चासिय ॥
पोइनी अंत सेवाल कच । अंगुलि पग करि झिंग झरि ॥
सोमेस सूर चहुआन रन । भीम भयानक जुद्ध करि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ हय गय जुद्ध अनुद्ध परि । बहत सार असरार ॥
*मानों जालुग अंत कौ । आनि सँपत्तौ पार ॥ छं० ॥ ७९ ॥

कन्हराय का भीम देव के हाथी को मार गिरना ।

कवित्त ॥ सोमेसर अरि सूर । ढाहि [3]दीनै [4]बरि वानै ॥
नल कूबर मनि ग्रीव । जमल भग्गा [5]तरु कान्है ॥
वे सराप नारद प्रमान । दरसन हर लद्धिय ॥
इन तमंग उत्तरै । सार कट्ठे बर बद्धिय ॥
त्रिघ्घात घात मत्तौ कलह ।असुर सुरन मत्तौ [6]महन ॥
कट्ठै सुरत्त कित्तिय सुभट । सु कविचंद [7]कित्तौ कहन ॥छं०॥८०॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध ।

भुजंगी ॥ बजे बीर बीरं सु सारं षनक्कैं । महा मुक्ति बत्ते सु बीरं रनक्कै ॥
गजे बीर बद्दं करन्नाल सद्दं । सनाहं ससूरं बहै सार हद्दं ॥छं०॥८१॥
नचै जंग रंगं ततथ्थे तथंगं । [9]लचै रंक चित्तं मनं सूर [8]पंगं ॥
बढै बंक कंकं ससंकी धरानं । नगं नग्ग जुट्टे अमग्गं परानं ॥छं०॥८२॥

(१) ए. कृ. को.-बलि । (२) ए. कृ. को.-मकर ।
* ए. कृ. को. मनो जोग जुगत्ति को । (३) ए. कृ. को.-दीनो ।
(४) ए. कृ. को.-वर । (५) मो.-तर । (६) ए.-सहन ।
(७) मो.-कीरति । (८) ए. कृ. को.-जंगं ।
(९) ए. कृ. को.-चलै ।

ठनक्कंत घंटं रनक्के नफेरी। मया मोह दोषन्न हूरन्न [1]नेरी॥
धरं धार ढौरै ढंढोरें सु ढालं। मनों चक्र फेरैं कि पंकं कुलालं॥
छं० ॥ ८३॥

जामराय यद्दव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मतवाले हाथियों से उपमा वर्णन।

कवित्त॥ समर समुद भीमंग। मध्य वड़वानल राजं॥
चाहुआन चालुक्क। रोस जुट्टे बल साजं॥
दल दष्षिन जदु जाम। कलप अंती कर कुप्पौ॥
[2]ता मुष्षह षंगार। झार अग्गी झर रुप्पौ॥
बिरचे कि [3]महिष बलबंड बल। दल [4]चमूह चवदंत हुअ॥
न्त्रप काम जाम इक जहर झर। बहर रूप पिष्षे ति दुव॥ छं० ॥ ८४॥

रसावला॥ जदू जाम जोधं, षंगारं सरोधं। भरं भार क्रुद्धं, रमै रोस उद्धं॥
छं० ॥ ८५॥

करें केलि कंकी, धुते लज्ज पंकी। कहरं करारे, मनों मत्तवारे॥
छं० ॥ ८६॥

पियैं लोह छक्कं, बकै मार हक्कं। धरा धीर धूनें, फिरं अस्व हूनें॥
छं० ॥ ८७॥

विना दंत दंती, किए क्रुद्धवंती। गिरैं कूट कारे, झरैं रत्त धारे॥
छं० ॥ ८८॥

परैं [5]सार मारे, भयानं निनारे। हयं पाइ एकं, फिरैं षेत केकं॥
छं० ॥ ८९॥

दुअं मुष्प लग्गैं, डिगै नाति डिग्गैं। परैं लोह पूरं, गिनै नाति हूरं॥
छं० ॥ ९०॥

वहै श्रोन धारं, झरैं [6]झिन्न तारं। .... छं० ॥ ९१॥

उक्त दोनों वीरों की मदान्ध बैल से उपमा वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-भेरी। (२) मो.-तसु। (३) ए. कृ. को.-वलष।
(४) ए. कृ. को.-समूह। (५) मो.-मार। (६) ए.-फिरन, कृ. को. मो.-झिरन।

गाथा ॥ यों लग्गे रन सूरं। ज्यों मत्त [1]वृषभ रोस रंगाइं ॥
गरजैं धर षुर षुंदे। तक्कैं घाइ अप्प अंगाइं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

इन वीरों का युद्ध देख कर देवताओं का विस्मित होना और पुष्प वृष्टि करना।

दूहा ॥ अंमर धर पन्नग असुर। पिषि सह रष्षित नैन ॥
सुमन ससंभ्रम पिष्षि क्रम। सुमन स [2]वृष्टिय गैन ॥ छं० ॥ ९३ ॥
सघन घाइ घूमत विघट। षिलै कि पन्नग मंच ॥
विस भोए डंविस सबल। [3]सगति नहीं जुग [4]जंच ॥ छं० ॥ ९४ ॥

सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन।

कवित्त ॥ वाम अंग सजि संग। बलिय बलिभद्र विरचि रन ॥
सेत चमर गज सेत। सेत गज झंप करनि गन ॥
सेत हयन गज गाह। घंट घूंघर घनघोरं ॥
वष्पर पष्पर जीन। सार दद्दुर दल रोरं ॥
गज गाज बाजि नीसान धुनि। अति उब्भर दल जोर वर ॥
बजि लाग राग सिंधू स धुनि। करन सु उयल्ल [5]पत्थल्लधर ॥ छं० ॥ ९५ ॥

भीम देव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान जुट कर आगे बढ़ना।

दूहा ॥ पावस मावस निसि धुनिय। सजि सारंगी आइ ॥
षिभिर षेत घन घाइ मिलि। जानिक लग्गी लाइ ॥ छं० ॥ ९६ ॥

सोमेश्वर जी की तरफ के बहुत से *कछवाहे वीरों का मारा जाना

(१) मो.-मनयं रोसं। (२) मो.-द्राष्टिय।
(३) मो. सकति,। (४) ए.-तंत्र। (५) मो.-पथ्थ।

* कछवाहा क्षत्रियों की एक जाति विशेष को कहते हैं। वर्तमान जैपुर राज्य उसी वंश में है। कवि ने इस कछवाहा शब्द के लिये प्रायः कूरंभ शब्द प्रयोग किया है जो कि कूर्म्म (कच्छप, कछुवा) शब्द का अपभ्रंस है।

भुजंगी ॥ मिले सेन [1]छूरं करूरं करारे। छुटै बान कम्मान करि बार धारे॥
परैं कत्तियं घात निरघात बीरं। फिर रुंड मुंडं तनं तच्छ [2]नीरं॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ैं दंत सुंडं भसुंडं निनारे। मनों कज्जलं कूट अहि चंद दारे॥
उड़ै टोप टूकं गुरज्जं प्रहारे। मनों छूर सीसं षसे चंद तारे॥
छं० ॥ ९८ ॥

भई तीरयं भीर अप्रेव मानं। सरं पंजरं पथ्थ षंडेव जानं॥
मिले सेल भेलं भएकं भयंती। कुटे धान मानों धनं कूटकंती॥
छं० ॥ ९९ ॥

रजं रज्ज रज्जे सुरज्जे अनूपं। रमैं जानि वारंत भूपाल भूपं॥
जिनं कछ्छ वच्चं धरं ध्रम्म धारै। तिनं झल्लियं षग्ग अरि सस्त्र झारै॥
छं० ॥ १०० ॥

जिते काछवाचं जितं ध्रम्म धारी। तिनं ठिल्लियं भार भर भीर फारी॥
धरं धुक्कियं धार कूरंभदेवं। सुभै सस्त्र सज्या मनों संत नेवं॥
छं० ॥ १०१ ॥

भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना।

दूहा ॥ दच्छिन पच्छिम वाम दल। वृत्त अनुद्धिय सार॥
गोल गहर गाजी अनी। सोमेसर अरि भार॥ छं० ॥ १०२ ॥

उस समय चहुआन बीरों का जीवन की आशा छोड़ कर युद्ध करना।

गाथा ॥ बज्जे रन रनतूरं। गज्जे गहर छूर षल चूरं॥
मंडे निजर करूरं। छंडे मरन मोह साछूरं॥ छं० ॥ १०३ ॥

सोमेश्वर और भीमदेव का परस्पर साम्हना होना।

साटक ॥ पिष्षेयं सोमेस गुज्जर धनी, मचकंदु निद्रा तयं॥
जलधेयं गंजाल कोपित वलं, हालाहलं नैनयं॥

---

(१) ए. कृ. को.-सारं। (२) मो.-तीरं।

जो वंड करवान कर्णित दलं, अर्ज्जुन आयातयं ॥
श्री बीरं चहुआन वानति बलं, चालुक्क संघातयं ॥ छं० ॥ १०४ ॥

भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना।

भुजंगी ॥ बढ़े बान चहुआन चालुक्क षेतं। महा मंत्र विद्या गुरं सुक्क जेतं॥
घने घोर नीसान गज्जे गहारं। उठे जानि प्रासाद बर्षा [1]प्रहारं ॥
छं० ॥ १०५ ॥

बजी भेरि भंकार नफ्फेरि नादं। तड़क्कंत बिज्जू करन्नाल सादं ॥
छुटी बान जंची उड़ी गेन अग्गी। [2]महादेव बीरं चषं निद्र भग्गी॥
छं० ॥ १०६ ॥

सहन्नाइ सिंधू सुरं हर्ष वीरं। नचें ताल संमाल वेताल भीरं ॥
नचें न्रत्य नीसान नारद्द धाई। चढ़ी व्योम विम्मान अपछरि सुहाई॥
छं० ॥ १०७ ॥

जके जष्य गंधर्व कौतिग्ग हारी। प्रलैकालयं ष्याल [3]ष्यालं विचारी ॥
दुवं दिग्गपालं दुवं छत्रधारी। दुवं ढाल ढिंचाल मल्लं करारी ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दुअं [4]तबल दारं दुवं बिरद वानं। दुअं भूमि संघार हिंदू हदानं ॥
दुअं सूर पूतं दुअं [5]कस्य पाए। दुअं दंद दारुन्न बाजे बजाए ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दुअं लोह मेवाड़ मंडूर मानं। दुअं हंकि हंकार बट्टे व रानं ॥
दुवं सैन स्याही जलं बद्दलानं। दुअं गज्ज गुम्मानयं तेज भानं ॥
छं० ॥ ११० ॥

रची चच्चरी लोह डंडं डरारी। प्रवत्तीय वेरा अचंती करारी ॥
[6]सरं जाल भालं भिदै जंच जीवं। हयं हीस मंडे गरज्जे करीवं ॥
छं० ॥ १११ ॥

(१) मो.-पहारं। (२) ए. कृ. को.-महाबीर देवं।
(३) को.-षत्री, ए. कृ. को.-क्षत्री। (४) ए.-तन्न, कृ. को.-तत्व।
(५) को.-अस्व, ए. कृ.-अस्य। (६) ए. कृ. को.-रसं।

तुटै हड्ड मंसं धरंगं अभंती। गहै अंत गिद्धी गयंनं भमंती ॥
उछैं छीछ तारं अपारं उतंगं। सुरं दृष्ट बंधूक पूजं [1]जुतंगं ॥
छं० ॥ ११२ ॥

छटें मझ्झ सभ्भं नरं केक कच्चे। लरें जंग हथ्थं बिना केक रच्चे ॥
उड़ै षुप्परी षग्ग झारं करारी। मनों चंद सूरं दधी पूज धारी ॥
छं० ॥ ११३ ॥

किते घाइ अघघाइ घट घूम लुट्टैं। [2]तिनं जम्म म्रनं क्रमं बंध छुट्टैं॥
किते लोह छक्के रनं भूमि घूमैं। तिनं वास वैकुंठ कै ठाम धूमैं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

जिते अंग अंगं परे टूटि न्यारे। तिनं उप्पजै मुक्ति कै भूम त्यारे ॥
कहै कव्वि वष्यान किं वर्नि तेनं। फलै [3]कृष्षि पच्छं मरनं जितेनं॥
छं० ॥ ११५ ॥

कवित्त ॥ हालाहल वित्तयौ। सार मत्तौ झोलाहल ॥
जुग्गिनि जय जय जपहिं। पस्सु पंषिन कोलाहल ॥
धर परंत ढुरि धरनि। उत्त मंगत्तिहि कारहि ॥
झर झरंत षग्गाह। बीर डंकिनि ढक्कारहि ॥
महि मच्चि महूरत मरन रन। सद्द जाइ जय सुर करिय ॥
चहुआन सूर सोमेस रन। षंड षंड तन झरि परिय ॥छं०॥११६॥

अपना मरण निश्चय जान कर सोमेश्वर का अतुलित वीरता से युद्ध करना और उसका मारा जाना ।

हय गय नर भर परिय। भिरिय भारथ सम्मानं ॥
सोमेसर संचयौ। मरन निहचै उनमानं ॥
रत्त रंग सवरंग। जंग सारह उभ्भारै ॥
हक्कि मार धकि सार। झुम्मि झग सार [4]सु रारै ॥
कलहंत कंक अनभूत हुअ। उड़हि हंस हंसन मिलहि ॥
तन तुट्टि रुधिर पल हड्ड सन। कै कमंध उठि रन षिलहि ॥छं०॥११७॥

(१) ए. कृ. को.-भुतंगं। (२) मो.-तनं। (३) ए.-ऋष्षि। (४) मो.-सुसारै।

सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोड़े पदाती एवं रावत सामंतों की संख्या कथन ।

बाजि नंषि सोमेस । सहस बर इक्क प्रमानं ॥
[1]तिन मध कहि पंचास । बीर भारथ भरि पानं ॥
तीन तीस षट परे । पऱ्यौ सोमेसर षेतं ॥
गिद्धि सिद्धि वेताल । कंक बंध्यौ सिर नेतं ॥
लभ्भी सु मुगति अदभुत जुगति । हंस हंकि हंसह मिल्यौ ॥
सोमेस करी सोमेस गति । पंच तत्त पंचह मिल्यौ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना ।

दूहा ॥ जुझ्झि पऱ्यौ सोमेस धर । डोला चालुक राय ॥
दुहूं सेन झरि धर परे । बजी बत्त षग चाइ ॥ छं० ॥ ११९ ॥
नए भृत्य न्रप रिष्षि के । ज्यों फिरि करिहैं झुझ्झ ॥
चतुरानन चिंता भई । नर भारथ्थ अबुझ्झ ॥ छं० ॥ १२० ॥

सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली ।

गाथा ॥ जा [2]मुक्तिं जोगिंद । कालं काह ध्रम्म ध्रमाइं ॥
सा मुक्ती सोमेसं । इक्क छिने लभ्भियं राजा ॥ छं० ॥ १२१ ॥
भूमी भरंत भरयं । कलयं कर कथ्थि कथ्थेवं ॥
जै जै जंपि जगत्तं । है है नभ्भ सद्द सुर यायं ॥ छं० ॥ १२२ ॥

पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुन कर भूमि शय्या धारण करना और षोड़सी आदि मृत्युकर्म्म करना ।

कवित्त ॥ सुन्यौ राज प्रथिराज । भूमि सिज्जा अवधारिय ॥
तात काज तिन पिंड । दान षोडस विचारिय ॥
भद्द मद्द सहयौ । राज गति अब्ब प्रकारं ॥

(१) मो.-तिन मध्य सु पंचास ।   (२) ए. कृ. को.-मुक्ति, मुक्ति ।

द्वादस दिन प्रथिराज। भूमि सज्या संथारं॥
विन भोग भोज इक टंक करि। सुहथ दान दिय राज बर॥
दिन्नौ न कोइ दैहै न कोइ। इतौ दान जनमंत नर॥छं०॥ १२३॥

पृथ्वीराज का भूमि गो स्वर्णादि दान करना और पण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बाधूंगा न घी खाऊंगा।

अट्ठ सहस दिय धेंन।। *तब प्रथ्थी विधि धारिय॥
हेम श्रृंग षुर हेम। तौल द्वादस हिमसारिय॥
जुगति जुगति विधि नान। दान षोड़स विस्तारं॥
तात वैर संग्रहन। लेन प्रथिराज विचारं॥
घृत मुक्कि पाघ बंधन तजिय। सुव्रत बीर लीनौ विषम॥
चालुक्क भीम भर गंजिके। कढ़ौ तात उदरह सुषम॥ छं० ॥१२४॥
अरिल्ल॥ धिग ताहि ताहि जीवन प्रमान। सध्यौ न तात बैरह बिनान॥
राजिंदु दृष्टि रग तेत नेन। बध्यौ सु रोसु उर उमडि गेन॥ छं॥१२५॥

पृथ्वीराज का भोराराय पर चढ़ाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठाने का मंत्र देना।

दूहा॥ सजन सेन चाहै न्रपति। बैर तात प्रथिराज॥
पाठ पुब्ब बैठन मतौ। पच्छ सु जुद्दह काज॥ छं० ॥ १२६ ॥

पृथ्वीराज का राज्याभिषेक।

कवित्त॥ बोलि बिप्र प्रथिराज। तत्त बुद्धी अधिकारिय॥
राज क्रंम सब जान। ध्रम्म क्रम्मह तन धारिय॥
जग्य जाप मति जोग। क्रम्म बंधन बल बंधन॥
दिषत [1]मुष्ष जनु [2]ब्रह्म। पाप भंजन जन सज्जन॥

* मो.-"तब प्रथिराज सुधारिय" पाठ है।

(१) मो.-सुष्ष। (२) मो.-ब्रिम्म।

जोगिंद जोग पुज्जै नहीं। काल चिदस जानै सुमति ॥
सासँति सूर सोमह करन। सुविधि सूर मंडी सुभति॥ छं० ॥ १२७॥

दूहा ॥ राज विप्र बोले सुव्रत। जजन सुजग्य पविच ॥
तच कोइ पुज्जै नहै। क्रम बारन बर मिच ॥ छं० ॥ १२८ ॥

पृथ्वीराज का दरबार में बैठना और विप्रों का स्वस्तयन पढ़ कर तिलक करना।

पद्धरी ॥ आएसु विप्र दरबार बार। [1]साधंत जोग मति सिद्ध [2]सार ॥
मतिवंत [3]रत्ति प्रथमीत जोग। जुग जगति सेव तिन [4]देन भोग॥
छं० ॥ १२९ ॥

पूजै प्रकार [5]साधन अनेव। तिन प्रसन होइ तन मद्धि देव ॥
देषेति बिप्र इन विधि प्रकार। जानंत बुद्धि तत्ती प्रचार॥
छं० ॥ १३० ॥

महि मगन मंडि नहिं निकट फंद। दिष्यंत देह आनंद कंद ॥
प्रथिराज इंद्र राजिंद जोग। अप्पै सु मुक्ति अरु भुक्ति भोग ॥
छं० ॥ १३१ ॥

धर धरनि भिरन दै दान राज। सोवन्न भूमि मंडी विराज ॥
पद सहस सहस बर हेम इक्क। अप्पै सु दान मानह विसिक्क ॥
छं० ॥ १३२ ॥

[6]जोगिंद [7]मत्ति प्रथिराज किन्न। बर बीर धीर साधंत भिन्न ॥
छं० ॥ १३३ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरबार में नृत्य गान होना।

दूहा ॥ विविध दान परिमान करि। निगमबोध सुभ थान ॥
लिय दिष्षा जहां ध्रम्म सुत। करि अभिषेक न्रपान ॥ छं॥ १३४ ॥

(१) कृ.-साबधन। (२) ए. कृ. को.-चार।
(३) ए. कृ. को.-रत्त। (४) कृ. ए.-नैंन। (५) को. मो.-राजन।
(६) ए. कृ. को.-जोगिंद्र। (७) मो.-मंति।

भ्रमरावली ॥ नव बीर नवं रस बीर नच्यौ। भ्रमरावलि छंद सु चंद रच्यौ ॥
सिधि बुद्धिय विप्र समान धरं। मति जानत तत्त सुमत्ति गुरं ॥
छं० ॥ १३५ ॥
गुर जानन गो विध तत्त सुरं। मनु बिंब सु बिंबर रंभ डरं ॥
चिय दिष्षिय रंभति रंभ गती। .... ॥ छं० ॥ १३६ ॥
वय स्याम सषी गुन गौर धरं। कविचंद सु ब्रनन कित्ति करं ॥
तमकी तम तेज किरंन [1]रजं। तिन देषत चंद कलाति लजं ॥
छं० ॥ १३७ ॥
गुर सत्त वुधं गुरमत्त ग्रसं। तिन कै उर काम ककन्न नसं ॥
षहकें नग ज्यों गज मग्ग फिरैं। तुटि वार प्रहारत धार धरैं ॥
छं० ॥ १३८॥
.... । मनु तारक तेज ससी उचारै ॥
छलकै छिति मत्ति जराइ जसं। झलकै जनु मुत्तिय मुत्ति गसं ॥
छं० ॥ १३९ ॥
गुर च्यार ग्रहं गुरु जीव रवी। प्रगटी जनु जोति सु तेज हवी ॥
॥ छं० ॥ १४० ॥

दर्बार में सब सामंतों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ प्रगटि राज दर जोति। रंग रवनी रस गावहिं ॥
पाट बैठि प्रथिराज। सब्ब सामंत सु भावहिं ॥
दधि तंदुल हरि दूब। सुभ्भ रोचन कसमीरं ॥
मनों भान में भान। प्रगटि कल [2]किरन सरीरं ॥
दिष्षियै बाल गावत सरन। सपत सुरस [3]षट राग [4]मति ॥
संसार भेद आभेद [5]रत। पत्ति [6]प्रकति साधत [7]सुरति ॥छं०॥१४१॥

---

(१) ए.-जरं। (२) ए. कृ. को.-किरति। (३) ए. कृ. को.-घट।
(४) ए. कृ. को.-गति। (५) मो.-रन। (६) ए. कृ. को.-प्रगति।
(७) मो.-सुरनि।

भुजंगी ॥ कुरंगी सु चंगीं द्रपंगीति वाले । इकं मोल अंमोल लोलंत भाले॥
गरे पुप्फ माला विसालाति धारैं । मयंका मुषी कंठ [1]कलयंठ सारैं॥
छं० ॥ १४२ ॥

दूहा ॥ वित मति गति सारंत विधि । न्रप जै जै प्रथिराज ॥
मनौं इंदु सुरपुर गहन । उदै करै मनु साज ॥ छं० ॥ १४३ ॥
लोइ सपते तिन महल । जहँ सामंत नरिंद ॥
इच्छिनि अंचल गंठ जुरि । मनौं इंद्रानी इंद्र ॥ छं० ॥ १४४ ॥

भुजंगी ॥ न्रपं इंच्छिनी गंठि बंधी प्रकारे । मनौं कामता काम की बुद्धि तारें॥
दुहूं रंग रंगी सु रंगीति साधी । मनौं जीव गुर राह एकंत बाधी॥
छं० ॥ १४५ ॥
सही सत्त मंतं प्रकारे निनारे । मनौं मेनिका रंभ आषे अषारे ॥
बरं देषि असमान अभिमान जानै । बने कोन हन्नंत ता बुद्धि दानै॥
छं० ॥ १४६ ॥

दूहा ॥ चौअग्गानी लच्छि दै । सब सामंतन सथ्थ ॥
जस जा हथ्थन बिप्प के । भौ कामिनिति समथ्थ ॥छं०॥१४७॥

गाथा ॥ उभै राम बर सूरं । सामंतं सत्त षट दूनं ॥
ता अप्पन प्रथिराजं । चौ अग्गा लच्छि संग्रामं ॥ छं० ॥ १४८ ॥

इच्छनी से गठवन्धन हो कर पृथ्वीराज का कुलाचर संबन्धी पूजन विधान करना ।

भुजंगी ॥ भई कामना काम कामित्त राजं । दियौ कन्ह चहुआन हथ्थी विराजं॥
उभै राज राजंग जोगिंदु मित्तं । मनो देवता जीव के जग्य जत्तं ॥
छं० ॥ १४९ ॥

पृथ्वीराज का राज गद्दी पर बैठना। पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामंतों का टीका करना ।

दूहा ॥ प्रथम तिलक सिर कन्ह किय । दुत्तिय निडर रठौर ॥
इन अग्गह सुभ संत करि । तापछ सुब्भर और ॥ छं० ॥ १५० ॥

(१) मो.-कलकंक ।

कवित्त ॥ कियौ तिलक बर कन्ह। पाट प्रथिराज विराजहि ॥
मनो इंद्र अरधंग। हथ्थ इंदीवर राजहि ॥
चमर सेत सोभंत। ढुरत चावद्दिसि सीसं ॥
मनों भान पर धरिय। किरनि ससि की प्रति रीसं ॥
अवनीस इंद्र लग्यौ तपन। धुअ्र सुतेज तप उद्धरन ॥
सुरतान गहन मोषन करन। बहु बीरां रस संविधन ॥ छं० ॥ १५१ ॥

पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन।

कनक दंड सिर छच। सुभत चौहान सीस पर ॥
कै तरत्त ससि भान। तेज मंगल जंगल गुर ॥
ग्रह सुसंत संग्रहन। पंच पंचौ अधिकारिय ॥
चावद्दिसि चहुआन। दिष्टि नवग्रह बल टारिय ॥
प्रज मिलिय आनि बढ्यौ अनँद। चंद छंद चातिग रटहि ॥
प्रथिराज सु बर दुज्जन मनह। काल ब्याल कारन ठटहि ॥ छं० १५२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोला भीम विजय सोमेस बंधनो नाम उनचालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥३९॥

अथ पज्जून छौंगा नाम प्रस्ताव लिष्यते*।

(चालीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना ।

दूहा ॥ †सुनि कगद प्रथिराज जब । बध्यौ भीम सोमेस ॥
आतुर षरि आयौ जहां । दिल्लि देस नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

पज्जून राय कछवाहे की पट्टन के संग्राम में वीरता वर्णन ।

दूहा ॥ कित्ति कला कूरंभ वल । कहत चंद बरदाय ॥
ज्यों पट्टन संग्राम किय । जाइ सु भोरा राइ ॥ छं० ॥ २ ॥
सुनी राज प्रथिराज ने । झाला रानिँग हूय ॥
विरद बुलावै महबली । छौंगा सज्यौ सधूय ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय के सिर पर छौंगा‡ बांध कर लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना ।

कवित ॥ छौंगा सा सिर छत्र । सीस बंध्यौ पज्जूनं ॥
जस जयपत्त जु आनि । करै परसन सह [1]ऊनं ॥
अप्पातें घर रैठि । रीस कीनी चालुक्का ॥
छीय पटक्क साल । बात संभरि बालुक्का ॥
पुच्छैव पल्ह कूरंभ कों । अप्पानौ दल टारियौ ॥
पज्जून मलयसी बीर वर । करन कूच उच्चारयौ ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

* मो.प्रति में "पज्जून कछवाहा छौंगा नाम प्रस्ताव" ऐसा पाठ है ।

† यह दोहा मो.-प्रति मे नहीं है और पाठ से भी क्षेपक ज्ञात होता है ।

(१) ए. कृ. को.-दूनं ।

‡ एक प्रकार का राजसी या सरदारी चिन्ह जो पगड़ी के ऊपर बांधा जाता है जिसे झांगी भी कहते हैं । सरपेंच, कलगी तुर्रा, इत्यादि का एक भेद है ।

दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलाराय इस समय सोनिंगर के किले में है और यहां पर पज्जूनराय का चढ़ाई करना।

दल भोला भीमंग। साल चिंतिउ सोनिंगर ॥
किये कूच पर कूच। काल घेऱ्यौ कि कूट गिर ॥
चंद मंडि ओपम्म। सरद राका परिमानं ॥
उदधि मद्धि जिम अनिल। जलधि लंका गढ़ जानं ॥
दल दूत राज पिथ्यह कहिय। हक्काऱ्यौ पज्जून बल ॥
तुम जाइ जुरौ [1]ऊपम करौ। हनौ राज भीमंग दल ॥ छं० ॥ ५ ॥
दूहा ॥ सकल सूर कूरंभ बर। सथ लिन्नौ अप [2]जत्ति ॥
समर धीर बीरत सबर। लज्जी परै न [3]भत्ति ॥ छं० ॥ ६ ॥

पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ्यौ बीर पज्जून कूरंभ सथ्थं। मनों कच्छियं जोग जोगी समथ्थं ॥
दुअं तोन बंधे दुअं लै कमानं। *मनों उत्तरा पथ्थ पारथ्थ जानं ॥
छं० ॥ ७ ॥
दुअं असं बंसं रचे रथ्थ जोरं। लगे पाइ छची उठी भोमि भोरं ॥
कियौ पट्टनं कूच चालुक्क थानं। अपं सथ्थ बीरं सु लीए जुवानं ॥
छं० ॥ ८ ॥
पुछै पंथ पंथी तनं सच्च जंपै। सुनै दुष्ट बैरी तिनं तेज कंपै ॥
इकं चित्त इष्टं [4]निजा साइ मानैं। इसे बीर कूरंभ रैवान जानै ॥
छं० ॥ ९ ॥
तहा घेरियं ग्राम चालुक्क रायं। अचानक्क बीरं दरव्वार आयं ॥
॥ छं० ॥ १० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-ऊपर। (२) ए. कृ. को.-जित्ति।
(३) ए. कृ. को.-मित्ति। * मो.-मनों उत्त पारथ्थ जानं।
(४) ए. कृ. को.-जिन।

दूहा ॥ *चौकी भीमानी चढ़ै । झाला रानिंग सथ्थ ॥
छौंगा बीर महाबली । बर बीरा रस कथ्थ ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय का घेरा डालना। मलय सिंह का मुकाबला करना।

कवित्त ॥ चंपि काल पज्जून । बीर भोरा भीमंदे ॥
कै आयौ उप्परै । फुट्टि पायाल सबद्दे ॥
सकल सेन चमक्यौ । बीर भोरा उठि जग्यौ ॥
मलैसीह मुष काल । हाल सम [1]व्याल सु [2]भग्यौ ॥
[3]बक्कार बीर छौंगा गह्यौ । सिर मंडन लिय हथ्थ धरि ॥
आए सु सीस पज्जून करि । समर बाल बीरं सुबरि ॥ छं० ॥ १२ ॥

पज्जूनराय का चाबुक भुल जाना और फिर सात कोस से लौट कर चालुक की भरी सेना में से चाबुक ले जान।

दूहा ॥ लै छौंगा बर [4]बीर चलि । चावक भूल्यौ हथ्थ ॥
सात कोस ते बाहुऱ्यौ । बर बीरा रस कथ्थ ॥ छं० ॥ १३ ॥
पट्टन हट्टन मझ्झ ते । लै आयौ फिरि धीर ॥
ता पाछें बाहर चढ्यौ । दल चालुकी बीर ॥ छं० ॥ १४ ॥

चालुक सेना का पीछा करना और पज्जून राय का उसे परास्त करना।

भुजंगी ॥ चढ़े पच्छ चालुक्क सो सज्जि सेनं । हकारे नरिंदं सु कूरंभ तेनं ॥
सुने सद्द कन्नं फिरे तथ्थ बीरं । छुटै तीर तीरं मनों सिंधु नीरं ॥
छं० ॥ १५ ॥
बजे घाइ अघ्घाइ गज्जै हवाई । बजे आवधं मझ्झ आवझ्झ झाई ॥
मिले बीर बीरं स्वयं सूर भारे । परे रंग जंगं मनों मत्तवारे ॥
छं० ॥ १६ ॥
झरै सार सारं चिनंगीस उट्ठे । मनो झिंगनं भद्दवं रैनि वुट्ठे ॥
घनं रत्त घंटै उमा बीर रत्तं । परै अट्ठदह बीर कूरंभ पत्तं ॥छं०॥१७॥

* ए. कृ. को.-"षिझ्झी विमान चिढ्ढयो"। (१) ए. कृ. को.-व्यालह।
(२) ए. कृ. को.-लग्यौ। (३) ए.-चक्कार। (४) ए.-वालि।

परे सहस चालुक्क द्वै बान बीरं। तहां इत्तनैं भान अस्तंम नीरं ॥
छं० ॥ १८ ॥

छौंगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलय सिंह और पज्जून राय की कीर्ति का स्थापित होना।

दूहा ॥ मलैसीह पज्जून रा। दस दिसि किति अवाज ॥
दै छौंगा भोरा फिर्‍यौ। गयौ सुपट्टन राज ॥ छं० ॥ १९ ॥

पज्जून राय का पृथ्वीराज को छौंगा नजर करना।

गयौ सुचालुक ग्रेह तजि। रही कनै गिरि [1]लाज ॥
छौंगा कूरंभ रावलै। [2]कर दीनौ [3]प्रथिराज ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को ही छौंगा दे देना और एक घोड़ा और देना।

राज सु छौंगा फेरि दिय। बर है वर आरोहि ॥
घटि चालुक [4] बढ़ि कूरमा। अयुत पराक्रम सोह ॥ छं० ॥ २१ ॥
मलैसिंह रानिंग सुत। सुब्भर भोरा राज ॥
कूर्म अचानक यों पर्‍यौ। ज्यों तीतर पर बाज ॥ छं० ॥ २२ ॥
*पज्जुन राइ महाबली। मलैसिंह धर पारि ॥
छौंगा लै पाछे फिर्‍यौ। सुनि चालुक्क पुकार ॥ छं० ॥ २३ ॥

चन्द कवि की उक्ति से पज्जून राय के वीर शिरोमणि होने की प्रशंसा।

बहुत जुद्ध कीनौ सुबर। सुभर तेज प्रथिराज ॥
भट्ट चंद कीरति [5]तवै। कूरंभह सिरताज ॥ छं० ॥ २४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पजून कछवाहा छौंगा नाम च्यालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४०॥

(१) ए. कृ. को.-लज्ज। (२) मो.-कर दीनौ। (३) ए. कृ. को.-प्रथु हथ्थ।
(४) मो.-वधि। (५) ए. कृ. को.-तवी। *छन्द २१ और २२ मो.-प्रति में नहीं है। इन छन्दों में पुनरुक्ति है इस से इनके क्षेपक होने का भी सन्देह हो सकता है।

अथ पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(एकतालीसवां समय।)

जै चंद के उभाड़ने से बालुका राय सौलंकी और शहाबुद्दीन की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ [1]बालुक्का हिंदू कमध। और सु गोरी साहि ॥
सांम भेद जैचंद किय। पति दोली सम ताहि ॥ छं० ॥ १ ॥

दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना।

कवित्त ॥ आइ षबरि चहुआन। [2]सु दल बालुक्कराइ सजि ॥
आइस पंग नरेस। साह साहाब बैर कजि ॥
लष्ष दोइ भर दोइ। पुरह षोषंद सुआइय ॥
दिषि है गै अनमत्त। दूत ढिल्ली दिसि धाइय ॥
प्रथिराज रुधिरु कारी कढ़िय। समह राम [3]प्रोहित रढ़िय ॥
सुरतान समध बालुक कमध। [4]कहैं कोन चम्मू चढ़िय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का विचार करना की पज्जून राय से यह कार्य्य होना संभव है।

चालुक्का परि राइ। बीर बज्जे नीसानं ॥
सकल सूर सामंत। षग्ग मग्गं किय पानं ॥
सबर सेन सुरतान। राज प्रथिराज विचारिय ॥
विन कूरंभ को दलै। न्टपति इह तथ्य उच्चारिय ॥
जो चियन बस्य नन द्रव्य बसि। मरनसु तिन जिम तन मनैं ॥
सिर धरै काम चहुआन कौ। वियौ काम चित्त न गनै ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

(१) मो.-चालुक्का। (२) मो.-"सुबर चालुक्का राह सर्ज।
(३) ए. कृ. को.-प्रोहि। (४) मो. कहौ कान चंढै।

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को बुलाना।

दूहा ॥ बोलि राज प्रथिराज तब। पान हथ्थ दिय [1]साज ॥
कहौ जाइ कूरंभ [2]कौं। इह किज्जै हम काज ॥ छं० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का सभा में बीड़ा रखना और किसी का बीड़ा न उठाना सबका पज्जूनराय की पशंसा करना।

कवित्त ॥ सुनि सुवत्त कूरंभ। कोइ झिल्लै न पान बर ॥
बड़गुज्जर दाहिम्म। चूर चालुक्क चंपि धर ॥
परमारह कमधज्ज। वीर परिहारय भट्टिय ॥
सकल सूर बर नटे। काल चंपै मति घट्टिय ॥
पज्जूनराइ षग अग्गरौ। करै नाम निरमल्ल सु धर ॥
इन सम न कोइ रजपूत रन। डरहि काल [3]दिष्षिय [4]निजर ॥
छं० ॥ ५ ॥

पज्जूनराय का भरी सभा में बीड़ा उठा कर दोनों शत्रुओं का ध्वंस करने की प्रतिज्ञा करना।

ए कूरंभह बीर। धीर आहत धनुद्धर ॥
*जो मह नह पूजंत। जोग षल षंडन सद्धर ॥
इनह अप्प बल दौरि। जाइ असि असि अरि झारिय ॥
एकल्लै पज्जून सिंघ। परि पिसुन पछारिय ॥
लै पान सीस कूरंभ धरि। सकल सूर सामंत नटि ॥
चालुक्कराइ हिंदू दुसह। विषम काल व्यालह सु जुटि ॥ छं० ॥ ६ ॥

सुलतान और कमधुज्ज के दल की सर्प और अफीम से उपमा और पज्जूनराय की गरुड़ और ऊँट सें उपमा वर्णन।

---

(१) ए. कृ. को.-बाज। (२) ए. कृ. को.-सौं। (३) ए. कृ. को.-दिष्षै।
(४) ए. कृ. को.-नजरि। *मो. प्रति-जोगन पुज्जै जोग षल षंडन बीर।

दूहा ॥ कालव्याल सुरतान दल। कमध सु पंषय कूट ॥
हरि वाहन पज्जून दल। ते सजि धाए [1]ऊँट ॥ छं० ॥ ७ ॥

पज्जूनराय के बीड़ा उठाने पर सभा में आनन्द ध्वनि होना।

भुजंगी ॥ लियौ पान पज्जून कूरंभ राइं। स्वयं जानते सोइ कीनी सु भाइं॥
मिलि अग्गि कूरंभ सोचित्त जानं। गई हक्क चहुआन सुरतान मानं॥
छं० ॥ ८ ॥
बजै दुंदुभी देव देवं सु थानं। भयौ मुष्ष कूरंभ चितं स भानं ॥
॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को घोड़ा देना।

दूहा ॥ लरन हथ्थ लिय तेग बर। बगसि राज तब बाज ॥
लिय कूरँभ कुल उज्जले। सीस नवाइ समाज ॥ छं० ॥ १० ॥

चढ़ाई के लिये तय्यार हो कर पज्जूनराय का अपने कुटुम्ब से मिलना और उसके पांचों भाइयों का साथ होना।

कवित्त ॥ [2]षग्ग बंधि कूरंभ। आइ पज्जून अप्पन भर ॥
सुबर बीर बलिभद्र। तात पज्जून सथ्थ वर ॥
कन्ह बीर बर बीर। सिंघ पाल्हन्न सुधारं ॥
मलयसिंह सब हथ्थ। संग लीने भर सारं ॥
चित स्वामिध्रंम सो अरि भिरन। लरन मरन तकसीर नन ॥
सुनि राग बीर काइर धरक्कि। बजिग बीर नीसान घन ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई की शोभा वर्णन।

दूहा ॥ बजिग बीर नीसान घन। पावस सक्र समीर ॥
चढ़िग जोध पज्जून [3]भर। सज्जि हयग्गय बीर ॥ छं० ॥ १२ ॥
भुजंगी ॥ चढ्यौ बीर बलिभद्र कूरंभ रायं। कला पथ्थ कोटं सुजोटं दिषायं॥
छबी तेज मुष्षं सु सोभंत बीरं। मनों केवलं अंग बीरं सरीरं ॥
छं० ॥ १३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जूटं। (२) कृ. को.-षगा। (३) मो.-परि

चढ्यौ बीर संगं नरं सिंग रायं। दिठी दिठ्ठ दिठ्ठी मनों वेद गायं॥
चढ्यौ राइ पज्जून छत्रं सुधारे। बदै जाहि स्वामी रवी रत्त भारे॥
छं० ॥ १४ ॥
द्रुमं सीस फेरै पजूनं सहेतं। मनों बाज राजं परं बंधि नेतं॥
चढ़े सेत बंधी सयं सज्जि सारं। तिथं पंचमी पूर आदीत वारं॥
छं० ॥ १५ ॥

पज्जून राय के कूच की तिथि वर्णन।

दूहा ॥ तिथि पंचमि रवि बार बर। छंडि पंच भर आस॥
चढ़ जोध है गै परिय। [1]मुगति सु लूटन रासि॥ छं० ॥ १६ ॥

पज्जून राय का कृत वीरताओं का वर्णन।

साटक ॥ [2]धीरंजं धर धीर कूरम बली, पज्जून रायं बरं॥
जित्ते तं सुरतान मान सरसं, आवृत्त बानं विषं॥
भूयो बाल भुआल भारथ क्रतं, क्रष्णो धरा धट्टियं॥
तं काजं बर बीर धीर धरयं, संसार मुक्तं बरं॥ छं० ॥ १७ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ सेन कूरंभ बीर। डपटीय जानि साइर गंभीर॥
बंधिय सुतीन कूरंभ मंत। जाने कि जोग जोगाधि अंत॥ छं० ॥ १८ ॥
तहाँ हुए सगुन ए सुभ्र रूप। दाहारसिंघ रवि रथ्थ जूप॥
दाहिनैं पूठ म्रग म्रगिय जाय। बामह सुवीय सारस सुभाय॥
छं० ॥ १९ ॥
उत्तरै तार देवीति वार। डहकंत सद्द जुग्गिनिय भार॥
म्रगराज मिल्यौ दंतह प्रमान। [3]बंदे सुराज पज्जून जान॥छं०॥२०॥

पज्जून राय का यवन सेना के मुकाबिले पर पहुंचना।

दूहा ॥ सकल सूर कूरंभ बर। भान भयग मुष बीर॥
तबै राइ चालुक्क बर। आइ [4]संपत्तौ तीर॥ छं० ॥ २१ ॥

(१) ए. कृ. को.-मुकाति। (२) ए. कृ. को.-धीरज्जं।
(३) ए.-बद्दे, कृ.-बंदै। (४) ए. कृ. को.-संपनौ।

कमधुज्ज और यवन सेना से पज्जून राय का साम्हना होना।

आइ सँपत्ते सूर भर। सुरताना कमधज्ज ॥
कूरंभह पज्जून सम। चढ़े जोध गुर गज्ज ॥ छं० ॥ २२ ॥

दोनो प्रतिपक्षी सेनाओं का अतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ दुश्र दीन हिंदु संमुहु प्रमान। चालुक्क राइ अरि मलन भान ॥
चहुआन सूर रवि जेम बीर। पट्टन सु राइ अरि ग्रसन धीर ॥
छं० ॥ २३ ॥
कूरम्भ दान षग रूप दीन। अस्नान जान रज रूप कीन ॥
छं० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ करिग सेन संमुष सुबर। गरूड़ व्यूह किय बीर ॥
लरन मरन भारथ्थ क्रत। जज्जर करन सरीर ॥ छं० ॥ २५ ॥
[1]ग्रिद्ध व्यूह कूरंभ करि। नाग व्यूह सुरतान ॥
षा ततार षुरसान पति। मंडि फौज मैदान ॥ छं० ॥ २६ ॥

पज्जून सेना के व्यूहवध्य होने का स्वपष्टीकरण।

कवित्त ॥ [2]पग जद्दव परिहार। पुच्छ पामार सुधारिय ॥
भट्टी सेन विषम्म। पिंड पावं अधिकारिय ॥
जानु होइ पुंडीर। नष्ष उर मंस अंस करि ॥
चंच अंष सुभ जीह। बीर कूरंभ [3]पयद्धरि ॥
[4]ग्रीवा सुजोति गज गाह गहि। [5]लहि लोहानौ [6]ठौर बर ॥
छचह [7]मुजीक पज्जून सह। दौरि पर्‍यौ बलिभद्र बर ॥ छं० ॥ २७ ॥

युद्ध की तिथि।

घरिय सत्त दिन रह्यौ। बार नौमीति सुक्र बर ॥
पंच बीस आवट्टि। *यट्टि लोथं सुबंधि यर ॥

---

(१) मो.-गरुड़। (२) मो.-पंग। (३) ए. कृ. को.-राइ धरि।
(४) ए. कृ. को.-ग्रीवह। (५) ए. लरि। (६) मो.-मीठि। (७) मो.-मुनीक।
*ए. कृ.- को.-"लुथ्थि पर लुथ्थि बंधि थर"।

कूरम्मह षग झारि । सार भारथ्थ सु किन्नौ ॥
सार बज्ज घरयार । टोप टंकार सु भिन्नौ ॥
आचार चारु राजन बरे । मरे बीर रजपूत वर ॥
संग्राम सूर कूरंभ सम । नर न नाग दानव्व [1]सुर ॥ छं० ॥ २८ ॥

श्लोक ॥ मानवं दानवं नैवं । देवांनां कुरु पांडवो ॥
कूरम्म राइ समो बीरं । न भूतो न भविष्यते ॥ छं० ॥ २९ ॥

पज्जून राय की सेना का बड़ी वीरता से युद्ध करना ।

कवित्त ॥ हाइ हाइ कहि छुट्ट । इट्ठ बलिभद्र अंमरिय ॥
बलिय तप्प कूरंभ । सार साहित्त घुम्मरिय ॥
यों पजून दल मल्यौ । सोइ ओपम कवि भाइय ॥
कमल पंति गजराज । सरित मभ्भह झुकि ग्राहिय ॥
घन घाइ अघाइ सुघाइ घट । करिय एम कूरंभ घट ॥
सुघ्घाट आइ कुघघाट किय । सुभट घाइ भारथ्थ [2]थट ॥ छं० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ सुभट घाइ भारथ्थ भिरि । ते अंगन दिष्षाइ ॥
रुधि सुक्कै कद्दम हुए । हय तरंग सुभ्भाइ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

इस युद्ध में पज्जून राय के भाइयों का मारा जाना ।

जुद्ध सुचालुक राइ तहँ । च्यार बंध परि षेत ॥
पंच भ्रात कूरंभ बर । उप्पारे सु अचेत ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पज्जून राय की जीत होना और शत्रु सेना का माल मता लूटा जाना ।

कवित्त ॥ उप्पारिग पज्जून । बीर बलिभद्र उपारिग ॥
उप्पारिग पाल्हन नरिंदु । घाव [3]सठ्ठ तन धारिग ॥
परि पंचाइन कन्ह । जैत जैसिंह जवानं ॥
हिंदु बीर दभ्भझान । मेच्छ गड्डुन परिमानं ॥

(१) मो.-अमर । (२) ए.-तट ।
(३) ए. कृ. को.-सढे ।

लुट्टे दरब्ब गज बाजि रथ। रिंघ राव उप्पारयौ ॥
जस जैत लियौ कूरंभ [१]रन। जीवन अवनि सु धारयौ ॥ छं ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंशा।

दूहा ॥ * आज भाग चहुआन घर। आज भाग हिंदवान ॥
इन जीवत दिल्ली धरा। गंज न सक्कै आनि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

पज्जून राय का भाइयों की क्रिया करना और २५ दिन गमी मना कर दान देना।

कोस षट्ट चहुआन बर। संमुष गय बर बीर ॥
उभै बीस अरु पंच दिन। न्हाइ दान दिय धीर ॥ छं० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासाके चालुक समागम पज्जून विजय नाम इकतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥४१॥

(१) ए. कृ. को.-नर।   * छन्द ३४ मो.-प्रति में नहीं है।

अथ चंद द्वारका समयौ लिष्यते।

(बयालीसवां समय।)

कविचंन्द का द्वारिका को जाना।

दूहा॥ चलन [1]चिंत चंदह कयौ। चलि द्वारिका सु चित्त॥
मंगि सीष प्रथिराज [2]पहु। सजिय सकल अप सथ्थ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचंद का यात्रा समय का साज सामन और उसके साथियों का वर्णन।

कवित्त॥ दोइ सहस है बर [3]विसाल। सत [4]वारून [5]सथ्थह॥
सत गयंद रथ रूढ़। साज आसन प्रथि रज्जह॥
पखक बेद जोजन प्रमान। घटे * संघल क्रत पाइय॥
साज लष्ष तन लष्ष। सकल बल कोरि सजाइय॥
धानुक्क धार सत अठ्ठ चलि। करन तिथ्थ जाचह चलिय॥
सत सुभट दान दिय तुरिय गज। मनहु जमन सागर मिलिय॥
छं० ॥ २ ॥

चन्द का चित्तौर के पास पहुंचना।

[7]गज घंटून चंबाल। भेरि सहनाइय बज्जिय॥
चलत आइ चिचकोट। पुरन चियलोक [8]सुरज्जिय॥
कन्ह मान लेय न कविंद। जोजन दुअ दिष्षिय॥
श्रृंगारिय गढ़ हट्ट। [9]मनों इंद्रासन पिष्षिय॥

---

(१) मो.-चित्त। (२) मो.-पैं। (३) ए. कृ. को.-विलास।
(४) ए. कृ. को.-वारुनह। (५) मो.-समथ्थह।
*पाठ अधिक है। (७) मो.-घज। (८) ए. कृ. को.-पराष्षिय।
(९) मो.-मनों इन्द्र थान विसिष्षिय।

बजि चंब बंब वज्जन बहुल। मन उच्छाह भिष दान दिय ॥
गढ़ मद्धि धाम मनु राम पुर। कवि सु [१]तथ्य डेरा करिय ॥छं०॥३॥

चित्तौर गढ़ की स्थापना का वर्णन।

*दूहा ॥ गिरवर झूंगर गहर बन। प्रबल पेषि जल ठौर ॥
चित्रंगद मोरी बसिय। दै गढ़ नाम चितौर ॥ छं० ॥ ४ ॥

चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा।

कवित्त ॥ चित्रकोट दिय नाम। बंधि चित्रंगद सर बर ॥
पंषि असंष निवास। सघन छाया तट तरवर ॥
बुरज कोट कंगुरा। गौष जारी चित्रसारी ॥
महलायत चहबचा। झिरन कारंज किनारी ॥
पागार पोरि आगार करि। थान सदेवत पिष्षयौ ॥
छतीस बंस महिचंद कहि। मोरी नाम सु रष्षयौ ॥ छं० ॥ ५ ॥

उक्त मोरी का गोमुष कुंड बनवाना।

अरिल्ल ॥ गोमुष कुंड बंधि फुनि मोरिय। सुर पति विपन सोभ सब चोरिय
भार अठार उगी बन राइब। देषि कें रीझ रह्यौ बरदाइय ॥छं०॥६॥

एक सिंहनी का ऋषि के शिष्य को खालेना।

कोरि कढ्ढि पाषान महि। गिरि कंदर इक रिष्य ॥
मुहु अग्ग सिंघनि भषत। हनि बालक तिहि सिष्य ॥ छं० ॥ ७ ॥

सिंहनी की पूर्व कथा।

कवित्त ॥ नगर अजोध्या नृपति। नाम कीरत्ति धवल्लं ॥
सर ऊसुरि तातट्ट। रमत सिक्कार सयल्लं ॥
तानि वान कम्मान। हनिय हिरनी ग्रभ वंतिय ॥
तरफंरत अवलोकि। श्रोन घन धार अवंतिय ॥
उतपन्न ग्यान बैराग लिय। कुंवर स कोसल्ल संजुगत ॥
अड़ सट्ठि करे तीरथ अटन। चित्रकोट महि तप तपत ॥ छं० ॥८॥

(१) ए. कृ. को.-सथ्य। *-छन्द ४ से ले कर छन्द १९ पर्य्यंत मो.-प्रति में नहीं है और पाठ से भी यह अंश क्षेपक मालूम होता है।

पद्धरी ॥ तप तपत आइ चित्रकोट मद्धि । सहचरिय जाइ इह करिय सुद्धि ॥
हूनि कान बानि रानी प्रफुल्लि । उतरन महल्ल सोपानि भुल्लि ॥
छं० ॥ ९ ॥

अनुराग सुत्तपति को हरष्ष । उठि चल्लिय मिलन मारग गवष्ष ॥
चकचूर भइय परि पहुमि आइ । तड़िता कि तेज तारक दिषाइ ॥
छं० ॥ १० ॥

जल जलनि विष्ष गिरि झंप पात । पावहि न गत्ति इह सत्ति बात ॥
जप तप्प तिथ्थ अस्नान दान । कातिक्क पढह पंडित पुरान ॥ छं० ॥ ११ ॥

अंतह सुमत्ति गति होइ सोइ । अहंकार उअर जिन करहु कोइ ॥
॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ बघिनि होइ विकराल । आइ गिरि कंदर प्यासिय ॥
प्रगटि पुब्ब तामस्स । भंजि अँग जंगल ग्रासिय ॥
दंत कंति चमकंत । जरित कुंदन मय मेषं ॥
ईहा [1]मोह करंत । जनम पछिलो संपेषं ॥
असराल चष्ष अंसू ढरत । पंसुरहि तुच मंस गलि ॥
इक मास लग्गि अनसन्न करि । गय नंगन उड़ि हंस चलि ॥ छं० ॥ १३ ॥

दूहा ॥ कित्ति धवल धीरज्ज धरि । श्रवन आइ उपकंठ ॥
राम नाम सभलाइ सुर । कुंअर पाइ बैकुंठ ॥ छं० ॥ १४ ॥
रघुवंसी राजिंद नें । मन हटक्कि रषि तब्ब ॥
ग्रभवंती हिरनी हनी । तिहि वदलो लिय अब्ब ॥ छं० ॥ १५ ॥

कविचंद का आना सुन कर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना ।

कवित्त ॥ कवि सु सथ्थ मति प्रबल । बोलि सहचरी मत्ति बर ॥
नव नव रस भोइन । अनंत इंद्रानि इंद्र घर ॥
रुप माल सु विसाल । मेघ माला सुभ मंजरि ॥
मदन बेलि मालति । विसाल सत अट्ठ अनंबर ॥

(१) कृ.-पोह ।

नरकंध रथ्थ के आरुहिय। ढंकि छब्बि मनों अंब जल ॥
प्रति चलिय भट्ट कट्टन दरिद। मोघ निरषि मनुराज थल ॥
छं० ॥ १६ ॥

कितक छब्बि वस्त्रंग। मद्धि माला मुत्तिय मनि ॥
सीतारामी सहस। कनक थारी सत बीजनि ॥
अगर पान अड़सठ्ठ। रजक पालिका पठाइय ॥
सुवन इक्क पुत्तरिय। कर सु सारँग [1]मुह गाइय ॥
मुक्कलिय प्रथा कवि थान कहं। भरन भार अभ्रन भरिय ॥
प्रति प्रति सु दान मानह प्रबल। कवि सषियन आदर करिय ॥
छं० ॥ १७ ॥

कवि का चित्तौर जाना।

दूहा ॥ दिय बहोरि न्रप नगर कों। प्रिय आसीस पढ़ाइ ॥
प्रति सुनंत मति दति प्रबल। करिस [2]कूप कल नाइ ॥छं०॥१८॥
नील कंठ सिव दरस करि। मात भवानी भेटि ॥
फुनि नरिंद चिचंग मिलि। चंद दंद तन मेटि ॥ छं० ॥ १९ ॥

कवि का किले में भोजन करने जाना। पृथा का उसे भोजन परोसना।

अरिल्ल ॥ प्रतिहारन रावन पधराइय। बोलि मंच भोजन बुलवाइय ॥
करन प्रथा जेवन परिमानं। उड़ि घुम्मर अम्मर सु प्रमानं ॥
छं० ॥ २० ॥

[3]लोह कुंड रच्चे सुर सच्ची। कुरच्छन भारि दियंत सु पिच्ची ॥
मनों ओपमा में छबि [4]रच्ची। जेबैं बरन अठारह जच्ची ॥छं०॥२१॥
एकलिंग अवतार सु धारिय। नारि केल पुज्जै नर नारिय ॥
कलिनि कलंक काल कटि भारिय। जेंबै सब परिगह परिवारिय ॥
छं० ॥ २२ ॥

(१) ए.-सुह। (२) ए. कृ. को.-कूप, कूंर।
(३) मो.-लहो। (४) मो.-मेछ ते रंची।

केसर अगर घौरि सब किद्धिय। पान सुपारि कपूर प्रसिद्धिय॥
हथ्थी है मोती नग विद्धिय। दान मान रावर कर दिद्धिय।
छं० ॥ २३ ॥

कन्ह अमरसिंहादि सामंतों का पृथा कुमारी को उपहार देना।

कनक साज द्वै तुरी पठाइय। कन्ह एक गज मुत्तिय गाहिय॥
अमरसिंघ गज मुक्ति सुभाइय। जो चित्तंग अत्य सम राइय॥
छं० ॥ २४ ॥

मोरी रामप्रताप महाभर। सुष्षासन आरोहिय उप्पर॥
मोती जिरित मोल घन सज्जर। दीय सु दान मान अपरंपर॥
छं० ॥ २५ ॥

चन्द का चित्तौर से चलना।

दूहा॥ चलिय चंद पट्टन पुरह। अहि सिर पर धरि पीर॥
पंथ एक पष्षह चलिय। द्रिग सागर दिषि नीर॥ छं० ॥ २६ ॥

द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना।

कवित्त॥ उत्तरि हथ्थिय बाजि। *पाइ प्रति मिले सु मंगन॥
दिठ्ठिय देवल धज्ज। पाप परहरि अँग अंगन॥
गजत पिठ्ठ गोमतिय। भान तप तेज विराजिय॥
सागर जल उच्छलै। पाप भंजन पाराजिय॥
रिनछोर राइ दरसन करिय। परिय मोह मानुष्ष पर॥
सुरथान मान इतनी सुचित। देवलोक कैलास दर॥ छं० ॥ २७ ॥

दूहा॥ हाटक मंडप छच लहि। मुत्तिय [२]पंतिन माल॥
मनों चंद बहु भान मभ्भ। कल मष कट्टत काल॥ छं० ॥ २८ ॥

फिरि परदछ दरसन करिय। हुअ परतष्षि प्रमान॥
तब अस्तुति सु प्रनाम करि। प्रभा विराजिय भान॥ छं० ॥ २९ ॥

* मो.-पाइ प्रति चले सु मंगल।   (२) ए.-वंतिय, पंतिय।

कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति।

रसावला ॥ तुअं देह हट्टी, तुअं मान वट्टी। तुअं बीर दट्टी, तुअं थान थट्टी ॥
छं० ॥ ३० ॥

तुअं लोक पालं, तुअं जालमालं। तुअं भाल भालं, तुअं द्रिग्गपालं॥
छं० ॥ ३१ ॥

तुअं देस दष्षी, तुअं भीर भष्षी। तुअं द्रोप रष्षी, तुअं सर्ग सष्षी ॥
छं० ॥ ३२ ॥

तुअं तीन रष्षी, तुअं ब्रह्म लष्षी। तुअं पंष रोही, तुअं गोप मोही॥
छं० ॥ ३३ ॥

तुअं सच्च दोही, तुअं सग्र सोही। तुअं सिद्धि तूंही, तुअं रिद्धि सोही॥
छं० ॥ ३४ ॥

तुअं सर्व अंडं, तुअं तीन कुंडं। तुअं षित्त [1]षंडं, तुअं थार मुंडं॥
छं० ॥ ३५ ॥

तुअं ग्यान गट्टं, तुअं रंभ यट्टं,। कवीचंद पट्टं, गयौ दूर हट्टं ॥ छं०॥३६॥

दूहा ॥ हरिहर वच सच वारि वर। पुर धरि सिर पर इंद ॥
मनु गुर तरु फर भार नमि। झलमलि हषि गोविंद ॥छं०॥३७॥

देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ नमो तुं नमो तुं नमो तुं कुमारी। नमो तुं नमो तुंज संसार सारी ॥
नमो तुं अभष्षी नमो बीज भष्षी। नमो रिष्ष पूजंत सज्जंत सष्षी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

नमो तुं रटै राज राजं रजाई। नमो [2]तुंज संसार तें सिद्ध पाई ॥
नमो तंत जालं विकालंत राई। नमो विश्वथानं [3]गिरंजा गिराई ॥
छं० ॥ ३९ ॥

*नमो सस्सिपालं अकालं अभष्षी। नमो काल जन्मं न कालं न सष्षी ॥
नमो एक भग्नी भरत्तार पंचं। नमो कोरि कोरं करत्तार संचं ॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए. कृ. को.-पंडं। (२) ए. कृ. को.-तूझ, तुझ्झ, तुझे। (३) ए. कृ. को. गिरज्जा।
* मो.-नमो सस्सि पालं अकालंत राई। नमो काल जमन्न कालं नसाई ॥

नमो सिद्ध तुं रिद्ध तुं दद्धि पानी। नमो काल तुं भाल तुं साल रानी॥
नमो कित्ति तुं मंच तुं गीत गानी। नमो आदि तुं अंत तुं जोग जानी॥
छं० ॥ ४१ ॥

नमो विश्व तुं भिस्त तुं भार भारी। नमो जोग तुं जीव तुं जुग्ग चारी॥
नमो भूमि तुं धूम तुं अंब पानी। नमो तप्प तुं ताप तुं अट्ठरानी॥
छं० ॥ ४२ ॥

नमो बाल तुं वृद्ध तूं हाल चाली। नमो भान तुं मान तुं मुक्ति माली॥
नमो व्याघ्र तुं सार तुं वाग वद्द। नमो झुंड मुंडं तुहीं पारि सद्द॥
छं० ॥ ४३ ॥

नमो पच तुं छच तुं छित्ति धारी। नमो वृद्ध तुं वृक्ष तुं अघ्घ हारी॥
नमो रूपतुं रंग तुं राग [1]रत्ती। नमो भील तुं भाव तुं सील [2]सत्ती॥
छं० ॥ ४४ ॥

नमो भ्रत्त तुं वृत्त तुं वारु वानी। नमो चंद चंडी सदा चारु मानी॥
छं० ॥ ४५ ॥

कवि का होम कर के ब्राह्मण भोजनादि कराना।

दूहा॥ करि असतुति ससतुति सुवर। होम हवन हरि नाम॥
सीवन तुला सु साज बर। करि सुभट्ट मुचि काम॥ छं० ॥ ४६ ॥
हय हथ्थी सत दान दिय। रथ रथ्थिय [3]द्रव दिद्ध॥
हाटक चीर [4]वसुंधरा। कवि घर दीन सु निद्ध॥ छं० ॥ ४७ ॥

द्वारिकापुरि में छाप लगवाने का महात्म्य।

कवित्त॥ * जे द्वारामति जाइ। छाप भुज नाहिं दिवावहिं॥
ते दरवारह चढ़ि। न्याय हय पिट्ठ दगावहिं॥
हरि चरन्न करि सेव। रहि न उभ्भै जुरि करि वर॥
ते वागुरि अवतरे। अधोमुष [5]भूलत तर वर॥
दीनी न जिनहि परदच्छिना। दंडवत्त करि सुद्ध उर॥

(१) ए. कृ. को.-रंगी। (२) ए. कृ. को.-संगी। (३) ए. कृ. को.-धर।
(४) ए. कृ. को.-अनत अनि। * छन्द ४८ और ४९ दोनों मो.-प्रति में नहीं हैं तथा क्षेपक जान पड़ते हैं।
(५) ए.-झूमत, को.-भूलत।

*कविचंद कहत ते वृषभ होइ। अरहट जु [1]पेरिरंत नर ॥छं॥४८॥
भद्र भेषनह हुए। जाइ गोमत्ति न न्हावै ॥
तजै न ध्रम सेवरा। होइ करि केस लुचावै ॥
मुष पावन हन करै। वस्त्र धोवै न विवेकं ॥
आहू अंष परंत। करत उपवास अनेकं ॥
दरसन्न देव मानै नहीं। गंगा गया न श्राद्ध क्रम ॥
कविचंद कहत इन कहा गति। किहि मारग लग्गै सु भ्रम ॥
छं० ॥ ४९ ॥

द्वारिकापुरी से लौट कर चन्द का भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में आना।

बंदि देव द्वारिका। करिय अति दान अचग्गल ॥
पट्टन पति भीमंग। मनो चंदन मिलि अग्गर ॥
वास भट्ट गरलंत। लपटि लग्गा मन [2]डाहर ॥
तिन सेवर बंदि बह। चंद मावस उग्गा बर ॥
तिन नगर पहुच्यौ चंद कवि। मनों कैलास समाष लहि ॥
उपकंठ महल सागर प्रबल। सघन साह [3]चाहन चलहि ॥छं०॥५०॥

पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन।

सहर दिष्षि अंषियन। मनहु बद्दर वाहनु दुति ॥
इक चलंत आवंत। इक्क ठलवंत नवनि भति ॥
मन दंतन दंतियन। इला उप्पर इल भारं ॥
विप भारथ परि दंति। किए एकठ व्यापारं ॥
रजकंब लष दस बीस बहु। दोइ गंजन बादह पऱ्यौ ॥
अन्नेक चीर छपर फिरंग। मनों मेर कंठै भऱ्यौ ॥ छं० ॥ ५१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-फिरत। (२) ए. कृ. को.-दारह।

* "कविचन्द कहत" ऐसा पाठ कहीं भी नहीं पाया गया है कथाक्रम, काव्य, भाषा आदि ४८ और ४९ छन्दों की बहुत कुछ भिन्न है अत एव इन दोनों छन्दों के क्षेपक होने का सन्देह है।

(३) ए. कृ. को.-बाहन।

पलक विविध घन भार। रतन मुत्तिय द्रिग रंजत ॥
गज भरि लिज्जै कोरि। दान चुक्कत मति मंजत ॥
मनों गुल फूलिय धरनि। किद्ध नवग्रह ताराइन ॥
लेय न इव हिम दान। रज्ज साला हिम भाइन ॥
भाषन सु भाष कढ्ढै मुषह। सिर स्वानह तरु धरु धवल ॥
प्रतिबिंब बसहु द्रय मानि मन। कबि मोहन दिष्षीय बल ॥छं०॥५२॥

पट्टनपुर के आनन्दमय नगर और वहां की सुन्दरी स्त्रियों की शोभा वर्णन।

अर्द्ध नराच ॥ बजान बज्जयं घनं। सुरा सुरं अनंगनं ॥
सदान सद्द सागरं। समुद्दयं पटा झरं ॥ छं० ॥ ५३॥
[1]म्रग्यंद कै गजं बरं। .... ॥
हलं मलं हयं गयं। नरा नरं नरिंदयं ॥ छं० ॥ ५४ ॥
गिरं वरं [2]सुरा धरं। सबद्द सागरं पुरं ॥
अनेक रिद्धि भोनयं। नवं निधं सु जानयं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
भरे जु कुंभयं घनं। इला सु पानि गंगनं ॥
असा अनेक कुंडनं। .... ॥ छं० ॥ ५६ ॥
सरोवरं समानयं। परीस रंभ जानयं ॥
बतक्क सार संमयं। अनेक हंस क्रम्मयं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
भरै सु नीर कुंभयं। .... ॥
अरुढ़ काम रथ्थयं। सु उत्तरी समथ्थयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥

राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना।

दूहा ॥ दिय डेरा कुंदन सुढिग। जे लीने सुरतान ॥
तर ते वर तंबू तनिय। मनंहु कलस कै भान ॥ छं० ॥ ५९ ॥
गज बंधे गज साल में। हय बंधे हयसाल ॥
अद्ध कोस विस्तार अति। भई भीर भर चाल ॥ छं० ॥ ६० ॥

(१) ए. कृ. को.-मृगदं कगजं गरं। (२) मो.-सुधा।

किनक जान भोरा कह्यौ। दिल्लीपति दानेस ॥
अंबाई बर दान इन। नाम चंद ब्रह्म बेस ॥ छं० ॥ ६१ ॥

भीमदेव का कविचन्द के पास अपने भाट जगदेव को भेजना।

कवित्त ॥ कहै भीम जगदेव। जाहु तुम चन्द [1]समष्षन ॥
नग मनि मुत्तिय माल। परसपर बाद सपष्षन ॥
दियौ सु हथ्थिय एक। सत्त हय इक ऐराकिय ॥
लै सु जाहु तुम लच्छि। भट्ट पुच्छौ [2]मनुहाकिय ॥
षल दुष्ट भट्ट आयौ वरै। करि झुझ्झौ मंचह सुपरि ॥
आरंभ डंभ सुनियै बहुत। कर पिछानि मन षेद करि ॥ छं० ॥ ६२ ॥

जगदेव का कविचन्द से मिलना।

दूहा ॥ चर लग्गा दिसि कवि चरा। आयौ भोरा भट्ट ॥
करिय अनूपम रूप दुरि। बेस अचंभम [3]नट्ट ॥ छं० ॥ ६३ ॥
दीवी जाल कुदाल ढिग। अंकुस पैरी हथ्थ ॥
पूछै भोरा भट्ट इह। किन समान इह कथ्थ ॥ छं० ॥ ६४ ॥

जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल वैभव की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ सोमेसर किन बध्धिय। चंद जानौ वह गत्तिय ॥
आबू गढ़ किन लीन। भीम चालुक जुध मत्तिय ॥
इह दरिया कौ राव। सिद्ध पट्टनवै नंदन ॥
इह सु जुद्ध तें बड़ौ। गाम धामह गति गंमन ॥
कवि जुगति जानि अधिकौ कहौं। बुझ्झौ नाहिन मरम गति ॥
इह पंच दीह में जानिहौ। इह तुम इह हम जुद्ध मति ॥छं०॥६५॥

दूहा ॥ मिलिय परसपर रसन रहि। मिलि नाहर इक ठौर ॥
बत्त घत्त भर सब्ब मिलि। [4]सह अष्षिय द्रब कौर ॥ छं० ॥ ६६ ॥

---

(१) मो. सलष्षन। (२) मो.-मनुहारिय।
(३) ए. कृ. को.-मन भट्ट, भट्ट। (४) मो.-"सह अप्पिय इव कोर"

साज बाज सब फेरि दिए । प्रथु किय किति अपार ॥
जगदेवह भोरा भनिय । [1]काह सु कवित्त उचार ॥ छं० ॥ ६७ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का उच्चार करना ।

सोमेसर किन बधिय । सार संमुह किन सज्जिय ॥
कन्ह पीर क्यों सहिय । किद्ध किन आबू कज्जिय ॥
इह गुज्जरी नरेस । वह सु दिल्ली विरदा मै ॥
कूष पीर आदरै । धाम उदरे व्रत धामै ॥
वागुरिन द्वत्त अवतार गनि । भिरि भुअंग भोरा सुबर ॥
अवतार लियौ कलि उप्परौ । कलि प्रगटिय मनु सहस कर ॥
छं० ॥ ६८ ॥

पुहमि राइ हस्तिनी । च्यार हंडी [2]रंधानिय ॥
इक गज्जनी सहाब । सुइ संपी तुर [3]तानिय ॥
इक राइ परमार । सधर सिर वानग जित्यौ ॥
करन मंद चालुक । दई तिहुवार विधुत्तौ ॥
मेल्ही जु तीन तिहु राइ घर । सु इह बत्त जुग सब क[illegible]य ॥
इम चन्द कहै जगदेव सुनि । एक राइ तुम उद्धरिय ॥ छं ॥ ६९ ॥
दूहा ॥ दस लष्षन भष्षन करै । प्रथु सामंत कुमार ॥
भोरा उठि गोरा गयन । तब सिर छच उभार ॥ छं० ॥ ७० ॥
चढ़ि भोरा तुम उप्परें । दरियापति दस लष्ष ॥
[4]षग्ग साहि भंजै सुभर । सित्त सूर पति भष्ष ॥ छं० ॥ ७१ ॥

जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ ।

कवित्त ॥ दइय सीष जगदेव । जाहु तुम लै आऔ प्रभु ॥
जदिन सूर सामंत । तदिन पिष्षौ सुरत्ति सुभ ॥
ताम करिग तुम सुथिर । पाव चंचल होइ जैहैं ॥

(१) को.-कवि । (२) ए. कृ. को.-रंधानिग । (३) ए. कृ. को.-सुरतानिग ।
(४) ए. कृ.-मृग्ग ।

मेछ मिलै षट षंड। परम [1]उतमँग जुध जुरहैं॥
रन षुध संपूरन भग्गिहै। जब महिमानी हम करै॥
जगदेव भट्ट संची चवै। चंद भट्ट इम उच्चरै॥ छं०॥ ७२॥

भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना।

दूहा॥ आइ सु भोर चंद ग्रह। हय गय नर भर भार॥
सथ्थ सपन्नौ तथ्थ सब। बज्जा बज्जिय सार॥ छं०॥ ७३॥

देषिय डेरा भीम नृप। उच्चै ग्रह आवास॥
गौष पट्टिका बनि गरुअ। देषिय बादर [2]रास॥ छं०॥ ७४॥

कविचंद का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना।

आदर करि आसीस दिय। भुअ भोरा भीमंग॥
सिद्ध दिद्ध जै सिंघ तुअ। तिन पहु पुज्जि पवंग॥ छं०॥ ७५॥

कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना।

पद्धरी॥ जिन सिद्ध दिद्ध लिद्धी विषंड। अनेक दीप वाहन उतंड॥
जिन धर मनुष्य पहिरे न चीर। कलि कूट रूप देषंत बीर॥छं०॥७६॥

गिर धरै कंध उप्पारि नंष। पहिरे सु एक ओटं सुपंष॥
प्रति तिरें मच्छ सागर पयाल। बहु लिए रतन अनेक माल॥
छं०॥ ७७॥

तिन जीति लिए बहु रिद्धि देस। सब दीप सझ्झ गुज्जर नरेस॥
मझ्झि दीप रोम राहब कुसाव। संजाल दीप प्रति काल आव॥
छं०॥ ७८॥

गिरवान दीप कंचन गुहीर। [3]तिन झुझ्झ दझ्झि आसिष्य बीर॥
हय मुष्ष ग्राह चर अंब एक। तिन जीति लिए जल जानि [4]टेक॥
छं०॥ ७९॥

---

(१) ए. कृ. को.-उतकंठ। (२) को.-राव, ए.-रात।
(३) ए. कृ. को.-जिन। (४) ए. कृ. को.-टेक।

वाहन अरोहि लीने असंष। प्रति पान पुरातन लद्ध पंष ॥
अवतार सेस लीनौ अवन्नि। इन भंति चंद्र कवि करि तबन्नि ॥
छं० ॥ ८० ॥

कविचन्द और अमर सिंह सेवरा का परस्पर वाद होना और कविचन्द का जीतना।

कवित्त ॥ तब पुच्छिय भीमंग। तुम बरदान सु दिड्डिय ॥
बाद [1]बद्दि देवंग। सुपन पिष्षिय मन सिद्धिय ॥
चंद देव किय सेव। तिन सु अमरा बुल्लाइय ॥
यूल रथ्थ आरूढ़। चंद असमान चलाइय ॥
तरवर सुपत्त बैठौ तिनह। फिरि न वाद कीनौ बलिय ॥
नट्टी जु सषी उपजी अनल। सुरस बंचि नंचौ कलिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥
अरिल्ल ॥ जीता वे जीता चंदानं। परि पिष्षिय रष्षिय रंभानं ॥
मुष बुल्लै जै जै चहुआनं। नाटिक करि नंचै निरवानं॥ छं० ॥ ८२ ॥
हल हलंत तंबू हल हिलियं। बंदि भ्रत्त है गै पति चलियं ॥
चंद मंत्र पट्टन चल चलियं। मनों अंब ताराइन तुलियं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

भीमदेव का अपने महल को लौट जाना।

दूहा ॥ आरोहिय असु उप्परह। उड़ी रेन षुर षेह ॥
भोरा चढ़ि सोरा भयौ। गयौ अप्पने ग्रेह ॥ छं० ॥ ८४ ॥

कविचन्द का सुरतान की चढ़ाई की खबर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना।

प्रथु कागद चंदह पढ़िय। आयौ षरि गजनेस ॥
कूच कूच मग चंद षरि। पहुंच्यौ घर दानेस ॥ छं० ॥ ८५ ॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके चंद द्वारिकागमन देव मिलन परस्पर वादजुरन नाम बयालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४२॥

(१) मो.-छंद।

अथ कैमास जुद्ध लिष्यते ।

(तेंतालीसवां समय ।)

एक समय शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पृथ्वीराज के विषय में चर्चा करना ।

गाथा ॥ इक दिन साहि सहाबं । अष्षिय समह षान तत्तारं ॥
अरु षुरसान विचारं । संमर समुष राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ १ ॥

तत्तार खां का वचन ।

उच्चरि ताम तत्तारं । अरि अति जोर हर सम रारं ॥
सम कैमास विचारं । षट्ट दिसि मंत साह साहाबं ॥ छं० ॥ २ ॥

कैमास युद्ध समय की कथा का खुलासा या अनुक्रमणिका और शाह की फौजकशी का वर्णन ।

हनूफाल ॥ बर मंच किय सुरतान । कैमास दिसि परवान ॥
चहुआन दिल्लिय चिंत । षट्टू अ दिसि मन षंति ॥ छं० ॥ ३ ॥
संवत्त हर च्यालीस । बदि चैत एकमि दीस ॥
रवि वार पुष्य प्रमान । साहाब दिय मेलान ॥ छं० ॥ ४ ॥
चय लष्य [१]अस असवार । बानैत सहस चिकार ॥
पयदल सु लष्य प्रचंड । चय सहस मद गल भंड ॥ छं० ॥ ५ ॥
चलि फौज दुंदभि बज्जि । भद्दव कि अंबर गज्जि ॥
बाने सु गज्जि सिरज्जि । सुर राज विपन विरज्ज ॥ छं० ॥ ६ ॥
दस कोस दिय मेलान । षह षेह रुंधिग भान ॥ छं० ॥ ७ ॥

(१) मो..लष ।

राज का रिकार

दिसि नृपति । च

रु मालवै । सब दि

समाचार पाकर

इम दूत मुष । भय

सब बोलिकै । बैठे

पद्धरी ॥ साहाब कहै तात्तार षान। उपजै सुमंच अष्षौ सवान ॥
[1]ढिल्लीय तें जु प्रथिराज आय। कैमास आन कीनी सहाय ॥
छं० ॥ १८ ॥
[2]फिरि गयें लाज घट्टै अनंत। झुझ्झंत हारि तो सेंन अंत ॥
आषूव तम्मि आषैति वार। सम लालषान हस्सन हकार ॥छं०॥१९॥
हम च्यारि षान बंधव सु प्रीति। साहाब साहि आने सु जीति ॥
कै जियत करैं घोरह प्रवेस। कै गहैं पष्ष्य मक्का विदेस ॥छं०॥२०॥
सामंत कितक बल सूर कौन। लग्गे सु एम जिम चून लौन ॥
च्यारों सु बंध हम बल [3]अछेह। देही सु प्रथक जिय एक [4]एह ॥
छं० ॥ २१ ॥
जीवंत बंध आनें सु राज। हम जुद्ध करैं साहाब काज ॥छं०॥२२॥
दूहा ॥ सुनिय मंच सब षान मुष। बंध्या जोर सहाव ॥
रह षट्टू दिसि चल्लियैं। उलट कि साइर आब ॥ छं० ॥ २३ ॥

शहाबुद्दीन का आगे बढ़ना और पृथ्वीराज के पास समाचार पहुंचाना।

कवित्त ॥ ग्यारह सें च्यालीस। चैत विदि सस्सिय दूजौ ॥
चढ्यौ साहि साहाब। [5]आनि पंजाबह पूज्यौ ॥
लष्ष तीन असवार। तीन सहसं मय [6]मत्तह ॥
चल्यौ साहि दर कूच। [7]फटिय जुग्गिनि घुर वत्तह ॥
सामंत सूर विकसे उअर। काइर कंपे कलह सुनि ॥
कैमास मचि मंचह दियौ। ढिंग बैठे चामुंड [8]फुनि ॥ छं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज का कैमास सहित सामंतों से सलाह करना।

दूहा ॥ कह्यौ मंत कैमास तहँ। सजि आयौ सुरतान ॥
अब विलंब किज्जै नहीं। दल सज्जौ चहुआन ॥ छं० ॥ २५ ॥

(१) मो.-"दिल्लीय तेज पृथिराज आय"। (२) मो.-परि गए। (३) ए. कृ. को.-अछेक।
(४) ए. कृ. को.-मेक। (५) मो.-आय पंजाब सु पुज्यो। (६) मो.-सत्तह।
(७) मो.-पटिय। (८) मो.-पुनि।

हूर कमधज्ज राय।

ना की चढ़ाई औ

के षुरसान साहाब
त्तार षुरसान षानं
न आषूब मानं।
जी किधौं समद प

दिपै षान दरियाव दरिया समानं। लुप्यौ अस्व [1]षुर षेह रवि आसमानं॥
चल्यौ पष्षरं धार पति षान षानं। उभै सोर सिंगी चली पंति बानं॥
छं० ॥ ३५ ॥
चल्यौ मलिक मंमार षां ताजषानं। फतेषान पाहारषां बंध ज्वानं॥
अलूषान [2]आलंम ते अग्ग बानं। सुभै गष्षरं षान कम्माल षानं॥
छं० ॥ ३६ ॥
चल्ययौ [3]पतिक मारूफषां सो अमानं। चल्यौ पहिलवानं सु गाजी [4]पठानं॥
चल्यौ हब्बसी एक हब्बीबषानं। चल्यौ समसदीषान रूम्मी अपानं॥
छं० ॥ ३७ ॥
चल्यौ ग्यास दीचस्त गरुअत्त षानं। चल्यौ चिच षानं गुरं बीर दानं॥
छं० ॥ ३८ ॥

दोनों सेनाओं का चार कोस के फासले पर डेरा पड़ना।

दूहा ॥ चारि कोस चौगिरद रन। दोऊ समद समान॥
उत साहिब षुरसान कौ। इत संभरि चहुआन॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज की सेना का आतंक वर्णन।

भुजंगी॥ चल्यौ साहि साहाब करि जुद्ध साजं। करी पंच फौजं सुभं तथ्थ राजं॥
बरं मद्द वारे अकारे गजानं। [5]हलै रत्त चौंसट्ठ बैरत्त बानं॥छं०॥४०॥
षरौ फौज में सीस सुविहान छचं। तिनं देषतें कंपई चित्त सचं॥
तहां धारि हथनारि कमनेत पचं। ....॥ छं० ॥ ४१ ॥
तहां लष्ष पाइक्क पंती सपेषं। तहां रत्त वैरष्ष की बनिय रेषं॥
तहां तीन पाहार मै मत्त जोरं। तिनं गज्जतें मंद मघवान सोरं॥
छं० ॥ ४२ ॥
तहां सत्त उमराव सुरतान जोटं। मनों पेषियै मध्य साहाब कोटं॥
इमं सज्जि सुरतान [6]रिन चढ्ढि अप्पं। बिना राइ चहुआन को सहै तप्पं॥
छं० ॥ ४३ ॥

(१) मो.-पुर हेवरं। (२) ए. कृ. को.-आगंम। (३) ए.कृ.को.-मलिक।
(४) ए.को.-प्रमानं। (५) ए.कृ.को.-"हलें रत्त चौरं सबै रत्तवानं"। (६) मो.-चढ्ढीय अप्पं।

ा चावंडराय की
ठ होते ही तय्या

थराज । राइ चामंड
बर लज्ज । लज्ज मो
हे लज्ज । बंधि आ

शाह का मुकाम लाडून में सुन कर पृथ्वीराज का पंचोसर में डेरा डालना।

दूहा ॥ किय मुकाम चहुआन दल। पुर पांचो[1]सर नाम ॥
सुनी षवरि सुरतान की। लषि लाडून मुकाम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास को शाह के प्रातः काल पहुंचने की खबर मिलना।

दूत आइ पहरेक निसि। कही षबर कैमास ॥
पहर एक पतिसाह कौं। मो पच्छै दिषि पास ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की तय्यारी होना और कन्ह का हरावल बाँधना।

कवित्त ॥ राज पास कैमास। षबरि सुरतान कही अप ॥
सजौ सेन अप्पान। जाइ सनमुष मंडै [2]वप ॥
पंच फौज साहाब। करिय भर पंच सु अग्गर ॥
सजौ फौज अप्पान। नाम लिषि लिषि तहां सुब्भर ॥
मन्त्री सु बत्त सामंत मिलि। पंच फौज राजन करिय ॥
अन भंग जंग [3]न्रप नाह नर। कंन्ह कंक अग्गें धरिय ॥छं०॥५०॥

पृथ्वीराज की पंचअनी सेना का वर्णन।

भुजंगी ॥ [4]सजी मंचि कैमास की फौज दूजी। सथें पंच हज्जार है अनिय पूजी ॥
सुभैं पंच हज्जार कमनैत पाले। बरं पंच में मंत मै मत्त[5] वाले ॥
छं० ॥ ५१ ॥

तहां कंन्ह चहुआन सामंत साजे। तबै [6]तीसरी फौज बाजिच बाजे॥
सहस पंच असवार गैहै सु पंचं। सहस पंच [7]मालैं सहै लोह अंचं॥
छं० ॥ ५२ ॥

सज्यौ गरुअ गहिलौत गोइंदराजं। चली फौज चौथी करै लोह साजं ॥

(१) ए. कृ. को.-रस, रस नाम। (२) मो.-पत्र। (३) मो.-नर नाह नृप।
(४) मो.-करी। (५) ए. कृ. को.-चाले।
(६) मो.-तीस करि। (७) ए. कृ. को.-वाले पालै।

नैत हथनारि हथ्थं

चौथी चढ़्यी षान षा
सवार पल्ले दुलष्षं।

असवार करव लह^५
ानं सुतं लाल षानं

सजी पंचमी फौज बनि अंन एवं । गुरं गष्षरं षग्ग कढ़ै रनेवं ॥
बली मरद कंमाल षा बधं सथ्थं । लियै सकत मनसातकी गुर्ज हथ्थं ॥
छं० ॥ ६२ ॥

सजे लष्ष द्वै सुभट करि लोह सारं । तहां देषि पाइद्दलं दुष्ष जारं ॥
तहा पंच हज्जार गढ़ै गयन्नं । सजी पंचयं फौज सा [1]इंद्र व्रन्नं ॥
छं० ॥ ६३ ॥

रणक्षेत्र में दोनों फौजों का बीच में दो कोस का मैदान देकर डटना और व्यूह रचना ।

दूहा ॥ [2]द्वै दल बीच सकोस द्वै । प्रथीराज कहि बात ॥
चौकी चढ़ि चक्कह कटक । दल अरियन करि घात ॥ छं० ॥ ६४ ॥

चौपाई ॥ चढ़िय सुचक्र सेन चहुआनं । सुबर सूर जोधा परिमानं ॥
उत सज्ज्यौ चक्कह सुरतानं । दीसै फौज मनों दधि पानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥
कटक चक्र रच्यौ सुरतानं । प्रथीराज सज्जिग तिहि थानं ॥
षरी षबरि कहियौ परिमानं । पंच फौज पंचौ [3]चहुआनं ॥ छं० ॥ ६६ ॥

डामर ॥ चढ्यौ सुरतान, सुन्यौ चहुआन, तमंकि कटी किरवान कसी ।
मय मत्त सुमंत, पढ़े बर षंत । सहस द्वै सूर, सहस्स असी ॥
दस सठ्ठि हजार, चले [4]पयदाज, जमाति सु जुग्गिनि जानि हसी ।
बर बान कमान, छयौ असमान, अरी मुष संमुह, फौज धसी ॥
छं० ॥ ६७ ॥

युद्ध सम्बन्धी तिथिवार वर्णन ।

कवित्त ॥ ग्यारह सै च्यालीस । सोम ग्यारसि बदि चतह ॥
भए साह चहुआन । [5]लरन ठाढ़े बनि षेतह ॥
पंच फौज सुरतान । पंच चहुआन बनाइय ॥
दानव देव समान । ज्वान लरनं रिन धाइय ॥

(१) मो.-सावून्न इन्दं ।　(२) ए. कृ. को.-द्वै दल कोसह बीच द्वै ।
(३) मो.-सुरतानं ।　(४) मो.-पय्यदार ।　(५) मो.-मरन ।

काद्सी । होत द्वाद

तम द्वै लरैं । हिंदू

थारे परैं रुंड मुंडं ।

लं करं कढ्ढि तेगं ।

थयार बिन लात घा

ध्यान अस्तिमिति

इक बीर बर बीर बैठे [1]विमानं। इकं सूर सूरं निरष्षंत पानं॥
इमं जाम द्वै जुद्ध करि रहे ठाढ़े। गुरे [2]बाज गजराज नरराज गाढ़े॥
छं०॥ ७७॥

पृथ्वीराज का यवन सेना में अकेले घिर जाना और चामंडराय का पराक्रम।

कवित्त॥ घेऱ्यौ न्रप चहुआन। संग सब सथ्थिय छुट्टौ॥
जंग करै चामंड। षरिग गज भुंडन जुट्टौ॥
बाग लेइ बगमेलि। सेल मैंगल सिर फुट्टौ॥
करन कढ़ि करिवार। दंत सम भसुंड सु तुट्टौ॥
तुट्टौ सु दंत सम सुंड मुष। रुष किन्निय सुरतानं [3]तन॥
दल दंत करत दाहर सुतन। मद वारुन दारुन दलन॥ छं०॥ ७८॥

दूहा॥ कलह राइ चामंड [4]करि। इह माऱ्यौ गजराज॥
साह गहन कों मन कऱ्यौ। चल्यौ [5]हांस लै बाज॥ छं०॥ ७९॥

कवित्त॥ गुरि गयंद गोरी नरिंद। चतुरंग दल सज्जिग॥
उर निसान घुंमरिग। आइ उप्पर सिर तज्जिग॥
जहां हक्यौ तहां भिऱ्यौ। तिनह घर नदी पलट्टिय॥
षग्ग ताल बाजंत। सीव तरवर बन तुट्टिय॥
[6]कतरीय पुरष गय घर मुरिग। चंद बरद्दिय इम भन्यौ॥
भाजंत भीर तुष्षार चढ़ि। चौंडराव चाबक हन्यौ॥ छं०॥ ८०॥

चार यवन सरदारों का मिलकर चामंड राय पर आक्रमण करना।

दूहा॥ लाल षान मारुफ षां। हसन षान आकूब॥
च्यार लरे चामंड सौं। षग्ग गहौ तुम षूब॥ छं०॥ ८१॥

(१) ए. कृ. को.-गुमानं। (२) मो.-राज।
(३) मो.-नन। (४) ए. कृ. को.-काहि।
(५) मो.-हंस। (६) ए. कृ. को.-कसरी।

क्कूब । षूब जस लियौ
कट्टारि । पारि मारू
उछ्ऱ्यौ हसन । अ
न चहुआन किय ।

ाल खां का वर्ण

ढंचाल ढिग । [४] लाल

कवित्त ॥ लाल बरन बानैत । षग्ग कढि आन जुद्ध किय ॥
षान षान किय घाउ । कंध कटि गिर्‌यौ तास हय ॥
निरषि राइ चामंड । बिरचि फिरि बीर पचार्‌यौ ॥
गहिय तेग षां लाल । अग्ग न्रप धरनि पछार्‌यौ ॥
धर डारि रिदय पर पाव दिय । केस गहै बंकुरि करहि ॥
एकथ्थ सुनौ हिंदू तुरक । जै जै सुर नारद [1]करहि ॥ छं० ॥ ८७ ॥

लाल खां का मारा जाना ।

दूहा ॥ लाल षान के केस गहि । सिर धरि करि दुअ षंड ॥
दूसासन ज्यों भीम बल । रन ठढ्ढौ चामंड ॥ छं० ॥ ८८ ॥

कैमास और चामंड राय का वार्तालाप ।

कवित्त ॥ रन ठढ्ढौ चामंड । मंचि कैमास पहुत्तौ ॥
[2]हयह चढ़ायौ आइ । बहुरि मुष बचन कहंतौ ॥
तूं मेरौ लघु बंध । इतौ दुष कौन सहंतौ ॥
[3]तो बिन जग सब धंध । अंध हुअ अवनि रहंतौ ॥
चढ़ि बाज आज संग्राम में । राज लाज मो भुजनि पर ॥
हठि हसन षान आकूब से । षल षंडे ते अंग बर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ षल षंडे तुम अंग बर । [4]रगत बरन किय अंग ॥
रहि ठढ्ढौ इक षिनक रन । करौं निरिषि हौ जंग ॥ छं० ॥ ९० ॥

कुंडलिया ॥ कहै राइ चामंड तब । तुम मेरे बड़ भ्रात ॥
क्यों षिची देषै षरै । कलि न अमर इह [5]गात ॥
कलि न अमर इह गात । बान मो मति तिम किज्जै ॥
हम तुम हय हक्कारि । बंधि सुरतानह लिज्जै ॥
बिरचि मार मचाइ । तबहि गज्जन पति [6]ग्रहिहै ॥
लरत कित्ति होइ तुरत । तुरक हिंदू सब [7]कहिहै ॥ छं० ॥ ९१ ॥

---

(१) मो.-कहिय । (२) मो.-हयानि ।
(३) मो.-"तौ बिन जग जनु धंध अंध हुअ अवनि परंतौ ।" (४) ए. कृ. को.-रकत ।
(५) मो.-घात । (६) ए. कृ. को. ग्रहियै । (७) ए. कृ. को.-कहियै ।

बरं जुद्ध बानं। धक

मान कम्मान बानं।

सु घावं कृपानं। इ

ध्यानं जोगिंद बानं

सु ठट्ठै गुमानं। तहा

घनं घाव वज्जंत सो द्दै समानं। जुरे बाज सो बाज सम जुद्ध ठानं॥
छं० ॥ ९८ ॥
जुरे च्यार षानं सु चावंड [1]मानं। जुरै अंग अंगं करै अप्प [2]मानं॥
भजै काइरं कलह देषे कपानं। .... छं० ॥ ९९ ॥
रुप्यौ मंच महबूब दुअ जुद्ध थट्टं। तिनं बाहियं उअर नह तेग तुट्टं॥
तबै थरहरे काइरं कंपि नट्ठं। तहां ताज षां षान राषंत पुट्ठं॥
छं० ॥ १०० ॥
दलं देवता जुद्ध देषे विमानं। तहां देव मिवरंत अछरीय गानं॥
तहां चौसठी करत भरि पच चल्ली। तहां रंभ घालंत गर माल भल्ली॥
छं० ॥ १०१ ॥
तहां स्वांमि कामं [3]लरै हिंदु मीरं। इमं सस्त्र वस्त्रं षुटे तीर तीरं॥
तहां मल्ल जिम लरैं बलवंत श्रीरं। .... छं० ॥ १०२ ॥
तहां लसत धंसतं सुवानं घतानं। जिसे मत्त आमत्त मत्ते मतानं॥
तिसे दरसियं स्त्वर दंतं दँतानं। तहां हथ्थजोरं सु हस्ती हतानं॥
छं० ॥ १०३ ॥
सुभै ठाम ठामं परे तुरक झुंडं। तहां हद्द हिंदू भये षंड षंडं॥
तहां करत सरितान में मगर तुंड। .... छं० ॥ १०४ ॥
तहां कच्छ सिर मच्छ फरके भुजानं। तहां केस कुस दंत बगपंति मानं॥
तहां भोर ज्यों भँवर हथ्थं करारं। तहां कंज कर धार उरधार धारं॥
छं० ॥ १०५ ॥
तहां चक्क चक्की सु सोभंत नैनं। तहां तीसरी नदिय बहिपाद्य ऐनं॥
तहां श्रोन की सरित जल पूर भल्ली। तहां चौसठी पच भरि कुंभ चल्ली॥
छं० ॥ १०६ ॥

द्वादसी का युद्ध वर्णन।

दूहा॥ चैत प्रथम उज्जास पष। मंगल बारसि सुद्ध॥
कैमासह चामंड सम। किय सहाब बर जुद्ध॥ छं० ॥ १०७ ॥

(१) ए. कृ. को.-समानं। (२) ए. कृ. को.-पानं। (३) मो.-लहै षग्ग बीरं।

ग्ररी, म्रेछ दाहिम्मरी

जुड देषे डरी। जे

ी, सस्त्र कट्टे अरी।

ा, ५ग्रम्म जालंधरीं।

तेग लग्गी तरी, मेच्छ ग्रभ्भंटरी। मीर छुट्टे धरी, साहि ढिल्ल्यौ करी॥
छं० ॥ ११४ ॥

शाह के आगे बढ़ने पर यवन सेना का उत्साह बढ़ना।

कवित्त ॥ करिय साहि ठेलंत। मीर हक्कंत प्रबल दल ॥
षां ततार रुस्तम्म। मीर मंगोल सबल बल ॥
चक्रसेन चहुआन। लोह बाहंत आय षल ॥
नर हय गय गुंजार। लोह लग्गंत हयद्दल ॥
असि मार धार आकास उड़ि। उट्ठि जुरंत कमंध रिन ॥
चहुआन चक्र सुरतान लगि। तन तिषंड षंडे [1]करिन ॥ छं० ॥ ११५ ॥

शहाबुद्दीन का बान बर्षा करके सामंतों को घायल करना।

तब सहाब सुरतान। बान कंमान कोपि धरि ॥
अलूषान आलंम। सार बहि [2]कढ़ी सु षुप्परि ॥
चक्रसेन सिर षंडि। कियौ दह भरे लोह लरि ॥
षां ततार रुस्तंम। षांन षुरसान रहै डरि ॥
उर डरपि धरकि हिंदू तुरक। सूर नूर सामंत मुष ॥
कविचन्द देषि कीरति करत। लरत अप्प अपनी सु रुष ॥ छं० ॥ ११६ ॥

दूहा ॥ अप्प अपानी रूष लरत। करत अंग अँग मार ॥
चक्र सेन चहुआन कौ। भरनि सह्यौ भुज भार ॥ छं० ॥ ११७ ॥

कवित्त ॥ भरनि सह्यौ भुज भार। साह सकबान प्रहारिय ॥
एक बान चामंड। लग्गि भुज दंड सुहारिय ॥
दुतिय बान सिर बहिग। चक्रसेनह सिर संधे ॥
सुकर कढ़ि अप बान। षंचि बसतर [3]सम संधे ॥
बर बंधि घायक षग्ग गहि। बिजल षान बगसी बह्यौ ॥
कैमास राइ चामंड मिलि। धन्य दुअन जै जै कह्यौ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

---

(१) मो. किरन, करन। (२) ए. मो.-कढ्ढि।
(३) ए. कृ.-सस।

ङग सज्जि । बाज सि
पन्न । राय बाहर कै
विस्तरिय । बहुरि बै
ध करिवार गहि । प
जद्दव मलिक । बीर
घवार को पृथ्वीर

दूहा ॥ त्रयोदसी सुदि चैत की । गयौ लरत बुधवार ॥
समर साह चहुआन सम । भर भारथ किय सार ॥ छं० ॥ १२२ ॥
भुजंगी ॥ भरं भारथं कीय तिन बेर बीरं । जुरे संभरी साहि सिरदार ओरं ॥
नरं काइरं झम्मले भग्ग भीरं । चढ़ौ मीर मारूफ मुष नीर धीरं ॥
छं० ॥ १२३ ॥
तहां च्यारि बंधौ भए एक सूरं । लगे मंच कैमास दिष्षै करूरं ॥
लगे बान कंमान फुट्टै परारं । कियं छिन्न सन्नाह देही विहारं ॥
छं० ॥ १२४ ॥
तहां राग मारू बजै तबल तूरं । घुरै घोर नीसान ईसान दूरं ॥
तहां षान हिंदवान भए चक्क चूरं । तहां हूर रंभा बरै बरह सूरं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
तहां मेछ भग्गे भए प्रात तारे । तहां मंचि कैमास जित्यौ अषारे ॥
छं० ॥ १२६ ॥
दूहा ॥ जित्ति मंचि सुरतान घर । बंधव चौंड हजूर ॥
उभै लष्ष असुरान के । मेटि प्रबल दल पूर ॥ छं० ॥ १२७ ॥

कैमास और चामंडराय का शहाबुद्दीन को दो तरफ से दबाना और उसके हाथी को मार गिराना ।

कवित्त ॥ मेटि प्रबल दल पूर । साह संमुह गज पिल्ल्यौ ॥
बाज राज चामंड । मंचि बंधव मिलि ठिल्ल्यौ ॥
संगि बाहि कैमास । पीत बान्ने बिच थट्टिय ॥
गहिय समर चामंड । तुंड पर करिय निहट्टिय ॥
कट्टिय सु सुंड गज दंत सम । गिरत गज्ज साहाब धर ॥
दाहिम्म गह्यौ गज्जन असुर । जय जय सुर सद्द अमर ॥ छं० ॥ १२८ ॥
चौपाई ॥ प्रथीराज जित्यौ परगासं । साह सहाब ग्रह्यौ कैमासं ॥
सत्तह षान परे चिहु पासं । जै जै सबद भयौ आयासं ॥ छं० ॥ १२९ ॥

दोनों भाइयों का शाह को पकड़ कर पृथ्वीराज के पास लेजाना ।

कवित्त ॥ अमर सद्द जयकार । डारि साहाब कंध हय ॥
लै मंची सुरतान । बंधि बिय राज पास गय ॥

अथ भीम बध समयौ लिष्यते ।

(चौंवालिसवां समय।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर शोक करना और सिंघ प्रमार का वीर वाक्यों से धैर्य्य देना ।

दूहा ॥ उर अड्डौ भीमंग नृप । नित्त षटक्कै घाइ ॥
अगनि रूप प्रगटै उरह । सिंचै सचु, बुझ्झाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

पिता बैर सिर संसहै । अरु रमनी रस रंग ॥
दिन दिन सो जल श्रोन सम । पियै सचु, अनभंग ॥ छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज । भीम सोमेस सद्दि रन ॥
हरि हरि मुष उच्चार । किन्न प्रथिराज सुभट गन ॥
करत दुष्ष चहुआन । बरजि पंमार सिंघ तहां ॥
आदि ध्रंम [1]षिचीय । करे संताप तात कहां ॥
षग धार षंडि तन मंडि जस । तब सुर लोकह संचरै ॥
आजानबाह अवनीस सम । आबूवै इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज प्रति सिंह प्रमार के वचन ।

कहै सिंघ पामार । बत्त चहुआन चित्त धरि ॥
गुज्जर धर उज्जार । पारि प्रज्जारि छार करि ॥
सोमेसर सुरलोक । तोहि संभरिय लज्ज भुअ ॥
कितक बत्त चालुक्क । किम सु ऋंगमय जुद्ध तुअ ॥
सुरतान भूमि कंकर जहां । तहं थानौ मंडौ भलौ ॥
तुछ सुभट संग करि विकट घट । पुन अप्पन ग्रेहां चलौ ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) मो.-छत्रिय ।